अवसान

—जयनाथ "नलिन"

अवसान

लेखक,

प्रो. जयनाथ 'नलिन' एम. ए.

अध्यक्ष,

हिन्दी-विभाग,

के वी. डिग्री कॉलिज, माछरा (मेरठ)

प्रकाशक,

हिन्दी-निकेतन, कचहरी रोड, होश्यारपुर

प्रथम बार १०००]   संवत् २०१२   [मूल्य

पात्र-परिचय

मोतीलाल —बम्बई के एक प्राचीन और विख्यात धनी कुल में उत्पन्न, ३८ वर्ष का युवक, आजकल कस्टम-विभाग में अफ़सर। पाच फीट सात इंच लम्बाई, गोरा रंग, कोमल इकहरा शरीर, बड़ी-बड़ी सुन्दर आखे, चौड़ी सघन खिंची हुई भवें, गालों पर हल्की-हल्की पतली झुर्रिया, निचली पलकों की तलहटी में सावलापन, धुमैले होठ।

लेखा :—मोतीलाल की पत्नी। आयु लगभग २८ वर्ष। गेहुंआ वर्ण, जिसमें श्यामता की झलक मिलने लगी है। खिची नुकीली आखें, जिनकी चंचलता और चमक विलीन होती जा रही है। धुमीली रूप-रेखायें—सौन्दर्य ढलाव पर उतर चुका है। भरा-भरा तन, ऊँचाई करीब ५ फ़ीट ३ इंच। चिन्ता और उत्पीडन की रेखायें आनन पर गहरी खिंची है। बाल बहुत लम्बे, चिकने और धुघराले है, उनमें १० प्रतिशत सफ़ेद हो गये है। आयु यथार्थ से दस वर्ष अधिक मालूम होती है।

मिस्टर घोष :—मोतीलाल के रेस-गुरु। आयु पचास वर्ष। भरा-भरा तन, छोटी सी तोंद भी। सिर के बाल बालू की तरह सफेद, लेकिन चाद के बाल उड़ चले हैं। मूंछ-दाढी साफ। दात पान की पीक से निरन्तर लाल।

गोपालदास :—एक पड़ौसी—लीला का पति। आयु तीस-इकत्तीस वर्ष। छरहरा पतला तन, प्रतिभा से चमकता आनन। सुखी-सन्तुष्ट जीवन की प्रसन्नता से तर आखें। बम्बई के किसी कालेज में अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर।

लीला :—पडौसी गोपालदास की चौबीस वर्षीया पत्नी। लेखा से छोटी बहन के समान प्यार। इकहरा बदन, बडी-बड़ी सुन्दर आकर्षक आखे, काले सघन लहराते केश,लम्बाई पाच फीट एक इंच।

ताई —एक पड़ौसिन। आयु लगभग पचास वर्ष। सावला रंग आनन पर वार्धक्य के चिह्न। आधे से अधिक बाल सफेद। लेखा और लीला से इसका प्यार-दुलार का सम्बन्ध।

पम्मी :—लेखा की ६ वर्षीया लडकी। रंग सावला-गेहुँआ। पतला चपल तन। कटे हुये बाल।

बिल्लू :—लेखा का ४ वर्षीय लडका। गोरा रंग, सुन्दर आकर्षक रूप। कार्य और स्वभाव में अत्यन्त चंचल। बोलने मे ज़रा तुतलाता है—'र' के स्थान पर अधिकतर 'ल' बोलता है।

मगनलाल :—आयु पचास-पैंतालीस के बीच। रंग हलका काला। नीचे के बीच के दो दात टूटे हुये, ऊपर के सभी दात वर्तमान—चालीस डिगरी का ऐंगल बनाते हुये आगे की ओर। गाल फूले-फूले, आखे छोटी, पेट मटकी-सा आगे निकला हुआ। सीना ढीला, हिलता हुआ। सीने पर उजड़ी खेती के समान जहा-तहा खिचड़ी बाल। माथे से शिखा-केन्द्र तक चिकनी चमचमाती चाद। शेष बाल खिचड़ी।

मुकुटलाल :—बम्बई के किसी पुलिस स्टेशन पर इन्चार्ज। मोतीलाल का मदिरा-मित्र। आयु मे मोतीलाल के लगभग। स्वस्थ शरीर, डरावनी आखे, बड़ी-बड़ी मूंछे।

रूस्तमजी :—दादर (बम्बई) का शराब और प्रसाधन का व्यापारी। मोतीलाल इस से शराब और अन्य प्रसाधन-सामग्री उधार लिया करता है। आयु पचपन वर्ष। रंग गोरा-चिट्टा। मुंह लम्बा। आखो पर चश्मा।

राधेलाल :—दादर (बम्बई) का कपडे का एक व्यापारी। आयु लगभग चालीस वर्ष। रंग गेहुँआ। भरा हुआ शरीर।

बिन्नू —मोतीलाल का नौकर। आयु चौबीस-पच्चीस वर्ष। भरा–गठित शरीर, रंग काला, ऊँचाई ५ फीट ३ इंच, काले लहराते बाल। शौकीन तबीयत। अथक काम करने वाला।

सहजो :—मोतीलाल की नौकरानी। रूखा-सूखा शरीर। आयु लगभग ४५ वर्ष, देखने मे ५५ वर्ष। सावला रंग, बाल सफेद, चेहरे पर झुर्रिया, माथे पर सरवटे। हाथ-पैर मे कोई आभूषण नही, गले मे चादी का कंठा और कानो में मुरकी।

परमजी भाई —सट्टे का एक दलाल। रेस का खिलाड़ी। मोतीलाल का मदिरा-मित्र। आयु चालीस के आस-पास।

सावन्त :—मोतीलाल के दफ्तर मे हैडकलर्क। काला रंग, लाल आखें, दोहरा बदन, ठिगना कद।

अन्य पात्र :—पहला आदमी (फल वाला) दूसरा आदमी (विक्टारिया-ड्राईवर) पुलिस इन्स्पेक्टर, भादो (सब्जी-तरकारी बेचने वाला) पाण्डुरंग (दफ्तर का चपरासी) लड़का (घोष का नौकर) दो-तीन कास्टेबिल।

—:०:—

आलोक

कला को साध्य मानने वाले साधको का दल एक समय काफी सबल रहा है। उनकी पुकार के साथ अनेक कलाकार वह चले है। मौन के व्योम में तिरोहित होती हुई "कला के लिए कला" की वाणी कभी-कभी आज भी सुनाई दे जाती है, पर "कला के लिए कला" वाला भ्रामक सिद्धान्त मुझे कभी नही भाया। दृश्य और अदृश्य, समस्त विराट् को मै कृष्ण में—मानव में—समाया पाता हूं, समस्त को मानव के लिए ही मानता हूं। कला समस्त से बाहर तो नहीं, तब वह भी मानव के लिए है। 'मानव के लिए कला' मे ही कला की महान् सार्थकता है और सिद्धि भी। कला साध्य नहीं, साधन है। जब यह साधन सिद्धि पाता है या कला जीवन के उत्थान, विकास, अनुरंजन, विश्लेषण, चित्रण, विराटीकरण, आनन्दवर्द्धन में सफल होती है, तब साधन ही साध्य बन जाता है। तब यदि "कला के लिए कला" की घोषणा की जाय तो यह घोषणा चुनौती से परे है। कभी-कभी कला दमघोट सामाजिक, धार्मिक, नैतिक या राजनीतिक बंधनो मे जकड दी जाती है। मानव की मानसिक या भौतिक दासता को स्थापित करने या रखने के लिए कला का दुरुपयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति मे कला की स्वाधीनता—रक्षा की पुकार सभी ओर से उठाई जाती है। यह पुकार "कला के लिए कला" का नारा बनती है, लेकिन यह पुकार परिस्थित-जन्य है, कला का जीवन-सत्य नहीं।

कला का यही स्वरूप मै ने इस नाटक मे स्वीकृत किया है। यदि कला को यथार्थरूप मे समझा जायेगा, तो "कला जीवन के लिये" वाले सत्य में प्रचार, उपदेश, पोस्टरबाज़ी, नारा-साहित्य की गंध कभी आ ही नहीं सकती—साहित्य की त्रिकालातीत व्यापकता और अनन्त मानवता के प्रति

अनुरोध, उसमे रहेगा । कला से विमुख और जीवन से अंजान जन ही "कला जीवन के लिये" मे ये सब-कुछ देखते हैं ।

नाटकीय शिल्प [Technique] का हिन्दी मे पर्याप्त विकास हुआ है—निरंतर हो भी रहा है । नाटक के अभिनय का व्यक्तिगत अनुभव होने और हिन्दी-नाटको का समीक्षात्मक अध्ययन करने के कारण नाटकीय शिल्प का थोडा-बहुत ज्ञान मुझे है । यह नाटक लिखते समय इस बात का ध्यान मुझे रहा है, कि शिल्प सम्पन्न और विकसित हो । शिल्प के विकास की जो देन हमे पूर्व शिल्पियों से मिल चुकी है, उसे साथ लेकर एक-दो पग आगे भी बढा जाय, तो अच्छा । शिल्प के क्षेत्र में "प्रसाद" और लक्ष्मीनारायण मिश्र महान् निर्माता है । मिश्र जी विशेष रूप में । अनेक दृश्यों के झंझट से नाटकीय शिल्प की मुक्ति दिलाने का प्रारम्भिक कार्य "प्रसाद" जी ने किया । "ध्रुवस्वामिनी" में तीन अंक है—वे ही दृश्य । नाटक की पूर्ण कथा, चरित्रों का सफल विकास और वातावरण का यथार्थ चित्रण तीन अंको में हो गया । इसी का विकास किया लक्ष्मीनारायण मिश्र ने अपने नाटकों मे । "वत्सराज" और "वितस्ता की लहरे" मे इस शिल्प का चरम विकास देखा जा सकता है । यह "दृश्य-परिवर्तन-विहीन" नाटकीय शिल्प चुनना अपने को कम खतरे में डालना नहीं । जीवन की लम्बी कथा का चुनाव इसकी असफलता है । कथा की सर्वोपरि प्रधानता भी इस शैली में अधिक बाधक ही बनेगी ।

भौतिक और किसी अंश में, मानसिक जीवन का भी सच्चा प्रतिनिधित्व या प्रकटीकरण संकलनत्रय मे होता है । शिल्प में संकलनत्रय की मांग सर्वोपरि है । प्रस्तुत नाटक में स्थान, कार्य और समय की एकता एकांकी के समान सफल और सम्पन्न रूप में आई है । इसका रंगमंच भी एकांकी-रंग मंच के समान सरल और सुविधाजनक है । पटपरिवर्तन, रूप-चित्रण आदि की कठिनाई इसमें न मिलेगी ।

घटना की प्रधानता बालबुद्धियों की कौतुहल-तुष्टि तो करती है, जीवन

का उद्घाटन उससे नही होता। जीवन की यथार्थता जितनी मन के पत्तो मे छिपी है, बाहरी कर्म और घटनाओ की सघनता मे नही। चरित्र-प्रधानता ही साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए। इस नाटक मे भी चरित्र-प्रधानता मिलेगी। यही बात सक्रियता [Action] के सम्बन्ध मे भी समझ लेनी चाहिए। सक्रियता या कार्य-व्यापार उछल-कूद में नही, मानसिक प्रतिक्रियाओ के चित्रण मे है। मतलब, अनुभाव और विभाव मे सक्रियता समझनी चाहिए। यही अभिनेयता की सफलता है, न कि पर्दा उठाने और गिराने में या क्षिप्रता से प्रवेश और प्रस्थान मे। प्रवेश और प्रस्थान भी मानसिक प्रतिक्रियाओ और क्रियाओ से प्रेरित होने चाहिये—अच्छे नाटक की यही पहचान है।

मानसिक संघर्ष का जो मूल्य और महत्त्व है, वह पसीना-पसीना होकर कुदाली चलाने या शारीरिक परिश्रम करने में नहीं। इसे मै हेय मानता हूं, सो बात नहीं। हमारा भीतरी संघर्ष बाहरी परिस्थितियो से प्रेरित है, ऐसा भी मै मानता हूं। तो भी भीतरी संघर्ष दिखाना ही विधेय है। वही बाहरी संघर्ष की कसौटी बनता है। इसके अतिरिक्त मानसिक प्रतिक्रियाएं बाहरी या भौतिक क्रियाओ-प्रतिक्रियाओ की जननी है। प्रतिक्रियाएं—हाव और अनुभाव—ही चरित्र-चित्रण की साधन है। ये है मानव-जन्य-भाव-प्रेरित, मानसिक प्रतिक्रियाएं जब आनन पर उतरती है, तभी भाव का उदय और प्रकाशन होता है। इसे ही रस का बिम्ब उपस्थित करना कहते है। नाटक, दृश्य-काव्य होने के कारण, रस का बिम्ब खडा करने के लिये उपयुक्त क्षेत्र है। अनुभावो और हावो का प्रकाशन ही अभिनय-कला है। नाटक चरित्र-प्रधान होने के कारण, निर्देश में वक्ता और श्रोता, दोनो पात्रो, के अनुभावो का बडा ध्यान रक्खा गया है। एक पात्र के बोलते रहने की अवस्था में भी श्रोता-पात्र के आनन पर बनने-मिटने वाले अनुभावो का भी निर्देश कर दिया गया है।

नाटक-रचना के विषय मे एक बात और कह दूं। बम्बई के अपने चार वर्ष के जीवन मे मैंने रेस और शराब के विषैले प्रभाव से अनेक घरो की सुख-शान्ति, सम्पत्ति-मर्यादा का जो करुण विनाश देखा, वह अत्यन्त हृदय-वेधक है। धनी और सम्पन्न ही नही, निर्धन मज़दूर भी इस तबाही के सब से अधिक शिकार होते है। मिलवर्कर, साग-सब्ज़ी बेचने वाले, फुटपाथ पर सो कर जीवन गलाने वाले तक, मदिरा पीकर, जो अपराध-वृद्धि करते है, रेस मे पहुंच कर लखपति होने के जो सपने बटोरते है, वह वर्णन से परे है। बहुत दिन से विनाश के वे चित्र मेरे मस्तक मे करवटे ले रहे थे। इस नाटक मे वे उतर सके या नहीं, यह मेरे कहने की बात नही।

हा, अन्त मे हिन्दी-निकेतन "होशियारपुर का धन्यवाद मै अवश्य करता हूं, जिन्होने यह नाटक लिखने के लिए मुझे प्रेरित किया।

के० वी० कालेज
माछरा (मेरठ)

—जयनाथ "नलिन"

पहला अङ्क

[दृश्य-निर्माण—एक सुन्दर पुराने दो-मंज़िले मकान का ग्राउन्ड-फ्लोर। तीस-चौबीस फीट विस्तार का एक कमरा, जिसके ऊपर कोई मंज़िल नहीं। मंज़िल है इसके बराबर वाले कमरे पर, जिसकी पीठ सड़क की ओर, और द्वार भीतर की ओर है। घटना-कक्ष की मुंडेर पर एक गज़ ऊंचा जालीदार जगला है। कक्ष के दाहिनी ओर ज़ीने का द्वार, जो ऊपर जाने के लिए कक्ष की छत पर खुलता है। कक्ष की पिछली दीवार पर, जो दर्शकों के ठीक सामने पड़ती है, बीच में अंगीठी की कानस के तीन फीट ऊपर मोतीलाल के पिता सेठ दामोदरदास का चित्र टंगा है। उसके दोनो ओर बम्बई के समुद्री दृश्य वाले दो चित्र हैं। सेठ दामोदरदास के चित्र के नीचे, कानस पर, एक बड़ा-सा दर्पण रखा है। कानस पर बीच में फूलदान और दोनो ओर कुछ गिलास और बोतलें रखी हैं। फर्श पर दोनो ओर कोनो में स्थित छोटी-छोटी तिकोनी दो मेजों पर कागज़ी फूलदान रखे हैं। दीवार से दो गज आगे सोफा और दर्शकों की ओर रुख किये सोफे की संगनी दो कौच। सोफे और कौचों के बीच दोनो ओर बेंत की बुनी हुई दो आराम कुर्सियां पड़ी हैं। बीच में चौकोर आबनूसी मेज, जिस पर झालरदार आवरण-वस्त्र बिछा है। कक्ष की चौड़ाई वाली दोनो दीवारों में सम्मुख दो द्वार हैं, जिन पर हल्के हरे परदे पड़े हैं। भीतर से इस कक्ष में प्रवेश प्राय दाहिने द्वार से होता है। फर्श पर दरी, बीच में दरी के ऊपर कश्मीरी काम वाली ४×६ फीट की चादर बिछी है।

समय—सुबह आठ-साढ़े आठ बजे। कमरे के सामने सड़क पर बिछी धूप की पतली-सी पट्टी, जो धीरे-धीरे कमरे की ओर बढ़ रही है।

वातावरण—हवा में शीतलता और सिहरन है—सुकुमार मन्द

पवन के झोके जब-तब पर्दों और कागज़ी फूलों को गुदगुदा जाते है। मौसम अत्यन्त सुहाना और स्वास्थ्यप्रद—चैत्र का पूर्वार्ध ।

पर्दा उठते ही बिन्नू हाथ मे झाड़ू लिए गुनगुनाते-गाते हुए कक्ष मे प्रवेश करता है। मुस्करा कर दर्पण में मुख देखता है । झाड़ू एक ओर फेक चपलता से कमीज़ की जेब से कंघा निकाल कर बाल बाहने लगता है। सिर को घुमा-फिरा कर प्रतिबिम्ब देखता और मस्ती से पग धरते हुए कमरे की सफाई करने लगता है। बालको के दौड़ने-भागने का शब्द होता है । बिन्नू क्षण-भर ठहर कर दाहिने द्वार की ओर देखता है और फिर एक स्टूल रख दामोदरदास का चित्र पोछने लगता है।]

बिल्लू [नेपथ्य मे]—**ऐं-ऐ म-अ-म्मी । पम्मी नई···।**

पम्मी [नेपथ्य मे]—**म-अ-म्मी मेरा छीनता है। तू अपना पैले ही ··**
[लापरवाही से बाल बिखराते-लहराते, नगे पैर, हरी-गुलाबी छीट का फ्रॉक पहने, एक हाथ का टोस्ट कुतर-कुतर कर खाते और दूसरे मे एक टोस्ट लिए भागते हुए प्रवेश] **मैं क्यों दूं?** [टोस्ट कुतर कर अंगूठा दिखाती है। नंगे सिर सिलेटी रंग की निकर और आधी बाहो की सफेद कमीज, जो निकर से कुछ बाहर निकली है, पहने बिल्लू का परदा उठा कर झाकना] **तू भी तो नहीं देता अपनी चीज़। हां लल्ला जी।**

बिन्नू [रोकते-टोकते हुए]—**अ ररर ····। सारा फर्श गन्दा · ।**
[काम छोड़ दोनो को देखने लगता है।]

बिल्लू [पकड़ने को झपटते हुए]—**तो तू छाला का छाला खा जायेगी?**

पम्मी [सतर्कता से बच कर भागते हुए]—**हां-हां, छाला का छाला ।**
[खिजाती है]

बिन्नू—वाहव्वाह ! बिल्लू की हुर्रे । [तालिया बजाता है]

बिल्लू [तेज़ी से पीछा करते हुए]—ला, नई तो माल डालूंगा।

बिन्नू—शाबाश—पकड़ो।

पम्मी—हाय मम्मी···ये बिल्लू [मेज के चारो ओर भागती है] ले पकड़ ले।

बिल्लू—हाथ नई आयेगी। हाथ आ जा, नई तो मारूंगा। [पम्मी खड़ी होकर अंगूठा दिखाती और खिजाती है। बिल्लू फिर उसको पकड़ने दौड़ता है। पम्मी बिना घूमे जल्दी में लौटती है। एक कुर्सी से टकरा कर लड़खड़ाती है। बिल्लू दौड़ कर बाल पकड़ लेता है।]

बिन्नू [तालिया बजा कर हंसते हुए]—वाहव्वाह ! पकड़ी गई। बिल्लू जीत गया। श··आ··बाश।

पम्मी [बाल छुड़ाते हुए और टोस्ट बचाते हुए]—आय··आय···हाय छोड़ मेरे बाल, नई तो··[बाल खींचता है] हाय···मम्मी···ये बिल्लू······।

बिल्लू [टोस्ट छीनने की चेष्टा में]—आय···आय करती है, देती क्यों नई टोस्ट ? [बाल खींच कर] ला नई तो ·।

बिन्नू—शाबाश बिल्लू !

पम्मी [बाल छुड़ाते हुए]—आय, ओ मम्मी ! ये बिल्लू मेरे बाल नई छोड़ता।

बिन्नू—हां इसी तरह, छुड़ा ले···शाबाश।

बिल्लू [बाल ढीले करके]—मम्मी-मम्मी कलके तो लोती है, टोस्ट क्यों नई देती ? ला दे, नई तो फिल [जरा खींच कर] छाले बाल··।

पम्मी—हाय। [बिन्नू खिलखिला कर हंसता है] मरे मारूंगी तुझे भी क्या खी–खी करता है।

बिन्नू [आखे मटका कर गाते हुए]— **मालोगी कैछै पम्मी रानी जी ? बिल्लू से बाल तो छुड़ाये नही जाते जी ।**

बिल्लू—बाल छुला तो ले । बोल देगी, तोस्त या नहीं ?

पम्मी—हां-हा, छोड़ मेरे बाल ।

[बिल्लू पकड़ ढीली करता है । पम्मी 'नई-नई' कहती, अंगूठा दिखाती हुई भागती है । बिन्नू खिलखिला कर हंसता है ।]

बिल्लू—अच्चा, तुजै मै बताऊं । [पकड्ने के लिये उसका पीछा करता है]

बिन्नू [फुर्ती से फर्श पर कूदते हुए]—**भागते दुश्मन का पीछा करना वीरों को शोभा नही देता ।**

[बिन्नू को उठाकर कन्धे पर बैठा लेता है । वह कुछ कुलबुलाता है—उसे गुदगुदी करता है । एक हाथ से पम्मी का टोस्ट छीन कर उसके हंसते हुए मुंह मे दे देता है । पम्मी ज़रा रूठती है । उसे भी गुदगुदा कर कंधे पर बैठा लेता है । और '**नाचो नाचो मेरे मन**'' गाओ **गाओ मेरे मन**'''**आज पम्मी मगन, और बिल्लू मगन** ।' गाते हुए नाचने लगता है । दोनो टोस्ट खाते हुए खिलखिलाते है । सद्यःस्नाता लेखा श्वेत साड़ी, हल्की हरी चोली और लकडी की चट्टिया पहने, बिखरे भीगे बालो से पतली-पतली बूंदे टपकाती, पर्दा उठाये चौखट पर खडी वात्सल्य से तर पुतलियो और मुस्कान-जगमग अधरो से क्षण-भर देखती रहती है । चक्कर काटते हुए बिन्नू का ध्यान सहसा उधर जाता है । वह एक-दम ठिठकता है ।]

लेखा [मुसकान छिपाते हुए बनावटी रोष में]—**क्यों रे बिन्नू, यह तेरी सफाई हो रही है ? वे आ गये तो सारी मस्तियां निकाल देगे ।** [बाएँ हाथ मे बाल पकड, दाहिने से सूंतती है ।] **और तुम दोनो को भी**''' ।

बिन्नू [आश्चर्य और लज्जा से]—**क्या बाबू जी जाग गये ?**

लेखा—नौ बजने लगे, अभी समय ही नहीं हुआ, जागने का?—नाचने मे मस्त है, पता भी तुझे क्या चले ।

बिन्नू [अनुनय और विवशता के अभिनय से]—मैं करता भी क्या बी–ई जी, दोनों कूद कर कंधे पर चढ़ गये । कहने लगे……।

पम्मी, बिल्लू [विरोधी स्वर में]—मम्मी, यह झूठ बोलता है । यह बला कलाब है ।

लेखा [सस्मित ताडना से]—चुप! तुम कौन से भले हो । उतरो नीचे । स्कूल नहीं जाना ? [बिन्नू दोनो को उतारता है] अभी तक गन्दे कपड़े पहने हो । चलो, न्हाओ-धोओ, कपड़े बदलो । [दोनो का हाथ पकड़ कर भीतर की ओर प्रेरित करती है, बिन्नू से] और श्रीमान् जी, आप भी तनिक फुर्ती से हाथ चलाइये । [प्रस्थान]

बिन्नू [लेखा को सुनाते हुए]—घण्टों का काम सिकण्डों मे । [सफाई करने लगता है ।]

हॉकर [नेपथ्य में साइकिल-रेढ़ी चलाते हुए]—डबल रोटी · मक्खन । ताजा मक्खन· ·बढ़िया अण्डे ।

बिन्नू [काम में लगे-लगे नकल उतारते हुए]—डै · बल ओटी मक्खैन ···। डै ··बै··ल···ओ · टी ···· मै···खै···न · ।

हॉकर [सामने आकर ढक्कन उठाता है । एक डबल रोटी, तीन-चार मक्खन निकालने लगता है]—डबैल ओटी···मक्खैन · मी···ई–ई–दें बन्द ।

बिन्नू [मुंह बिगाड कर]—बासी–रोटी, सड़ा हुआ मक्खैन· बा · सी · ओ ·····टी ।

हॉकर [सामान थमाते हुए]—एक तो वैसे ही बड़े सुन्दर हैं श्रीमान् जी, ऊपर से यह थूथड़ी और बिगाड़े लेते हैं ।

ब्रिन्नू [सामान लेकर फेंकने की धमकी देकर]—**बक्वास की तो अभी सारी चीज़ें** ··[लिफाफा हाथ मे लिये दोनो हाथ कूल्हो पर टिकाकर मुसकान और सौदर्य का अभिनय करके] **कोई कम सुन्दर हैं।**

हॉकर [रेढ़ी आगे ले जाते हुए]—**अरे वाह रे कलजुगी कामदेव। कुरबान तेरी सूरत।**

[दोनो का खिलखिला कर हंसना। हॉकर का प्रस्थान। बिन्नू का मेज का आवरण वस्त्र, फूलदान आदि ठीक करना। सफेद पैण्ट, नीली बुश-शर्ट, काला बूट, एक हाथ मे सिगरेट और दूसरे मे अखबार लिए, मोतीलाल का प्रवेश। बिन्नू देखते ही बिना बोले एक ओर खड़ा हो सैल्यूट करता है।]

मोती [सिगरेट का कश खीचते हुए बिना सैल्यूट स्वीकृत किये राख ऐश ट्रे में झाड़ते हुए सोफा पर बैठता है]—**देख अभी चला जा। सेठ मगनलाल को बुला ला।**

बिन्नू—**कल कह आया था साब। वह बोलते**·····

मोती [झिड़क कर]—**बदतमीज़! बेवकूफ**··! **जो तुझे हुकुम दिया जाय, वह करेगा या** ··**अपनी टांग अड़ायेगा।**

बिन्नू—**जी।**

मोती—**जी का बच्चा। कहना, अभी बुलाया है। बहुत आवश्यक काम है।**

बिन्नू [डबल रोटी मक्खन हाथ मे लिए भीतर की ओर जाते हुए]—**बहुत अच्छा साहेब।**

मोती [रोक कर]—**अबे पूरी बात भी तो सुन।** [बिन्नू ठहरता है] **बाई से पूछ लेना, कभी कुछ मंगाना-मुंगाना हो।**

[सैल्यूट सा कर 'जी' कह बिन्नू का प्रस्थान। बाहरी द्वार से एक १४–१५ वर्षीय लड़के का प्रवेश।]

लड़का—सेठ सलाम।

मोती—क्या है रे छोकरे ?

लड़का—घोष बाबू सेठ ने भेजा है। बोलता है, कल आप उनके पास आयेंगा यह वह इधर आयेगा।

मोती—उनको कहना, वे ही इधर आवे। २–३ बजे दिन को। और कल नहीं, आज ही।

लड़का—बहोत अच्चा साब। हम बोल देंगा।

मोती [जाते हुए लड़के से]—अबे आज ही आने को कहना—कभी भूल जाय।

['अच्चा-अच्चा' कहते हुए क्षिप्रता से लड़के का प्रस्थान। मोती अखबार देखने लगता है। घुटनो तक कसी-कसी धोती, सिर पर गाधी टोपी, पैर में देसी जूता पहने और कंधे पर कुर्ता डाले पुरानी सी ऐनक लगाए मगनलाल का प्रवेश।]

मगनलाल [चबूतरे से दायां पैर चौखट पर रखते और घुटनो पर हथेली टिकाते हुए प्रवेश करके]—हे राम तेरी माया···ओंव् नारायण।

मोती [क्षिप्रता से स्वागत के लिए उठकर]—नमस्कार चाचा। कितनी देर से दर्शन की आशा लगाये था। [सोफे की ओर संकेत करके] बैठे। [मगनलाल बेंत की कुर्सी पर बैठने लगता है—उसे पकड़ कर सोफे पर बैठाते हुए] चाचा, यह क्या करने लगे ?

मगनलाल [बैठते हुए]—भया, हमें थोड़े ही सजै है, इन गद्दियों पर बैठना, ये तो अफसर लोगों · ·· ।

मोती—चाचा लज्जित न करो।

मगनलाल—अभी अभी बिन्नू पहुँचा। मैं तो दुकान को चला था। बोला, बाबू जी बुलाते हैं, तुरन्त मिले। हे राम—ओव्! मैं क्या, पहले सुन आऊँ, क्या बात है।

मोती—पता नही, यह बिन्नू का बच्चा चीटी की चाल चलता है क्या। यानी नालायक को सुबह सात बजे भेजा था—ऐसा न हो, चाचा दुकान चले जायं। आज-कल बनिज-व्यौपार मे वैसे ही, समय नहीं मिलता। [बनावटी मुसकान और खुशामद से] हैं-हैं-हैं-हैं आज-कल तो चाचा, हजारो के वारे न्यारे ...... ।

मगनलाल [अप्रभावित]—अरे कहां भैया, रोजगार तो रहा ही नहीं आज-कल। दिन-भर बैठे मक्खी मारा करो। सच, गाहक की सूरत देखने को जी तरस जाता है। भगवान् जानता है, जैसे-तैसे गिरस्ती की गाड़ी खीच रहे हैं।

मोती—क्षमा करे, देर तो नहीं हो रही चाचा ?

मगनलाल—ना-ना, बिल्कुल नही। फिर भी भगवान् का थड़ा—बैठना तो पड़ता ही है। धर्म-काटे से दूर रहो, तो अपनी भी मरजाद जाती है।

मोती—इसमे क्या शक। तो चाचा जी, मैंने आपको इसलिए कष्ट दिया .....आप तो जानते ही हैं, पिता जी से आप का कितना प्रेम था उनके बाद मुझे तो केवल आपका ही आसरा है।

मगनलाल—उनकी बात क्या कहते हो बेटा—देवता आदमी थे। आज भी उनकी आद आवै है, तो कलेजा भर-भर आवै है। उनके वक्तों में बड़ी बरकत थी, आज-कल तो ग्राहक लूटने की नजर से आवै हैं।

मोती—इसमें क्या सन्देह। मैंने आपको इसलिए कष्ट दिया .....।

मगनलाल—तुमसे क्या छिपा है भैया, तुम तो अपने बालक हो। पहले गाहक आता था, मुंह मांगे दाम बिना कान हिलाये दे जाता। अब तो ऐसी नीयत बिगड़ चली कि दमड़ी-दमड़ी के लिए घण्टा भर माथापच्ची करता है। और अब लेन-देन का काम तो ऐसा चौपट हुआ कि जिसे दो, लौटाने का नाम नहीं लेता। आना-रुपया ब्याज भी देते जान निकलती है। अपनी छाती के तले से निकाल कर रुपया दे भी, तो कोई किस आस पर ?

मोती [सानुनय स्वर मे उसके दोनो हाथ पकड़ कर]—मेरी तो नैया पार लगानी ही पड़ेगी चाचा। नहीं तो, आज पिता जी की लाज भी···। घर की मर्यादा···खतरे मे।

मगनलाल [सान्त्वना देते हुए, दायां हाथ उसके कंधे पर रखकर]—ऐसे कौन घर में जवान बेटा-बेटी विवाहने को बैठे हैं। ढाई प्राणी—अफसरी करते हो भैया, ऐसी क्या विपता आ पड़ी कि यों हौसला छोड़ो हो ?

मोती [सानुरोध सकरुण स्वर में]—कुल के मान का सवाल है चाचा, नहीं तो, आप तो जानते ही हैं, किसी को कष्ट देने वाला मैं नहीं। ज़बान का पास-बरना······।

मगनलाल [परखीली पुतलिया चश्मे से ऊपर कर]—मेरे जोग जो सेवा सहायता हो, मैं आधी-रात करने को तैयार हूँ। तुम से बाहर तो नहीं मैं।

मोती [आंखों मे आशा, वाणी में करुणा और चापलूसी भर कर]—आप ने मुझे बचा लिया चाचा। कुल की लाज रह गई। डूबती नाव किनारे लगी। आप के उपकार के लिए किन शब्दों में······ ?

मगनलाल—हं-हं-हं-हं-अपनों पर अपनों का उपकार कैसा ? घरवालों को धनबाद नहीं दिया जाता, भैया।

मोती—चाचा जी, ५०० रुपये का प्रबंध कर दीजिए आज—बस, दो बजे तक। वह मर्दूद आयगा। बड़ा धन्नासेठ बनता है। मैंने लाखों का फायदा कराया—नही तो ज़रा-सी दुकनिया लिये बैठा था। ब्लैक किया। मैंने बचाया, नहीं तो आज, बेटा चक्की पीसता हुआ होता।

मगनलाल [साश्चर्य पुतलियां चमका कर]—५०० रुपये! तुम से क्या छिपा है भैया। बनिज-व्यापार का जो हाल है। पुराना सारा रुपया फँसा पड़ा है। लेकर लोग करवट नहीं लेते हैं। भगवान् जानै है, भैया, आज-कल तो लौट-फेर के लिए भी चार पैसों का परबंध मुसिकिल से होय है।—और फिर आज दो बजे तक।

मोती—चाचा किनारे लगा कर मत डुबाओ। जिस प्रकार भी हो··· मेरी लाज आज तुम्हारे हाथ। दो बजे तक न सही, तीन-चार बजे तक भेज दे।

मगनलाल—थारी लाज, सो म्हारी लाज, पर भैया, ५०० रुपये तो एक सतवाड़े में भी इकट्ठे नाय हो हैं! ऐसा करो, कुछ कम देकर टाल दो। बाकी फिर देते रहना। और क्या, मुंह काला करो उस पापी का।

मोती—तो अधिक से अधिक कितने का प्रबंध कर दोगे? पाँच सौ ही हो जाते तो······।

मगनलाल—भगवान् सब जाने है, अपनी हालत तो—अपने पास तो कुछ है नहीं। कुछ आड़ रख कर कहीं से ·····। आज-कल तुम तो जानो हो भैया, लोग कैसा मुँह फुलाकार बातैं करैं हैं। जिसके जाओ वही अकड़ दिखावै है।

मोती—कुछ आड़ रख दूंगा—कुल की लाज तो बचे। उस नीच के सिर

पर जूता तो दे मारूं। [उठ कर अलमारी का ताला खोलने लगता है]

मगनलाल [अलमारी की ओर देखते हुए]—और क्या भैया, मुसीबत तो टले······।

मोती [सोने का एक हार मगन को देते हुए]—पिताजी ने कितने प्यार से बनवाया था यह। उस सस्ते समय मे भी ··और अब तो ८००–९०० से कम मूल्य का नहीं। ५०० तो कोई भी दे देगा इस पर।

मगनलाल [परख-भरी आखो से देखते हुए]—आजकल सोने का भाव गिर गया है कुछ। फिर भी···खैर···दौड़-धूप करके जितना भी मिल पावैगा ··। आज-कल भरोसा भी नहीं रहा।

मोती—४०० तो कोई भी दे देगा इस पर।

मगनलाल—४०० तो कोई शायद ना देवे, पर २०० रुपये तो मैं···।

मोती [आश्चर्य से]—दो सौ ! आठ सौ के माल पर दो सौ !—यह क्या कहते हैं चाचा ? दो सौ से क्या बनेगा ?

मगनलाल [हार उलट-पलट कर]—भैया, माल तुम्हारा, देने वाला कोई। मैं तो चाहूं हूं कि हजार मिल जाय, पर भैया, साहूकारों के दिमाग तो असमान पर चढ़े हैं ··सीधे मुंह बात नही करते।

मोती [सानुनय]—दो सौ में तो चाचा कुछ न होगा। घर का माल भी खोया, लाज-मर्याद भी गई।

मगनलाल—खींच-तान कर १०–२० और हो जायेंगे।

मोती—कोशिश तो······

मगनलाल [उठते हुए]—इसकी चिन्ता न करो, अपनी ओर से तो जितना होगा, मैं उसे ही दबाऊंगा।

मोती [उठकर चौखट तक साथ आते हुए]—साढ़े तीन सौ भी हो जाय, तो बात रह जाय। और चाचा यह बात अपने तक ही रहे··· कुल की मर्यादा का मामला है।

मगनलाल [बनावटी आत्मीयता की मुस्कान से]—हं-हं-हंहं—थारी म्हारी मरजाद क्या दो-दो हैं? पहले भी थारे दो नग म्हारे घर हैं, कभी मुंह पर लाया मैं? हं-हं-हं-हं अब तो समझ लो, चीज कूएं मे पड़ गई।

मोती—अच्छा, जय रामजी की, चाचा।

मगनलाल [घुटने पर हथेली रख चौखट से नीचे उतरते हुए]—हे राम ऑंव। दोपहर तक भेजता हूं। [प्रस्थान]

मोती—जयराम जी की चाचा।

मगनलाल [नेपथ्य में]—जैरामजी की। हे राम तेरी···ओं··व्! नारायण!

सहजो [सप्रवेश]—बाई बोलता है, साब चाय कब पीना मांगता है?

मोती—अभी थोड़ी देर के बाद।

[सहजो का भीतर की ओर प्रस्थान। मोतीलाल अलमारी से फाइल निकालता है। सोफे पर बैठ सामने मेज पर फाइल रख, उसे खोल कर उलटने-पलटने लगता है। एक ओर से बिन्नू और दूसरी ओर से पाण्डुरंग का प्रवेश। पदचाप सुनकर मोतीलाल फाइल से ध्यान हटा, बाहर की ओर देखता है। दोनो उसे सैल्यूट-शैली मे अभिवादन कर एक तरफ खड़े हो जाते है। मोतीलाल सिर ज़रा नीचे कर सैल्यूट की स्वीकृति देता है। एक-आध मिनट फाइल देखता रहता है।]

मोती [पाण्डुरंग से]—अच्छा, अभी थोड़ी देर बाहर बैठ। तुझे कहीं भेजना है।

पाण्डुरंग—देशपाण्डे साहब बोलता था, कि साब दौरे पर कब जायेगा ?

मोती—हम उनको खुद खबर देगा। तुम अभी बाहर बैठो।

पाण्डुरंग— [सैल्यूट करते हुए]—जो हुकुम साब। [प्रस्थान]

बिन्नू—साब, मैं गया था सेठ को बुलाने। वह घर पर ·····।

मोती—आकर मिल गया। और बाजार से बाई ने जो-कुछ मंगाया था, ले आया ?

बिन्नू—हां साब।

[बिन्नू खड़ा रहता है। मोती फाइल देखने लगता है। एक कागज़ निकाल कर पढता है।]

भादो [प्रवेश करते हुए]—राम राम बाबू जी ! [कुछ दूर हट कर खड़ा हो जाता है।]

मोती [गम्भीरता से फाइल पर आंखें जमाए हुए]—राम राम बुड्ढे ! [बिन्नू से] देखना, होटल डीलैक्स में जाना। शर्मा साब को बोलना, दोपहर को कुछ मित्र आ रहे हैं, चार प्लेट कोफते और दो रोस्टेड चिकिन्स—बहुत बढ़िया हों। जानता है न, शर्मा जी को ?

न्नू—वही भूरी-भूरी मूछों वाले ज़रा भारी से ?

दो—बाबू जी, हमार अरज भी· ···।

मोती— [उपेक्षा से]—अबे ठहर भी, एक मिनट। अरज का बच्चा। हमेशा तब आयगा, जब सिर पर काम का बोझ होगा। [बिन्नू से] हां, वहां मैनेजर साब। दो बजे तक पहुंच जायं सारी चीज़ें।

बिन्नू—जी, और आफिस के लिए जो चिटठी भेज रहे थे ?

मोती [घण्टी बजाता है] —पाण्डुरंग जायगा। [पाण्डुरंग का प्रवेश] यह चिट्ठी ले जा। दफ्तर मे सावन्त बाबू होंगे, उन्हें दे देना। [चिट्ठी देते हुए] अबे, किसी और को न दे देना कहीं।

पाण्डुरंग [चिट्ठी जेब मे रखते हुए]—नौ वर्ष से सरकारी नौकरी करता हूं—कभी यह गलती हुई ? [प्रस्थान करते हुए] और कुछ लाना तो नही उधर से ?

[मोती सिर हिलाता है। पाण्डुरंग का प्रस्थान]

मोती—क्यों रे बुड्ढे, तू किस लिए ?

भादो—सरकार हमार ऊपर भी दया की नज़र होइ जाय।

मोती—अच्छा-अच्छा, सुन ली तेरी भी। [बिन्नू से] पाटनवाला के यहां से एक 'ब्लैक एण्ड व्हाइट' ले आना—और आधा दर्जन सोडे की बोतले। [भादो से] बैठ जा, एक तरफ।

बिन्नू [झिझकते हुए]—उसने तो परसों भी मना कर दिया था, कहता है, पहले बिल··· ···।

मोती [गर्म होकर]—उसे मरना तो नहीं ? दुकान चलानी है या नहीं ? हमे मना करके रहेगा कहां ? आज ही इनक्वायरी बैठा दूं। आधा पानी मिलाता है—हमारी दया पर जीता है। मना कर दिया था—बेअदब कहीं का। [स्वर नीचा और धीमा करके] मैं उसे टेलीफोन कर दूंगा। नहीं तो, देख दादर-बार से ले आना। जाते हुए मेरी चिट लेते जाना। [भीतर जाने के लिए आख से संकेत करता है। बिन्नू का प्रस्थान। भादो को सुनाते हुए—स्वगत] क्या बुरा ज़माना आ गया। किसी पर कितना भी उपकार करो—कृतघ्न कहीं का। [फाइल लौटने लगता है]

भादो—बाबू जी, हमारे हिसाब मिल जाई । घर मे महरारू बीमार है, दवादारू को पैसा चाहिए । हम अपनी मुसीबत कहि नाइ सकत ।

मोती [आश्चर्य से]—तेरी औरत बीमार है ? दो-चार दिन हुए भली-चंगी छम-छम करती फिरती थी—क्या हुआ उसे ?

भादो—भगवान् कसम साब, मियादी बुखार बतावत है दागदर तो ।

मोती—बकता है डाक्टर । डाक्टरों-वाक्टरो के चक्कर मे जो पड़ा, बस तबाही । यानी ऐसे उलटे-उस्तरे से मूंडते हैं ।

भादो—या मैं तो कोइ शक नाइ बाबू जी, पर वह तो तेरह दिन से हिलडुल भी नाइ सकै ।

मोती—अबे, तो हत्या काहे को दिये देता है ? मैं डाक्टर को एक चिट्ठी लिखे देता हूं । कहां रहता है तू ? वह बिना कुछ लिये-दिये इलाज कर देगा ।

भादो—हम गरीब आदमी । साग-भाजी बेच कर किसी परकार बाल-बच्चों को पाल रहे हैं । चार महीने हो गये, आप खुद समझ सकत हो—गरीब की इतनी समाई कहां कि २० रुपैया उधार ·····।

मोती—अबे, तो मरा क्या जाता है ? यहां हज़ारों-लाखों का कारबार चलता है । ले जा अपने रुपये । [भीतरी द्वार की ओर मुंह करके] बिन्नू ! ओ बिन्नू ! ला तो चैक बुक—अभी इसकी नाक पर मारता हूं बीस रुपये का चैक । [बिन्नू का प्रवेश] चैक बुक निकाल दे । और आज से इस बुड्ढे से कुछ भी खरीदा तो ···· [भादो को घूर कर] बेअदब ! बदतमीज़ !

भादो [भय और दीनता से]—सरकार नाराज़ काहे होत हो ? गरीब आदमी का काम आप ही लोगों के सहारे चलै है । तुम्हारी दो रोटी हम ··· · ।

बिन्नू—लेकिन बैंक तो ·· ···।

मोती—हम तो गरीब समझ कर खरीदते थे सब्ज़ी इससे, वरना यहां तीन-सौ-पैंसठ आदमी गिड़गिड़ाते हैं आकर। ले आना बैंक से ····। फिरना वहां मारा-मारा। ले जा अभी चैक।

भादो—हम का करी बंक-संक का। हमै तो नकद रुपैया चाहिए। दवा-दारू का चिक से मिल जाइ? हमार तो महरारू बीमार ···। आग लगे तुहार बंक मां—हम रोज़-रोज़ परसान होत हैं।

[रूस्तम जी का प्रवेश]

मोती [बिगड़ कर]—आग? बैंक मे आग? अबे, ज़रा ज़बान संभाल। [रूस्तम जी से] देखी इसकी बदतमीज़ी।

राधेलाल [सप्रवेश]—क्या हुआ? साहब जी।

[दोनो का बैठना]

मोती [रोष मे आखें तरेर कर]—इस बुड्ढे को शरम नहीं आती! कहता है, बैंक मे आग लगे। बैंक मे आग—हे भगवान्। बैंक मे आग लग गई, तो तेरे बाप का क्या जायग। मारे तो जायेंगे [राधे और रूस्तम जी की ओर संकेत करके] ये लोग, जिनका लाखों रुपया बैंकों मे जमा है—बरबाद तो होंगे हम लोग, जिनका कारोबार ही बैंक से चलता है। अबे, बैंक मे आग लगाते हुए तेरी ज़बान नहीं जल गई।

राधे—बुड्ढा सठिया गया है।

रूस्तमजी—अभी पुलीस सुन ले, तो बुड्ढे को हवालात में बन्द कर दे। बैंक मे आग लागे, तो अपना लोग तो बरबाद। शमज कर नहीं बोलता।

भादो [अपराधी स्वर मे]—छिमा करैं महाराज। हमार मंसा या

नाही रही। घर मे तकलीफ है। दूकान पर सामान नाही। या मारै हमार बुद्धि ठिकाने नाही रही। पर गरीब आदमी का पैसा वसूल ना होय, तो बाल बच्चो का पालन कैसे होय।

मोती—अबे तू बीस रूपल्ली के लिये बैंक में आग लगाता फिरता है। तुझे बात करने की तमीज़ नहीं। ये लोग भी तो हैं—कभी मुंह पर भी नहीं लाये। इन रूस्तमजी से हमारा-वर्षों तक हिसाब-किताब चलता है। ये राधेलाल जी हज़ारों देकर, याद तक नहीं दिलाते [दोनो से] मोटा भाई, बड़ों का कलेजा बड़ा ही होता है।

रूस्तमजी—बेचारा गरीब आदमी है।

मोती—इसीलिए तो मैंने भी इसे माफ कर दिया [मादो से] देख बुड्ढे, आज तो बैंक बन्द हैं। कल मुझे बाहर जाना है। तो परसों आकर हिसाब कर जाना। और आकर पैसा नहीं ले गया, तो मुझ से बुरा कोई नहीं।

मादो [उठकर जाते हुए]—बहुत अच्छा सरकार। तुम्हार दया होइ जाय। कही-सुनी छिमा करैं। हमें परसों ज़रूर ··· तुहार बड़ा उपकार होइ। [नमस्ते करके प्रस्थान]

मोती—अच्छा-अच्छा। परसों आ जाना। [दोनो से] अपढ़ आदमी, इन से कौन सिरखपाई करे। बेचारे क्या जानें, कल्चर और मैनर्स क्या बला है।

राधेलाल—और क्या।

रूस्तमजी—मज़दूर लोग सब ऐसा ही है।

मोती—अरे हां, मैं तो भूला ही जा रहा था—क्या पीना पसंद करेंगे ? उड़ जाय एक-एक पैग।

रूस्तमजी—आपका मेरबानी। अब कोई वक्त है इसका ?

राधेलाल—हं-हं-हं-हं अपन तो ठहरे ...।

मोती—ना-ना संकोच न करे। चाय भी तैयार है। एक-एक प्याला । अरे बिन्नू ।

दोनों—अभी-अभी पीकर आये हैं।

[सहसा भीतर से लेखा का रोष और घबराहट-भरा स्वर सुन पड़ता है। सब उधर कान लगाते है। मोती '**अभी आया**' कह भीतर जाता है।]

मोती [नेपथ्य से]—क्या शोर मचा रखा है? [तनिक धीमे] न किसी आये-गये का ध्यान, न अपने मान का ।

[घर में बिल्कुल मौन छा जाता है।]

राधेलाल [धीरे से]—रूस्तम भाई, कितना फँसा बैठे हो ?

रूस्तमजी—चार साल हो गया। देने का नाम नहीं लेता। बताओ मोटा भाई, बिज़नस इस तरह चल सकता है? आज हम साफ बोल देगा, एकाउण्ट किलियर करो, ऐसी दोस्ती हम नहीं मांगता। जब भी पैसा मागता है, बहाने बना देता है। हम इस तरह उधार देगा, तो सारा बिज़नस फेल हो जायेगा।

राधेलाल—बाई के लिए तीन साड़ियां ले आया। अपने लिए दो तीन सूट बना लिये। सब ढाई सौ बनता है—पूरे तीन साल हो गये। पैसा नहीं, तो शराब क्यो पीता है ?

रूस्तमजी—हम बी एई बोलता है। शाला रेस भी खेलता है। हमारा माल फोकट का है, जो बिल पे नहीं करता। बाबा, हम इसको ऐसा जानता, तो कभी उधार नहीं देता। हमने इसको

असली विस्की पिलाया—पानी का एक बूंद जो कभी मिलाया हो।

[घण्टी बजती है। राधेलाल उठकर देखता है]

पहला आदमी [नेपथ्य से]—साहब घर पर है ?

राधेलाल —हां-हां क्या काम है ?

दूसरा आदमी [नेपथ्य से]—यों ही ज़रा रायसाब से मिलना है।

[दोनो का प्रवेश]

राधेलाल [वापस आकर कुर्सी पर बैठते हुये]—भीतर जा कर आये ही नहीं। नौकर भी ग़ायब।

पहला आदमी [खड़े-खड़े ही]—कितनी देर हुई गये हुए ?

रूस्तमजी [घड़ी देख कर]—दस मिनट तो हो गया।

दूसरा आदमी [एक तिपाई पर बैठते हुए, पहले से]—तुम भी बैठ जाओ भाई जान, [दोनों से] आप साब लोगों के आने का रायसाब को खबर मिल गया ?

राधेलाल—दर्शन भी हो चुके। अचानक भीतर चले गये। अभी तक पता नहीं, घर में हैं या बाहर।

पहला आदमी—बिन्नू को बुलाकर मालूम तो करें। हे भगवान, क्या किसमत में लिखा था। यह भी क्या पेशा करना पडता है—पास-पल्ले की रकम लगाओ और फिर पीछे-पीछे फिरो मांगते हुए। अट्हत्तर रुपये हो गये। फल मंगाये जाते हैं, देने का नाम नहीं।

रूस्तमजी—तुम लोग अपने अट्ठतरों को रोता है, यहां तो हजारों फंसा बैठा।

राधेलाल—दरवाज़ा तो खटखटाओ, शायद आ जायें।

दूसरा आदमी--साहब, हम गरीब आदमी तो विक्टोरिया चलाता है। घोड़ा रोज घास-चारा मांगता है। और इधर रायसाब मेहरबानी नहीं करता। कितना मुसीबत का बात है।

[कमरे की ओर आते हुए किसी पुरुष की चरण-चाप का स्वर, सबका संभलना]

राधेलाल [रुस्तम को संकेत करते हुए]--आ गया।

रूस्तमजी [दोनो व्यक्तियों को संकेत करते हुए कानाफूसी के स्वर मे] इश्-इश् व्हो आया।

[द्वार के पर्दे का हिलना। सबका क्षिप्रता से खड़े होना]

दूसरा आदमी--साब सलाम।

[बिन्नू का प्रवेश। सबका साश्चर्य देखना]

राधेलाल--अरे अपने सेठ को भेजो। बोलना, इतना आदमी लोग बैठा है। इतना देर हो गया। भीतर जाकर आया ही नही।

बिन्नू--साब तो चला गया।

रूस्तमजी [सरोष आश्चर्य से]--साब चला गया? हम को इदर किस वास्ते बैठाया? किधर चला गया साब?

बिन्नू--दफतर?

पहला आदमी--अरे भैया, कभी मिलेगा भी साब? तू कहता भी है हमारा संदेशा या बस, अपनी ओर से टाल-मटोल कर देता है।

बिन्नू--हम तो नौकर आदमी है।

रूस्तमजी--तो बोल देना, रूस्तमजी बहुत नाराज होकर गया है। हम इधर बैठा-बैठा रास्ता देखता रहा--यह अच्छा बात नहीं। इस माफिक नहीं चलता।

दूसरा आदमी--अच्छा भाई, हमारा सलाम बोलना साब को। रहीमा गरीब आदमी है--उस पर मेहरबानी करे। [प्रस्थान]

राधेलाल—अच्छा, कह देना कि दया करके पिछला रुपया पहुँचा दें। धिक्कार ऐसी दुकानदारी को। हम कोई भीख मांगता है ?

रूस्तमजी [प्रस्थान करते हुए]—यह बहुत बुरा बात है, यानी इस माफ़िक बीजनस कैसे चलेगा ? [नेपथ्य मे] हम छोड़ेगा नहीं—पाई-पाई वसूल न की तो रूस्तमजी नाम नहीं।

मोती [सप्रवेश]— पता नहीं, मर्दूद कहा से आ मरते हैं। भला, मेरे यहां कोई टकसाल खुली है, जो इन्हे देता रहूँ।

बिन्नू—रूस्तमजी तो बड़ा लाल-पीला ·····।

राधेलाल [नेपथ्य से]—बिन्नू, ओ बिन्नू, ·· ·· मेरी छतरी ······।

मोती—इसकी नीचता तो देखो, छतरी जान बूझ कर ··· ।

[छतरी को ठोकर मार भीतर को प्रस्थान करते हुए] चोर कहीं का।

राधेलाल [प्रवेश करके]—मेरी छतरी तो यहीं रहे जा रही थी।

बिन्नू [आश्चर्य से]--मैं भी तो कहूँ, बाबू जी की तो है नहीं।

[उठाकर देता है]

राधेलाल [छतरी संभालते हुए]--बाई तो होंगी ? जरा, उन्हीं को बुला दे। उनसे कहता चलूं। कैसा है तुम्हारा सेठ, लेकर देता नहीं।

बिन्नू—बाई तो पड़ौस में गर्बा देखने गई हैं।

राधेलाल--अच्छा, मैं खुद ही साब को मिलूँगा। [जाते हुए] पर याद से कह तो देना कि साड़ियों वाले सेठ राधेलाल · [प्रस्थान]।

बिन्नू—जरूर-जरूर ।

[परमजी भाई का प्रवेश । वेशभूषा—सफेद धोती-कुर्ता, चप्पल, दोहरा बदन, गेहुंआ रंग । लम्बाई मध्यम । बिन्नू सैल्यूट देता है । वह मुस्का कर स्वीकृति देता है ।]

मोती [सप्रवेश]—देखा परमजी भाई, कितना धूर्त है यह राधे का बच्चा, दोबारा देखने के लिए आया था । भला, इन हरकतों से कोई आदमी हमारी कृपाओं का अधिकारी बन सकता है ?

परमजी—अपने पैरों आप ही कुल्हाड़ी मार रहा है मूरख ।

मोती—मैंने समझा भी तो दिया, मोटा भाई, इस समय अपने पास लुटाने को नहीं । जब था, तुम लोगों को खूब चटाया । बैठें । [दोनो बैठते है] अरे बिन्नू , वहां गया था क्या ? जा, अब हो आ होटल-डी-लक्स मे । और उधर भी पाटनवाला या दादर-बार में · ···· । ले, यह चिट लेता जा । [परमजी भाई से] एक मिनट परमजी भाई ।

[बिन्नू को चिट देता है । चिट लेकर बिन्नू का प्रस्थान]

मोती—कुछ पिओगे ?

परमजी [कान छूकर]—तोबा कर बैठा हूँ बाई के सामने ।

मोती—मेरे सामने तो नहीं की । एक-एक पैग उड़ जाय ।

परमजी—बाई ने सौगंध खिला दी है, जो कभी भी पीकर घर आये तो ।

मोती—घर तो नहीं जा रहे अब—और इन बाइयों के चक्कर में पड़े तो जीवन का रस ले चुके । [उठकर अलमारी से बोतल और दो गिलास निकाल कर मेज पर रखता है] औरत को जितना दबा कर रखो, उतना ठीक ।

परमजी—यार रहने भी दो, इस वक्त ।

मोती [सोडे की बोतले मेज पर रखते हुए]—इतनी मे बनता ही क्या है ? यह तो [एक बोतल खोल गिलास मे उलट कर] पानी समझो ।

परमजी [गिलासो मे व्हिस्की उलटते हुए]—तो आज छोड़ोगे नही ।

मोती [दूसरे गिलास मे सोडा उलटते हुए]—अरे यार, ऐसा क्या रोज़ मिलते हो ।

लेखा [नेपथ्य मे]—अरी पम्मी, तूने तो नहीं खोला था सन्दूक ? [दोनो अपने में लीन गिलासो मे सोडा उलटते रहते है । मोती आंख बचा कर कनखियो से भीतर की ओर झाकता है] न जाने कौन आया था ? [धीरे स्वर में] तेरे पापा तो नहीं आये ? ओ बिन्नू ! न पम्मी का पता, न बिल्लू का । अरी सहजो—ओ बाई । [बरामदे मे भीतर की ओर चट्टियों के संचरण का शब्द ।]

सहजो—वे दोनों तो शाला को गेला । अबी आला नाही बाई ।

परमजी—[भीतर की ओर कान लगा कर] भाभी जी की आवाज़ मालूम होती है । [गिलास उठा कर मोती के गिलास से छुआते हुए] क्या हो गया ? [घूट पीता है]

मोती [उपेक्षा से]—होना-हुआना क्या है ? यों ही परेशान होने और लोगों को सुनाने की आदत पड़ गई है । [घूंट भरते हुए] काम-धाम कुछ है नहीं । खामखा चिल्लाना ।

परमजी—वैसे चलना है न कल ? सुना है, बड़े नामी घोड़े दौड़ रहे हैं । [घूंट पीता है] भाई साब, अपना कलेजा तो रहा नहीं इतना । [आत्म-गौरव की मुसकान आनन्द पर दौड़ जाती है ।] और बाई का हुक्म भी तो नहीं ।

मोती [खिलखिला कर]—वाहव्वा ! वाहव्वा क्या खूब ! सारी ग़रीबी आज ही दिखा डाली ! हं-हं-हं-हं, इसे कहते हैं दीनता। रूई मे ३ के १३ बन गये और रेस को जाने का कलेजा नही। [बड़प्पन की चमक और मुस्कान पुतलियो मे खिलाते हुए] हम कहे तो कहें भी मोटा भाई, कि अपना ज़माना लद गया। अपन तो बुड्ढे हो गये।

परमजी [हँसते-हँसते]—अच्छा-अच्छा, यह नहले पर दहला मारा। क्या खूब ! बनाना तो खूब जानते हो।

[मोती गिलास उठाकर होठ उसके किनारो से और पुतलिया ऊपर कर मुस्काते हुए घूंट भरता और परमजी की पुतलियो में पुतलिया डालता है। भीतर से बरामदे और सहन की ओर चट्टियो के संचरण का शब्द सुना जाता है। दोनो घूंट भरते हुए उधर ध्यान लगाते है।]

लेखा [नेपथ्य मे]—तूने तो नही देखा सफाई करते हुए ?

सहजो [नेपथ्य मे]—नारायण ! पांडुरंगा ! हम तो भीतर नाही आम्हाला मा हित नाही। हमें पता नाहीं नारायणा ! पांडुरंगा ! हारी देवा पांडुरंगा !

लेखा—तू भीतर नहीं गई ? तुझे पता तक नहीं ? और यह बिन्नू किधर गया ? बालक स्कूल से नहीं ...।

[दोनों धीरे-धीरे पिये जाते हैं। बार-बार थोड़ी-थोड़ी मदिरा उलटते रहते है। दोनो के नयन रतनारे हो चलते है। माथे पर पसीने की बूँदें भी झलकने लगती है]

सहजो—सेठ ने भेजा होगा। बाज़ार गेला होगा।

लेखा [परेशानी के स्वर मे]—हे भगवान् कौन उठा ले गया ! कौन भूत परेत घर में आया था ?

[चट्टियो के संचरण का शब्द ।]

मोती [अपनी सीट पर खडे हो भीतर को मुंह करके]—मैंने का, क्यों आसमान सिर पर उठाये लेती हो ? [परमजी के प्रति] यानी एक घड़ी भी घर में बैठना दूभर है । ऐसी भी क्या औरत ।

लेखा [परदे के पास आकर]—दिन-दहाड़े यह काड हो गया । ऊपर से मुझे कहते हैं, आसमान सिर पर··· · [पर्दा उठा कर झाकते हुए, सरोष वाणी में] आखिर कोई भूत-बलाय [परमजी को देख कर झिझकती है] तो नहीं······ ।

परमजी [उठ कर प्रणाम करते हुए]—क्या हुआ भाभी जी ?

[मोती बैठ जाता है]

लेखा [गम्भीर शान्त और दु खी मुद्रा से]—यों ही कोई चीज़ इधर-उधर हो गई । सब से पूछ देखा ।

मोती [दोषारोपण के स्वर में]—तीन-तीन नौकर हैं । न कुछ काम, न धंधा । अपनी चीज़े भी तुम से नहीं संभलती । यह भी मेरा अपराध ?

लेखा [तीखे स्वर में]—आपका अपराध नहीं, मेरा ही दुर्भाग्य । सुबह सब-कुछ संभाल कर रखा था । सन्दूक का ताला बन्द—इस पर भी उसमें से चीज़ गायब ! क्या पता, सन्दूक ही खा गया हो उसे, कोई बड़ी बात तो नहीं ।

मोती [गर्म हो कर सरोष नयनो से]—देखा, क्या कैंची की तरह ज़बान चलाती है । कोई सिलसिला है इसकी बातचीत का !

परमजी—आप व्यर्थ में क्यों मूड बिगाड़ते हैं । [लेखा से] लेकिन, भाभी जी अच्छी तरह तलाश भी किया घर में ?

लेखा—घर का कोना-कोना छान मारा और कही फेक तो दिया नही था पिटारी मे रखा था, पिटारी सन्दूक मे बन्द थी। वह तो किसी ने सन्दूक का ताला खोल कर हाथ साफ कर दिया। १०–५ रुपये की बात हो, तो आदमी जाने भी दे। सैकड़ों रुपये ।

परमजी [सान्त्वना और सहानुभूति के स्वर मे]—भाभी जी, ज़रा फिर तलाश करे। जायगा कहां घर से। कई बार ठीक याद नही रहती। मेरा मन कहता है, नग है घर मे ही।

लेखा [भीतर की ओर जाते हुए]—फिर देख लेती हू। [परम बैठ जाता] ईश्वर करे सन्दूक मे ही [प्रस्थान] हो।

मोती—सारा मज़ा मिट्टी कर गई। लो, इसे तो खत्म करो। [गिलास उठा कर घूट भरता है।] यानी जब-तब तो दिन आता है मिल बैठने का।

परमजी [गिलास उठा कर घूंट भरते हुए]—फिर भी देखना तो चाहिए, आखिर घर मे से ले कौन गया? चीज़ भी साधारण मोल की नहीं।

मोती—इसकी आदत है, रोने-चीखने की। जहां भगवान् का नाम ले, मैंने किसी भले काम मे हाथ डाला, चार पैसे कमाने की योजना बनाई, इसने कुसुगती की। [पीता है]

परमजी—नहीं बड़े भाई, भाभी की आखों में आंसू थे। ५००–६०० रुपये का आभूषण।

मोती—बकवास करती है। इस तरह चोरियां होने लगें तो, एक दिन भी जीना मुहाल हो जाय।

परमजी—तो जांच-पड़ताल तो करनी चाहिए। काफी बड़ी रकम का मामला है। [घड़ी देख कर] उफ इतनी देर। [उठने लगता है] आज तो दो-चार सौदे कराने हैं।

मोती—अरे बैठो भी यार, हमेशा माया बटोरने मे लगे रहते हो।

परमजी [खड़ा हो जाता है]—ना-ना, बहुत देर हो गई। खैर, चल रहे हो न कल ? ज़रूर चलना।

मोती [खडा होकर विदा देते हुए]—ऐसी दशा मे भला घर से निकला जा सकता है ? जहां कहीं जाकर जी बहलाने का प्रोग्राम बनाया, इसने कांड रचा ? बड़ी चाण्डाल औरत है।

परमजी [प्रस्थान करते हुए]—नहीं-नहीं, ज़रूर चलना है। घोष दादा से [प्रस्थान] कह दूंगा।

[धीरे से प्रवेश कर बिन्नू पीछे खडा हो जाता है]

मोती [बाहर की ओर देखते हुए]—हं-हं-हं-हं अच्छा, अच्छा [घूम कर बिन्नू को देखते हुए] आ गया तू ? ले आया ?

बिन्नू—शाम को आकर ले जाने को कहा है।

लेखा [क्षिप्रता से प्रवेश कर, दुःखी सी वाणी मे]—कही हो, तब तो मिले। सारा घर छान मारा। हर एक कपड़ा तक झाड़ झटक कर देख लिया।

मोती [बिन्नू से]—चल कर काम-धाम कर भीतर। [लेखा से] लेकिन जाता कहां ? मुझे तो विश्वास नहीं होता।

लेखा—मैं क्या जानूं। पहले भी पोंहची अलोप हो गई थी, आज तक उनका पता नहीं चला। [रुंआसी वाणी में] सारी चीज़ों में इसी तरह आग लग गई। यही एक निशानी बाप के घर की बची थी। मोहल्ले में कहीं आने-जाने लायक नहीं।

मोती—तुझे अपना होश तो है नहीं, ऊपर से टुसक-टुसक करती है। मैं कोई तेरे घर का पहरा देता हूं। घर नहीं संभलता। याद कुछ

रहता नही। डाल दिया होगा कहीं कूड़े कर्कट मे। आई मुझ पर जैसे······।

लेखा—मैं कोई अंधी तो नहीं कि सोने का नैकलैस कूड़े मे डाल देती। तीन-तीन तालो मे बन्द चीज भी उड़ जाती है। स्नान-घर में गई हूं, इतने मे दिन-दहाड़े डाका पड़ गया।

मोती [बिगड़ कर]—तो मै खा गया क्या ?

लेखा [सिसकते हुए]—तुम काहे को खा जाते, मैं ही खा गई। अपराध तो सब मेरा है। जब भाग्य ही फूटा है, तब चाहे सात तालों में भी चीज़ रखो।

मोती—रोने से आ जायेगी क्या नैकलैस ? नौकर चाकर से भी पूछा-गछा कि मेरा सिर खाने आ गई यहां ?

लेखा—बाई से पूछ देखा, वह तो कमरे मे घुसी तक नहीं। बिन्नू अभी तक इधर ही काम मे लगा है।

मोती—पम्मी-बिल्लू कहीं भूल आये हों खेल-खेल मे तब ?

लेखा—वे दोनों तो अभी स्कूल से नहीं आये। [खीझ भरे स्वर में] मैं कितनी बार कह चुकी, वह पिटारी मे रखा था। पिटारी सन्दूक में बन्द थी—सन्दूक में बन्द थी।

मोती—तब तो किसी नौकर का ही कर्म है यह। अभी सब पर कोड़ा फेरता हूँ। [पुकारता है] बिन्नू ! [घंटी बजाता है] ओ बिन्नू के बच्चे ! [लेखा से] बाई चली गई क्या ?

लेखा—नहीं।

मोती—बुलाओ उसे भी। [पुकारता है] बाई—ओ बाई ! सहजो !

लेखा [पर्दे के पास आ कर भीतर मुँह करके]—बाई !

सहजो [नेपथ्य में]—आली-आली साहेब।

लेखा—बिन्नू , बाबू जी बुलाते हैं ।

मोती—अभी पता चला जाता है । बिल्कुल लूट मचा रखी है । जैसे हराम का माल हो । ५०० का नैकलैस । [बिन्नू का प्रवेश] क्यों बे कहां है, वह सोने का हार ?

बिन्नू [आश्चर्य से]—कौन सा ?

मोती—वही जो पिटारी में रखा था और पिटारी सन्दूक मे बन्द थी । [डाट कर] पता नहीं चला, तो तुम्हारी खैर नहीं ।

बिन्नू—मुझे क्या पता । जहा रखा था, वहीं होगा ।

[सहजो का प्रवेश]

लेखा—वहां नहीं है । कहीं भी नहीं है । किसी ने चुरा लिया ।

सहजो [कानो पर हाथ रख कर]—नारयणा ! पाडुरंगा—हाय देवा । चोरी गेला हार काय ! हाय देवा··· पांडु ·····।

मोती [डराते हुए]—क्या पांडुरंगा-पांडुरंगा करती है, तेरा भी हाथ है इसमे । बता कहां है ? कहां बेचा, कहां रखा ? मारते-मारते खाल उधेड़ दूंगा ।

सहजो—अमारा लोग कसम खाता है, जो हमने देखला हो । नारायणा ! नारायणा ! [कानों पर हाथ रख कर] राम-राम ! हम चोरी करेंगा ? भूखा मरेंगा, तो भी मालिक की चोरी नहीं करेंगा ।

मोती [नम्रता से फुसलाते हुए]—देखो, बता दो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा । हम कुछ नहीं कहेंगे । दोनों को माफ कर देंगे । बता दे बिन्नू, किस सुनार या बनिये को बेचा है ।

बिन्नू—साब हमने तो देखा तक नहीं । हम तो कमरे में गया भी नहीं ।

लेखा—और वह सन्दूक मे बन्द था । चाबियां भी मेरे पास··· ।

मोती—चुप रहो । अभी पता चला जाता है । [खड़े होकर, धमकाते हुए] तुम लोग राज़ी से नही बतलाओगे ? [कोने से छड़ी उठाता है]

सहजो [गिड़गिड़ा कर]—मालिक, भगवान् की सौगन्ध ! पांडुरंगा जानता आहे··· ।

मोती [जमीन पर पैर पटक कर]—मारे कोड़ों के कमर की चमड़ी उतार दूँगा । ओ बिन्नू के बच्चे, अब भी कह दे कि तूने लिया है । वरना तेरी आज खैर नहीं ।

बिन्नू [अडिग भाव से]—हम मेहनत करके खाने वाला मानुस है साब । लाख रुपये की चीज़ भी पड़ी रहे, हमारे लिए मिट्टी है । क्या बोलता है, क्या गरीब का ईमान नहीं होता ?

मोती [व्यंग्य से मुँह बना कर]—अबे वाह बे महात्मा के बच्चे ! क्या शाह बनता है । [फिर डाट कर] अभी सारी हेकड़ी निकल जायगी । [तीव्र स्वर में] अबे, चक्की पीसते-पीसते मर जायगा । [कमरे में चक्कर लगा कर]—अभी पुलीस बुलाता हूँ । तुम लोग पक्के चोर हो ।

सहजो—सेठ हम मर जायेगा । हम गरीब मानुस है । [गिड़गिड़ा कर] पांडुरंगा जानता है, आम्ही कभी देखला तक नहीं । इतने दिन से तुम्हारा लोगों का काम करके　 ।

मोती—क्यों बे बिन्नूआ के बच्चे, तू राजी से नहीं बतायगा । साले, अभी फोन करके पुलीस के हवाले । [पैर पटक कर] अबे नहीं तो अब भी मान जा··· ।

बिन्नू—जब हमने नहीं लिया तो कैसे बोल दें । [अकड़ कर] पुलिस क्या करेगा, पुलिस क्या हमारा जान ले लेगा, जब हम अपराधी नहीं ।
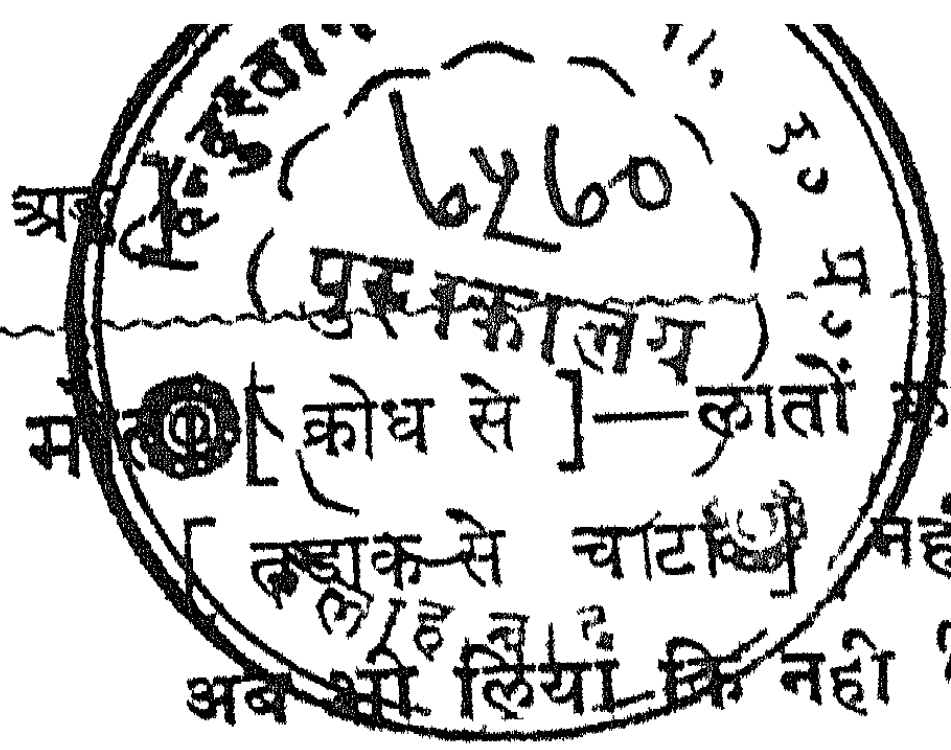
मोती [क्रोध से]—लातों का भूत बातों से नही मानता। नही लिया ? [तड़ाक से चाटा] नही लिया। [तडाक से लात मारता है] अब भी लिया कि नही ? [बाये हाथ से बेंत मारता है] बोल, अब भी कह दे।

बिन्नू [दृढतापूर्वक]—नहीं लिया—नहीं लिया। मार भी डालो, तो भी यही कहूँगा। हम पर झूठा अलजाम लगाता है साब।

मोती [झपटते हुए]—आज तेरी मौत आ गई है [मारने दौड़ता है। बिन्नू हाथों पर उसका हाथ रोकता है। लेखा बीच में पड़ कर मोती को अलग करती है] साला, जवाब देता है।

लेखा—मारने से थोड़े ही मान जायगा।

मोती—तूने ही तो इनको सिर पर चढ़ा रखा है। वरना नौकरों की इतनी मजाल जो ··[लाल-लाल आखें करके सब की ओर देखना] यानी रोज ही कोई न कोई टण्टा खड़ा करते रहते हैं। नमकहराम ! पाजी ! बेईमान।

बिन्नू—[तनिक दूर खड़े होकर] हम कोई चोर हैं। लिया नहीं तो डराने-धमकाने से कह दे। इतने दिन नौकरी करते हो गये। सुबह से शाम तक मरते हैं, तब भी···। तनखा देता नहीं, ऊपर से चोरी लगाता है। यही तुम लोगों का न्याय है ?

मोती [क्षिप्रता से उस पर झपटते हुए]—जीभ चलाये ही जायगा [लात-घूंसे मारना] चल निकल यहां से, साला चोर का बच्चा। कभी भी यहां पैर रखा तो तेरी खैर नहीं [धकेलते हुए] निकल बाहर।

लेखा—क्यों हत्या लेते हो ? नौकर जवाब दे बैठे तो क्या बात रह जाय ?

मोती—जवाब दे बैठे, तो जबान खींच लूँ। अभी इसे पुलिस के हवाले करूंगा। टेलीफोन करता हूँ। [बिन्नू फिर स्थिर नयनो से देखता है] अबे जा चला जा, खैर चाहे तो।

बिन्नू [थोडी दूर पर खड़े-खड़े]—मैं यहां मरने को तो नहीं आया। अभी चला जाता हूं। निकालिये मेरी तीन महीने की तनख्वा। पैसा दिया नही जाता, पुलिस की धमकी देता है।

मोती [छड़ी उठाकर उसकी ओर चलते हुए]—तो तनखा ही लेकर जायेगे रायसाब, अभी दूं तनखा ? मौत तो नहीं मंडरा रही सिर पर ?

लेखा [बीच मे रोक कर]—क्यों मुंह लगते हो नौकर के। [बिन्नू से] जा, कल-परसों ले जाना। क्यों मार खाता है ? [मोती की आख बचा कर संकेत करके] टल भी यहां से। [मोती से] चलिये भी अपने-आप चला जायगा।

[बिन्नू का बाहर की ओर, लेखा तथा मोती का भीतर की ओर प्रस्थान—यवनिका पतन]

—०:—

दूसरा अङ्क

[स्थान---उसी मकान के पिछली ओर ग्राउण्ड-फ्लोर के सामने १५×२० गज़ विस्तार वाला चौकोर चिकने पत्थरों का फर्श, जिनके किनारे-किनारे एक गज़ चौडी क्यारी। क्यारी में विभिन्न प्रकार के पौधे लगे है। वसन्त यौवन पर होने के कारण अनेक पौधो पर खिले-अधखिले फूल-कलिया और डोडे लदे है। क्यारी के किनारे-किनारे दो गज़ ऊची पत्थर वाली दीवार, जो इस निकास-स्थान की सीमा बनाती है। ग्राउण्ड फ्लोर का एक बडा कमरा फर्श पर खुलता है, जिसमें एक द्वार और उसके दोनो ओर दो खिडकिया है। द्वार आधा खुला है, जिस पर हरी-पीली चिक लटक रही है। दोनों खिडकिया पूरी तरह बाहर की ओर खुली है, जिन पर जालीदार नीले परदे लटक रहे है। कमरे के भीतर की कोई वस्तु नज़र नही आ रही।

पिछले पहर धूप इधर नही रहती। इसलिए यह स्थान तीन बजे के पश्चात बहुधा उठने-बैठने और शाम की चाय पीने के काम आता है। महिला-मण्डल भी यहा जमता है और पुरुष-समाज भी।

समय---उसी दिन, तीसरे पहर के चार-साढे चार बजे।

वातावरण---अत्यन्त मोहक। इस ओर पूर्ण रूप से छाया बिछी है। समीर में गर्मी नहीं, वह अत्यन्त सुहावनी लगती है। छायादार स्थान में हल्की-हल्की सिहरन भी कभी-कभी होती है। दिन की धूप से कुम्हलाये फूल-पौधे संभलने लगे है। कुछ फूल भी खिल रहे है और बहुत ही विरल भीनी गंध भी उडने लगी है।

कमरे के सामने तीन-चार गज की दूरी पर, कमरे की ओर कमर किये एक-दो दफ्तरी कुर्सिया रखी हैं। पर्दा उठते ही नीली-गुलाबी जगमग

वाली मदरासी साडी, हरी चोली और पैरो मे चप्पल पहने, जूडा किये, लेखा प्रवेश करती है। क्षण-भर फूलो की ओर देख, दूर कोने मे रखा हज़ारा उठा कर, कमरे की आड मे लगे नल से पानी भर कर लाती है और फूलो मे पानी देने लगती है। सहजो भीतर से एक डाइनिग कुर्सी लाकर कुर्सियो के पास रखती है और क्षण-भर लेखा की ओर नई आज्ञा के भाव से देखती है।]

लेखा [पानी देना बन्द कर]—**और भी दोनो कुर्सियां ला रख।**

[सहजो का प्रस्थान। लेखा का पानी देने लगना। सहजो का कुर्सी लिए लडखडाते हुये प्रवेश। लेखा पानी देना बन्द कर, शीघ्रता से उसके पास आती है और स्वय एक कुर्सी लेकर रखती है।]

लेखा—**और गद्दियां भी लाकर बिछा दे। जल्दी कर, सेठ आता होगा।**
[आकर फिर पानी देने लगती है]

सहजो—**कुर्ची ठीक आहे ? काय और कुर्ची रखाना मांगता है बाई ?**

लेखा—**पांच कुर्सियां हो गई। एक-आध और रख देना।**

[पानी समाप्त हो जाता है। पानी देना बन्द कर, लेखा हजारा एक ओर कमरे की आड़ में रख देती है। सहजो सिर पर कुर्सी और बगल मे दो गद्दिया लिये आकर कुर्सी बिछा गद्दिया रखती है। तब तक लेखा भी आ जाती है। वह भी कुर्सिया ठीक करने लगती है।]

सहजो [भीतर जाते हुए]—**मेज़ तो बहुत भारी आहे। हमेरा लोग उठा सकता नाही।**

लेखा—**चल मैं भी ······।**

[दोनो का प्रस्थान। बिन्नू का प्रवेश। आधा मिनट इधर-उधर देखता है। सहजो और लेखा एक गोल बडी-सी मेज लाते हुए

दीखती है। मेज ज़रा भारी है, इसलिये दोनो धीरे-धीरे उसे कभी-कभी धरती पर टिका-टिका कर आगे बढती है।]

बिन्नू [लेखा की ओर क्षिप्रता से झपटते हुए]—मैं-मैं आया। [पास आकर मेज लेते हुए] नमस्कार बाई।

लेखा [उसे हटाते हुए]—ना·· ना, मैं निकाल लूँगी।

बिन्नू—मेरे होते, यह न होगा—मुझे पाप लगेगा। [मेज पकड लेता है] तू भी हट जा सहजो।

[दोनो मेज़ छोड देती है। बिन्नू मेज उठा कर निश्चित स्थान पर रख देता है। सहजो भीतर जाकर एक कपडा ले आती है। लेखा बिन्नू के साथ-साथ चलती है। बिन्नू उससे कपडा लेकर बिछाता है।]

लेखा [सहजो से]—तू जाकर बरतन-भाण्डे साफ कर। मैं अभी आई। कान्दा-आलू भी काट रखना।

[सहजो का प्रस्थान]

बिन्नू [कुर्सिया ठीक करते हुए]—साब दफ्तर से कब आयेगा ?

लेखा—आज-कल तो जल्दी आ जाते हैं। आते ही होंगे। क्यों ?

बिन्नू—सोचा, साब से हिसाब कर आऊँ, फिर किधर भी नौकरी तालाश करेगा।

लेखा—अभी एक-दो दिन ठहर जा। आज वैसे भी वे क्रोध में भरे हैं। मेरा भी जी ठीक नही। ६००-७०० रुपये का नग चोरी हो गया। रोज़-रोज़ तो बनते नही आभूषण।

बिन्नू [अनुताप से सानुनय]—बाई, हमारे ऊपर तुम्हारा शुबा हो, तो हमारी चमड़ी उधड़वा लो, जो हम कुछ भी बोलें। हम कसम

खाकर कहता है, हमने देखा तक नही। तुम हमारे पर सन्देह करेगी, तो सारा जीवन हम दु ख मे जलता रहेगा।

लेखा [उसका मन रखते हुए]--तू क्यों दु खी होता है। तूने नही चुराया, यह मुझे पक्का भरोसा है। इस घर मे इस प्रकार चीज़ें गायब होती ही रहती है। तू विश्वास कर तुझ पर मेरा सन्देह नही।

[हवा से मेज का कपडा उडता है, लेखा ठीक करती है।]

बिन्नू--हमे जो इनाम यहां नौकरी करने का मिला, हम कभी नहीं भूल सकता। आज तक कही चोरी का अपराध नही लगाया गया। सारा सेठ लोग हमारी ईमानदारी और काम का तारीफ करता है। [कमर दिखाकर] अभी तक दर्द कर रही है। बाई हम सह गया हम सच कहता है, दूसरी जगह होती, तो हम कभी नहीं इतनी मार खाता।

लेखा [हाथ से सहलाते हुए]—जब किसी को पीटते हैं, तो बड़ी बेदर्दी से। बच्चों तक की हड्डी टूटे या पसली, इन्हे परवा नही। [कुर्ता ढकते हुए] तू भी तो उनका सामना करने लगा। [समझाते हुए] बड़ों को जवाब नही दिया करते। किसी की दो बाते सह लेना ही अच्छा। तू तो बड़ा अच्छा लड़का है बिन्नू !

बिन्नू—मैंने कभी आपके सामने मुंह खोला आज तक ?—जब मैंने चीज़ की सूरत तक नहीं देखी, तो डराने से कैसे मान लूं कि मैंने चुराई ? चाहे कोई टुकड़े-टुकड़े कर दे काट कर, झूठ बात तो मै कभी ·। हम मरने से नही डरता, बाई !

लेखा—वह क्रोध मे थे। क्रोध में आदमी को कुछ नहीं सूझता। ऐसे वक्त चुप रहना ही ठीक होता है। खैर, दो-चार दिन मे तेरा हिसाब कर दूंगी। घबरा मत, मुझ से ले जाना अपना वेतन।

बिन्नू—पैसे, मार मे तो नही। अपने घर मे हैं। मैं तो चला आया कि बाई के दर्शन…और विशेषकर इसलिये आया कि सन्देह दूर कर आऊं। तुम हमारे पर शक नहीं करता, अब हमारा दिल को शान्ति मिली।

लेखा—तुझ पर मेरा सन्देह नहीं। तूने नहीं चुराया, मैं जानती हू। अच्छा अब तू जा, वे आते होगे। कभी तुझे देखकर …।

पम्मी [नेपथ्य मे]—मम्मी,… मम्मी जी, [भीतर से दौड़ते हुए प्रवेश] आण्टी जी · मम्मी जी, आण्टी जी आई है। [बिन्नू को देखकर] अरे बिल्लू · बिन्नू आया बिन्नू आ गया।

बिन्नू [बाहे फैला कर गाने के स्वर मे]—पम्मी रानी।

लेखा—कौन सी आण्टी जी ?

पम्मी [बिन्नू से लिपटते हुए]—लीला आन्टी !

[लेखा भीतर की ओर जाने के लिए मुड़ती है। भीतर से बिल्लू दौड़ते हुए प्रवेश करता है। लेखा उसे गुदगुदाने को पकड़ती है। वह 'अ-अं' कह बचकर 'बिन्नू-बिन्नू' कहता हुआ बिन्नू की ओर भागता है और आते ही बिन्नू से लिपट जाता है। दोनो 'झोटे-झोटे' कह कर उसे झकझोरते है।

बिन्नू [दर्द का अभिनय करते हुए]—हाय ! आह ! आज नहीं दोनों हाथ…आह।

दोनों [उसे झकझोरते हुए]—नहीं-नही। झोटे-झोटे ! झूलेंगे-झूलेंगे।

बिन्नू—देखो तो, हाथ की हड्डी टूट गई। आह ! [मुसकरा कर दर्द का अभिनय करता है।]

बिल्लू—नइ-नइ। अम तो नहीं—झूलेंगे-झूलेंगे।

पम्मी—अरे बिल्लू यह झूठ बोलता है। हंसता है। हम तो …

बिन्नू—अच्छा, अच्छा ! तुम मानोगे कहां ।

[दोनो हाथ फैलाता है । पम्मी और बिल्लू अपने दोनो हाथो की उंगलिया फँसा कर अपने हाथ उसकी कलाइयो के चारो ओर कसते है । पहले धीरे-धीरे बिन्नू के घूमने के साथ वे भी घूमते है । फिर चक्कर तेज हो जाता है और बिन्नू अपनी जगह पर तेजी से घूमता है । दोनो उसके हाथो मे लटकते हुए चक्कर खाते है । हँसते-किलकारी मारते कभी कभी हल्के भय से 'ई–ई' करते है । उनकी 'ई–ई' पर बिन्नू खिलखिलाता है । तेज चक्कर काटता है । दो मिनिट चक्कर के बाद वह ठहर कर गिरने का अभिनय करते हुए बैठ जाता है । पम्मी और बिल्लू भी लडखडा कर बैठ जाते है और 'आहा जी–आहा जी' करते है । दोनो फिर उठते है और बिन्नू को उठने के लिए उकसाते है ।]

बिन्नू [उठ कर]—**आह–आह । बिन्नू भाग चला जी · बिन्नू भाग चला जी** [वही चक्कर मे दौडने लगता है । दोनो उसे पकडने के लिए दौडते है ।]

बिल्लू [पीछे दौड्ते हुए]—**पम्मी पकलना इछे । बाग ना जाये । अले,** [तेज भागते हुए] **कॉ जायेगा । पकलो–पकलो ।**

पम्मी—तू उधर से पकड़ । मैं इधर से घेरती हू । [विरुद्ध दिशा मे दौडती है] **पकड़ो-पकड़ो । चोर पकड़ो ।**

बिन्नू [दौडते हुए]—**अच्छा जी । यह चालाकी, पम्मी जी । पकल के तो दिखाओ बिल्लू जी·· ।**

[बिल्लू ज़रा तेज़ी से बाहर की ओर भागता है । दोनो हँसते हुए उसे पकडने को दौडते है । बिन्नू का प्रस्थान । दोनो वापस आते है ।]

दोनों [तालिया बजा कर]—हुर्रा ! हुर्रा ! हार कल भाग गया ! अरे पकड़ो……।

बिन्नू [नेपथ्य से]—टाटा !

दोनों—टाटा !

[दोनो आकर फूलो पर उड़ती हुई तितलियो को पकड़ने का प्रयत्न करने लगते है। लेखा और लीला का वार्तालाप भीतर से सुना जाता है। लगता है, दोनो बाहर की ओर आना चाहती है, इस लिए शब्द निकट आते से लगते है।]

लेखा—बाई, जल्दी सिगडी जला ले। दहक जाय, तो तुरन्त चाय के लिए पानी।

लीला—चाय भी आज वही होगी। बाई, रहने दे ।

लेखा—वह तो देखा जायगा। सेठ आने वाले हैं दफ्तर से। आते ही चाय की पुकार मचेगी।

लीला—तुम्हारी चाय वही होगी—और शाम का भोजन भी। कहे देती हूँ।

लेखा [हँस कर टालते हुए]—हं-हं-हं-हं मेरी चाय की भली चलाई।

लीला [अनुरोधपूर्ण स्वर में]—यह नही हो सकता जीजी। हर बार बहाना।

[दोनो द्वार पार करती हुई आगे बढती है। लेखा पहले ही वेश मे है। लीला वायल की पीली साड़ी, सफेद चमकते गोटे वाली और चप्पल पहने, दो वेणी किये, बगल में पर्स लटकाये हुये है।]

लेखा—बहाना भी करूंगी तो तुम से ? पगली कही की। मैं भला इंकार करती हूँ कभी। लेकिन · ···।

लीला [साग्रह]—मैं नहीं। लेकिन-लेकिन कुछ नही।

लेखा—मै अभी तुझे ' [पम्मी और बिल्लू को पुकारते हुए] अरे, वहां क्या करने लगे ? [ममतामय उल्लास और मातृत्व के गौरव से चमकते हुए, लीला से] हे भगवान् ! बड़े शरारती बालक हैं। अरी ओ पमिया !—बिल्लू !

लीला [तालीया बजा कर]—पौ··· मी ! बी ई ई लू।

[दोनो उधर देखते है। लेखा और लीला धीरे-धीरे दौड़ कर मेज़ के पास आ जाती है]

लेखा—अरे क्या कर रहे हो ? देखो, आण्टी जी क्या लाई है।

दोनों—हम तो तितली पकल रहे हैं।

लीला [तालिया बजा कर]—वे आये. वे आये। कौन पहले आवे। [गाते हुए] कौन पहले आये, वही मिठाई खाये।

['पहले मै' 'पहले मैं' कहते हुए दोनो भाग कर लीला से चिपट जाते है। वह उनको उठाकर चूमती और हृदय से लगा लेती है]

लीला [बिल्लू से]—किसका बेटा है बोल ?

[बिल्लू लीला की ओर देखता है फिर प्रश्नवाचक भाव से लेखा को देखता है। लेखा मुसका कर अपनी ओर संकेत करती है]

लेखा—बता दे ना, किसका बेटा है ?

बिल्लू [मुसका कर]—आन्ती का। [लीला से चिपट जाता है]

लेखा [उल्लास, वात्सल्य, मुसकान भरी झेप से, खिजाते हुए]—आन्ती का ?

लीला—शाबाश। [खिलखिलाकर हँसते हुए कलेजे से लगा लेती है] किसका बेटा है ? फिर कहना। [चूमती है]

बिल्लू—मम्मी का।

[लीला और लेखा दोनो खिलखिला कर हँसती है]

लेखा [प्यार से]—चालाक [गाल पर हल्की-सी चपत लगाती है, वह झट बचा लेता है ।] बड़ा शैतान है !

[लीला पम्मी को उठाकर प्यार से चूमती है । दोनो हाथो से दोनो के गाल दबाती हुई दूर से उन्हे चूमती है । बगल मे लटकता हुआ बटुआ खोलकर उसमे से छोटी-छोटी दो पुड़िया निकाल कर दोनो को एक-एक देती है]

लेखा—जाओ, अन्दर खेलो । और अपनी-अपनी मिठाई खाना—कभी लड़ने लगो ।

[दोनो पुड़िया खोल एक-दो टुकड़े निकाल कर खाते, पुड़िया मोसते, उछलते-कूदते प्रसन्न होते, हुए भीतर चले जाते है]

लीला [आगे बढते हुए कुर्सी के पास आकर]—जीजी, तुम्हारा नाच होगा । मैंने सभी सहेलियो को बुला भेजा है ।

लेखा [कुर्सी संभालते हुए]—बैठ जाओ । अब क्या मै नाचने लायक रह गई ? पैर ही नही उठते । शरीर भी कितना बेतुका—भारी । और आजकल तो नौकर भी नहीं । और तुम तो जानती ही हो, उनका स्वभाव, एक सैकिण्ड मे कुछ का कुछ · । जब रुद्र रूप धारण करते हैं तो··· ।

लीला—दो-तीन घण्टे की तो बात ही है । मैं भाई साहब स [ताई का भीतर की ओर से प्रवेश] आज्ञा ले लूंगी । कोई रोज़-रोज़ तो ··· ·· ।

[लेखा और लीला उठकर अभिवादन करती है । ताई मुसकरा, वरद-हस्त उठाकर आशीर्वाद देती है । तीनो कुर्सी खींच-खींच कर बैठ जाती है ।]

ताई--मैंने सुना तो, नीचे का दम नीचे और ऊपर का दम ऊपर । मुझे तो बड़ा दुःख हुआ । बड़े अचरज की बात है । कुछ पता चला बेटी ?

लेखा [टालने के प्रयत्न मे]—ताई जी, अचरज और दुःख की बात तो है ही, पर अपने हाथ मे तो कुछ है नहीं । भगवान् जो करता है, अच्छा करता है ।

लीला [अनजान चकित प्रश्नवाचक भाव से]--क्या हुआ ?

लेखा--आख फूटी पीर गई ।

[लीला साश्चर्य सप्रश्न भाव से कभी ताई को देखती है, कभी लेखा को, समझ कुछ भी नही पाती ।]

ताई--ना-ना, बहू, इस तरह होने लगे, तो जीना कठिन हो जाय । कुछ खोज-खबर भी की ?

लेखा [उदासीन भाव से]—खोज-खबर से बनता क्या है ! नौकरो-चाकरों से पूछ-ताछ कर ली, डराया-धमकाया, किसी ने भी कुछ बताकर न दिया ।

लीला [लेखा को झकझोर कर]--बताती क्यों नही जीजी ? मुझे पराया समझती है, जो मुझ से छिपा रही है ? ताई जी क्या हो गया ?

ताई [साश्चर्य]--तुझे मालूम नही क्या ? [लीला इनकार का सिर हिलाती है] सुनते ही मेरा तो कलेजा धक से हो गया । ऊंट की चोरी और झुक झुक । दिन-दहाड़े डाका । सात-आठ महीने पहले भी एक नग · ।

लेखा [विवशता और दुःख का निश्वास लेकर]—माथे की लकीर मेटी नहीं जाती--होनी होकर रहती है ताई जी ।

लीला—क्या चोरी हो गयी? [लेखा और ताई स्वीकार का सिर हिलाती है] कब? मुझे तो कुछ बताया नहीं। क्या कोई जेवर · ··।

लेखा—हा। नैकलैस थी—पिता जी की अंतिम निशानी। आज-कल ७००-८०० मे बनेगी।

ताई—और क्या, सोने का भाव क्या पहले बख्तों का रह गया? एक बार हाथ से गई चीज, फिर कहां बन पाती है। खरच ही पूरे ना पड़ते आज-कल तो।

लीला—यह तो बहुत बड़ी चोट लगी जीजी।

लेखा [व्यथा-भरी मुसकान और जीवन के प्रति उदासीनता दिखाते हुए]—कोई नयी चोट तो है नहीं। चोट खा-खाकर हृदय चीखना भी भूल जाता है। और जिस पीड़ा का इलाज नहीं, उसमें चीत्कार भी मनुष्य क्यो करे। [व्यंग्य की हंसी से] हं-हं-हं-हं—और यह तो माया है—माया से जितनी शीघ्र मुक्ति मिले, उतना ही कल्याण। हमारा चोर हमे मगल-पथ पर अग्रसर कर रहा है। क्यो है न लीला?

लीला—तुम्हारे इस वैराग्य मे जीवन का भयकर व्यंग्य बोल रहा है जीजी। तुम्हारी मुसकान मे मुझे तो वर्षों की दबी आत्मवेदना छटपटाती दीखती है। जीवन की इतनी उपेक्षा क्यो? माया-ममता ही तो जीवन की हरियाली के लिए स्निग्ध सरस सुधा-वर्षण है। ममता की स्वर्ण डोर में समस्त मानवता बंधी है—इसके बिना कौन किसका? अलंकार श्रृंगार भी तो सामाजिक व्यवहार है। समाज में रह कर इनका तिरस्कार कैसे किया जा सकता है। अपनी सुख-सम्पति के प्रति सजग रहना ही ठीक है, न कि उदासीन होकर जीवन को ऊसर बना लिया जाय।

ताई--यह लेखा का ही कलेजा है, जो इतना-कुछ खोकर भी आखो में आंसू नही। और कोई होती, तो क्या इस तरह हाथ-कान नंगे करके चुप बठी रहती ? पर बेटी, पूछ तलाश तो कर · मेरा तो विचार है · ।

लीला--क्या ? क्या ताई, कुछ अता-पता मिला है तुम्हे ?

लेखा [प्रश्नवाचक उदासीन भाव से]--क्या आपको किसी पर शक है चोरी का ?

ताई [विश्वास और आश्वासन के साथ]--शक की बात नही बेटी, मुझे तो बिल्कुल तेरा जैसा नैकलैस लगा--बिल्कुल वैसा ही। भगवान् जाने, कैसे वहा पहुँचा। चोरी की बात तो···।

लीला [साश्चर्य सोल्लास उछल कर]--किसके पास देखा ताई ? क्या सचमुच, जीजी का नैकलैस ? अभी चलो ··अभी मैं। [लेखा को उठाने की चेष्टा] उठ जीजी, अभी चलती हैं।

लेखा [उसे पकड कर बैठाते हुए]--बैठ भी, इतनी आतुरता किस लिए ? पूरी बात सुनी नही, उछलना-कूदना शुरू कर दिया [ताई से] आपको धोखा लगा होगा ताई जी। चोरी गई चीज भला, आस-पास कहा मिल सकती है।

ताई [निश्चयात्मकता से]—मुझे तो तू निरी बच्ची समझती है। इतनी उम्र हुई, कभी धोखा नही खाया किसी चीज़ के पहचानने में। लेखा, मुझे तो पूरी तरह तुम्हारा ही नैकलैस मालूम होता है।

लीला [लेखा से] ताई जी धोखा नही खा सकती। [ताई से] लेकिन देखा किस के पास, यह तो बताया नही।

ताई--बात अपने तक रहे बेटी, नहीं तो मुझे भी नामोशी आयेगी। पास-पड़ौस का मामला है।

लेखा—[आशा की भीनी मुसकान और चमक से]—हां, किसके पास देखा ?

ताई [कानाफूसी के ढंग में]—किसी से कहना मत। मगनलाल की घरवाली पहने थी। मै तो देखते ही पहचान गई। मैंने जो ध्यान से देखा तो ।

लीला—मगनलाल की घरवाली ? जीजी का नैकलैस ? भीषण रहस्य। आज सवेरे चोरी गया और दोपहर को मगनलाल की घरवाली के पास ?

लेखा [गम्भीर, शात विचार-मग्न मुद्रा में]—चोरी गया नैकलैस उस बेचारी के पास कहां से आया ? उसका अपना होगा। अनेक आभूषण बिल्कुल समान होते हैं। धोखा लग जाना असम्भव नहीं। उनके हाथ-पैर, नाक-कान तो होते नहीं, जो ठीक पहचान हो सके।

लीला—ताई क्या झूठ कहेगी ? बिना देखे क्यों कहती हो कि नैकलैस तुम्हारा नहीं। [धीरे से मुंह के पास मुंह ले जाकर] जानती नहीं जीजी, ये लाला लोग चोरी का माल सस्ते दामो मे खरीद लेते हैं। तभी तो इतना धन कमाते हैं।

लेखा—पर इसका क्या सबूत कि वह नैकलैस मेरा है ? बिना पक्का प्रमाण मिले किसी पर यह दोष नहीं लगाना चाहिए। तो भी मैं ठीक-ठीक पता लगवाऊंगी।

ताई—मैं जब अचानक उसके पास गई न, तो उसने झट नैकलैस छिपाने की चेष्टा की। मैंने जब उसे ध्यान से देखा, तो झट पहचान लिया। मेरी आंखों मे सन्देह की छाया देख, झट वह भीतर चली गई और उसे गले से निकाल आई। मैं भी तुरन्त इधर आई। मैंने सोचा, लेखा से कह तो आऊँ।

लीला—तब तो निश्चय ही जीजी का नैकलस · अब तो तनिक-सा भी प्रयत्न किया जाय, तो झट पता चल जाय। मैं भाई साब को कहूंगी। स्वयं भी देखूंगी जाकर ·· मैं चलती हूं जीजी। ताई जी, आओ चलें। झांक तो आवे इधर, शायद । और एक घण्टे मे मुझे अपने यहा गर्बा का प्रबध करना है।

ताई—चल, पर मेरे बारे मे सनगुमान भी न हो [लेखा से] बेटी, इस तरह आस छोड़ देने से काम नहीं चलता। तू भी ज़रा मालूम तो कर ·।

लेखा [दोनो के आगे-आगे भीतर की ओर जाते हुये]—मैं उनसे कहूंगी। खुद मुझे भी समझ मे नही आ रहा कि मगनलाल की औरत के पास [द्वार के पास पहुच अधखुला किवाड़ खोलते हुए] कैसे पहुंचा।

ताई—अचरज तो है ही ! [भीतर की ओर प्रस्थान]

लीला—और क्या ! [भीतर की ओर लीला और लेखा का प्रस्थान]

लेखा [नेपथ्य मे]—चाय तो·· बाई पानी रखा !

लीला—तुम तो उल्टी बात करने लगी। कहां तो मैं दावत देने आई थी। जीजी तुम्हारे बिना तो ··।

ताई—अब तो जाने दे बेटी।

लेखा—बाई, ज़रा मेज़-मूज़ तो ठीक कर आ-सेठ आता होगा। फटाफट कर काम।

[सहजो ऐश-ट्रे आदि लिए प्रवेश करती है। और कुर्सियो को अर्ध गोलाकार में संभालती है। मेज़ का कपड़ा ठीक बिछाती है और ऐश-ट्रे रखती है। बारीक किनारी की सफेद धोती, चप्पल, कमीज के ऊपर काला गुजराती कोट और काली किश्तीदार टोपी पहने,

हाथ मे कपडे का बण्डल और मिठाई का लिफाफा लिए मोतीलाल प्रवेश करता है।]

मोती [पास आते हुए]—**सहजो बाई !**

सहजो [मोती की ओर झपटते हुए]—**आली साब।**

[दौड कर उसके हाथ के बण्डल और लिफाफे लेकर पीछे-पीछे चलती है। मोती आकर कुर्सी सरका कर बैठ जाता है। सहजो सामान भीतर ले जाने लगती है।]

मोती [टागे मेज पर फैलाते हुए]—**बाई !**

सहजो [द्वार के पास सहमी-सी खडी होकर]—**काय सेठ ? क्या हुकुम आहे ?**

मोती [तीव्र स्वर में]—**इधर आ। भागती कहा है ? किसने कहा, तुझ से वहां ले जाने को ?**

सहजो [पास आते हुए]—**हम समझा, सामान भीतर रखना ...। बाई को देना नहीं मांगता काय साब ? आकर पास खड़ी हो जाती है।**

मोती [डॉटते हुए]—**रखो इधर और पम्मी, बिल्लू बाई को बोलो, साब बुलाता है। जल्दी बुलाओ।**

सहजो [जाते हुए भयभीत स्वर मे]—**अबी बोलता है।** [भीतर की ओर जाती है] **सेठ बाबू बुलाता है।**

मोती [चिल्ला कर]—**पम्मी, ओ पम्मिया ! अबे बिल्लू किधर छिप गया ? चल इधर।** [मेज़ पर हाथ मारता है] **बिल्लू—पम्मी !** [दोनो आते दिखाई देते है] **चलो जल्दी।** [दोनो सहमते से आगे बढ़ते है] **इधर चलो। आओ जल्दी। कहा थे तुम ?** [दोनो पास आ जाते है]

पम्मी [निरपराध रुआसी-सी मुद्रा बना कर]—पापा मैं बिल्कुल शरारत नही करती। [ज़रा हट कर खड़ी हो कर] चाए मम्मी से पूछ लो।

मोती [मिठाई के लिफाफे उठाते हुए]—अच्छा, अच्छा ! बिल्कुल शरारत नही करती। उतनी दूर किस लिए खड़ी है ? पास क्यों नही आती ? आ इधर खड़ी हो।

[सहमती-डरती-सी निकट आती है]

बिल्लू [पम्मी की आड मे खड़े हो कर दीनता और निर्दोषता प्रकट करते हुए]—बाबू जी, मै खूब पलता हूं—कबी बी ललाइ नइ कलता।

मोती [फटकार जैसे स्वर मे वात्सल्य-पूर्ण भाव से]—अच्छा, अच्छा ! तू तो बडा सुशील है ! शाबाश ! ले पम्मिया, चल बे बिल्लू तू भी [दोनो को लिफाफे थमाता है] अब कभी शरारत की तो· ····।

दोनों—क्या है पापा जी इन में ?

मोती—मिठाई तुम्हारे लिए। जाओ, खाओ। उधम मचाओ, ऐश करो, बेटा। भीतर जाओ।

दोनों [खुश होते, उछलते-कूदते भीतर की ओर भागते हुए] आहाजी मिठाई ! पम्मी को नई देंगे ! कूब खायेंगे।

मोती [चिल्ला कर]—पम्मी। [द्वार के पास पहुंच कर दोनो घबराते से ठहर कर पीछे की ओर देखते है] तुरन्त अपनी मम्मी को भेज। कहना, फौरन इधर आवे। यह बाई क्या मर गई ? कमबख्त ! कामचोर !

[पम्मी और बिल्लू का भीतर की ओर प्रस्थान। सहजो का प्रवेश]

सहजो [आगे बढ़ते हुए]—चाय मांगता है काय सेठ ? बाई बोलता है, तो मांगता है तो बनायेंगा।

मोती [फटकार कर]—चाय-वाय कुछ नहीं मांगता। बाई किधर है, बुला उसे जल्दी· · । तुझ से कहा था, उसे भेज। कहा तूने ?

सहजो—अबी भेजता है। हम बोलेगा, सेठ बुलाता है।

[भीतर को प्रस्थान]

मोती [बण्डल खोलते हुए]—लेखा, इधर आओ ! [साडी निकाल कर देखते हुए] पता नहीं, क्या काठ मार गया ?· · ·जवाब तक नहीं।

लेखा [प्रवेश करते ही]—आई जी।

[सहमे-सहमे पग रखती, आतंकित-आशंकित गम्भीर मुद्रा मे आगे बढती है]

मोती [चिल्लाकर]—मै यहा डेढ़ घण्टे से गला फाड़ रहा हू और श्रीमती जी कान मे तेल डाले बैठी हैं। चिल्लाते-चिल्लाते गला सूख गया। तू कर क्या रही है इतनी देर से ?

लेखा—चाय की तैयारी कर रही थी। क्या काम है ?

मोती [फटकार-भरे स्वर मे]—इधर आ ! यह देख।

लेखा [आगे बढ कर]—कहिए, क्या आज्ञा है मेरे लिए ?

मोती [साडी उसके हाथो पर पटक कर]—लो यह साड़ी। तुम्हारे लिए लाया हूं। [लेखा साडी संभाल कर उलटने-पलटने लगती है। ओठो में मुस्कान, आखो में स्नेह और वाणी मे कठोरता लिए हुए] है न पसन्द ? पहन कर दिखाओ, कैसी फबती है ?

लेखा [गम्भीर व्यंग्य-मुस्कान और आश्चर्य मे]—मेरे लिए साड़ी ?— अहोभाग्य ! [परमजी का प्रवेश] काहे को व्यर्थ इतना खर्चते हो मेरे लिए ?

[परमजी लेखा को संकेत मे प्रणाम करता है। लेखा संकेत से आशीर्वाद देती है।]

मोती [बिगड़ कर]—बस, जब कभी कुछ लाओ, रोनी सूरत बना लेती है। [नम्र स्वर में] अरे, जो खा-पहन लो, वही अपना है। नही तो, कौन क्या ले जाता है, अपने साथ ? एक वे भी औरते हैं, जो पति की मामूली-सी भेट को भी ·· देखा परमजी भाई ? इस की आदत ही ··।

परमजी [प्रशंसात्मक भाव से]—वाह भाभी जी, सच यह साड़ी तो भई, लाखो मे एक। मै तो देख कर आश्चर्य-चकित रह गया। ऐसी बढ़िया चीज़ इन दिनों मिल कैसे गई मोती भाई को ! भई, बड़े आदमी की बड़ी बाते। और भई यह तो सब भाभी जी के भाग्य का चमत्कार है, वरना टक्करे मारते फिरो जो ऐसी साड़ी के दर्शन भी मिल जायँ।

लेखा [साडी बगल मे दबाए, भीतर की ओर जाने की चेष्टा मे] अब मेरी पहनने-ओढ़ने की उम्र रह गई क्या ? और घर मे पहले क्या कम कपड़े हैं। वे ही जीवन-भर पहने जाओ।

मोती [रोष मे]—देखा, यनी हमेशा इसी तरह बुढ़ियो वाली बाते— हे भगवान्।

परमजी—भाभी जी, यह वैरागियो की-सी बाते मुझे पसन्द नही। भगवान् कसम, जो कभी ऐसी निराशा की बातें कही तो ·। अच्छा भाभी जी, आज यही साड़ी पहन कर· ।

लेखा—मैं जाती हूं। चाय भिजवाऊं ?

मोती—नहीं। [परमजी से] पियेगे ?

[लेखा साडी लिये धीमे-धीमे भीतर की ओर प्रस्थान करती है]

परमजी—अभी पीकर आया हूं—घोष के आने की खबर है कुछ ?

मोती—बुलाया तो है। कल होने वाली रेस के लिए आज ही तो तय करना है। मुकुटलाल का भी टेलीफोन आया था, वह भी आवेगा।

परमजी—[परिहास भाव से] तो इस बार बड़े-बड़े इरादे मालूम होते हैं। टिप किया किसी घोड़े को अभी तक?

मोती—अभी तो कुछ सोचा नहीं। दफ्तर के काम से सिर उठाने की फुर्सत नहीं। वह आ जायँ तो, सब इकट्ठे बैठ कर··· । वैसे चल रहे हो न ?

परमजी—देखिये क्या बनता है।

[सावन्त और मुकुटलाल का प्रवेश। सावन्त का रंग काला, आखे लाल, शरीर गठा हुआ, लम्बाई पाच फीट, पाच इंच। वेश-भूषा—काली, किश्तिया टोपी, सफेद कमीज़, धोती, चप्पल। मुकुटलाल का रंग गेहुँआ, लम्बाई पाच फीट, नौ इंच, आखे पतली खिची हुई। हंसने से दोनो पलके मिलती-सी दीखती है। आखो की नोक के पास पतली-पतली सरवटे पड़ जाती है। आयु, पैतालीस-पचास के बीच। कानो के आगे और गर्दन पर के बाल चिट्टे हो गये है। वेश-भूषा—पुलिस सार्जेण्ट की सी, गुलाबी बूट, खाकी निकर, खाकी बुशशर्ट, सिर पर सफेद टोप, जिस पर पीली पट्टी चढ़ी है। हाथ मे डेढ़ फीट का एक डण्डा और बगल में सूती डोरी में बंधा लटकता पिस्तौल। दोनो को पास आता देख कर मोतीलाल और परमजी भाई प्रसन्नता, स्वागत और आतुरता का अभिनय करते और 'आइये-आइये' करते हुए कुर्सिया छोड़ आगे बढ़ते है। सावंत और मुकुट 'हं-हं-हं-ह' करके फुर्ती से आगे बढ़ते है। मोतीलाल पहले मुकुटलाल से और परमजी पहले सावंत से, हाथ मिलाते है, फिर मोतीलाल सावंत से और परमजी भाई मुकुटलाल से। मुस्कराते, बनावटी 'ही-ही-हो-हो'

करते हुए, कुर्सिया खीच-खीच कर सब लोग अर्धगोलाकार मे बैठ जाते है।]

मोती—न जाने कितने दिनों बाद, तो आज मिल-बैठने का अवसर आया—फिर भी इतनी लेट ? अरे बिन्नू ! कल्लू ! भट्टू !·· [खीज कर] साले सबके सब कहां मर गए।

मुकुटलाल—आजकल अफ़सरी तो बिल्कुल कुलीगिरी हो गई। यानी बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाया।

सावंत—और क्या ? दिन-भर मरते रहो, फिर भी मालिक प्रसन्न नही।

परमजी—समय-समय की बात है। वरना पहले जमाने में · ।

मोती—और क्या। अपना कलेजा निकाल कर रख दो, तो भी मिनिस्टरों का कलेजा ठण्डा नही होता। [द्वार की ओर मुंह करके] अबे बिन्नू, कल्लू, छज्जू—साले सब मर गए। घर मे चार-चार नौकर है। काम का जहा वक्त आया, कि इनका दम निकला। [मुकुटलाल की ओर देख कर] देखते हैं न, सब न जाने कहा जा मरे। अरी ओ बाई की बच्ची ! सहजो [घण्टी बजाता है] ओ सहजो बाई !

मुकुटलाल—सचमुच, जमाना ही उलट गया। ये नीच नौकर खाते हैं और डण्ड पेलते हैं। काम करते मरते हैं और जरा डांटो तो आंखें दिखाते हैं।

परमजी—आखे दिखाते हैं और काम छोड़ जाते हैं। अब करते फिरिये दूसरे नौकर की तलाश।

सावंत—अरे मोटा भाई, वह समय आ रहा है, जब बर्तन-मलने वाले, ये ही नीच नौकर चुनाव लड़ेगे।

मुकुटलाल—और इनमें से ही मिनिस्टर बनेंगे। हमारे ऊपर हुकुमत

करेंगे । [बनावटी हँसी हँसकर] और हम खानदानी लोग इन की चौखट पर माथा रगड़ा करेंगे ।

[सब बडी जोर से अट्टहास करते है। सामने सहजो आती दीखती है ।]

परमजी—और असेम्बली की स्पीकर बनेगी श्रीमती सहजो बाई जी ।

[सहजो पास आती है। सब उसे देख पागलो की तरह कह-कहे मे फूट पडते है। वह हक्की-बक्की हो सबकी ओर देखती है।]

सावंत—अरी बनेगी न, स्पीकर ?

सहजो [खोई-खोई घबराई-सी]—काय मालिक ? हमारा लोग समझता नाहीं । काय हुकुम साहेब ? काय मांगता ?

मोती—देख सेठानी को बोलना, बाहर बहुत-सा आदमी लोग आया है। सेठ बोलता है, उनके खाने-पीने के लिये तावड़-तोड़ कुछ बनाकर भेज दे । अंगीठी जलता है न ?

सहजो—हा मालिक । चाय पीना मागता है, तो चाय हमारा लोग बनायेगा । खाने का बात भी बाई को बोलेगा ।

सावंत और परमजी [बनावटी आश्चर्य और अरुचि से]—चाय ? नही-नही, चाय नही मांगता ।

मुकुटलाल [मोती से व्यंग्यात्मक स्वर मे]—तो आज गरम पानी पिलाकर टालने की ठान ली ? घर आये मेहमान का यह आदर-सत्कार ? अपने इस तरह टलने वाले नही, भाई साब। आज तो बिना पिये न मानेगे और खायें-वायेंगे कुछ नहीं । शुद्ध विस्की ।

सावंत—एक-दो राउण्ड तो चलने ही दो ।

मोती [गौरव से]—यह सुनहरी मौका और चाय मे गंवा दिया जाय। दौर पर दौर चलने दो। मोती को इतना अदना समझ

रखा है क्या—सब को विस्की मे नहला दूगा ।

मुकुट [जैसे नशे मे हो]—वाह प्यारे । आज तो जी-भर के पिला दे साकी । वक्त फुर्सत भी है, मौसम भी है, दस्तूर भी है ।

[खिलखिलाता है]

[परम जी 'वाह-वाह-वाह' करके उछल पड़ता है । मोती तपाक से मुकुट से हाथ मिलाता है । सावत 'क्या खूब ! क्या खूब !' करके अट्टहास करता है ।]

सहजो [उपेक्षित-सी]—हमारे वास्ते काय हुकुम सेठ ? काय मांगता है, बोलो । हम जाना माँगता है ।

मोती—अरे हम तो भूल ही गए ।

परमजी—बिना पिये ही चढ़ने लगी ।

[सब हंसते है]

मोती—तू ऐसा कर, अलमारी से चार गिलास निकाल कर यहा मेज पर रख और वहीं बोतले भी रखी हैं । [परमजी भाई से] परमजी, जरा तकलीफ तो होगी तुम्हें, इसकी सहायता कर दो ।

परमजी [उठते हुए]—लो वाह, बड़े भाई इसमे क्या कष्ट ।

सावंत [व्यंग्यात्मक स्वर मे]—और एक-दो पैग यहा तक आते-आते ही [पीने का अभिनय करता है] साफ । क्यों शर्मा जी ?

[मोती, मकुटलाल और सावंत धीरे मे हंसते है ।]

परमजी [सहजो के साथ जाते-जाते मुसकाते और झेप मिटाते हुए]—अच्छा-अच्छा, गुरू पर ही चोट करने लगे ।

[दोनो का भीतर प्रस्थान]

मोती—मैं क्या, यह सहजो जानती-जूनती कुछ है नहीं, एकाध-गिलास-गुलास टोड दे, तो और मज़ा मिट्टी हो जाय ।

सावंत—और क्या। एक तो मज़ा वैसे ही इतना मंहगा हो रहा है—आजकल तो मजे का भी राशन हो गया।

मुकुटलाल—जब-तब तो कहीं मुश्किल से रंग जमता है, वह भी दुश्मनों की आंखों मे तीर की तरह चुभता है। अब रंगरेलियों का जमाना लद गया–लद गया। इस लिए छीन-झपट कर जीवन का जो भी रस मिल जाय, एक सांस मे पी डालना चाहिए। कब हाथ का प्याला टूट कर गिर जाय या कब समय की ठोकर क्षण-भर मे उसे उडेल दे, कौन जाने। वर्तमान ही जीवन की सब से बड़ी कसौटी।

मोती [चमत्कृत हो उछल कर]—वहव्वा ' वाहव्वा—बड़े भाई ! क्या लाख रुपये की बात कही। संसार-भर की फिलासफियो का निचोड़ रख दिया। [आतुरक्षिप्रता से हाथ बढाकर] मिलाओ हाथ इसी बात पर।

सावंत—भई, मजा आ गया।

[फुदकते-उछलते गदगद होते हुए दोनो हाथ मिलाते है। आगे-आगे सहजो एक काश्मीरी लकडी की ट्रे मे चार खाली सफेद शीशे के गिलास और चार सोडे की भरी बोतले रखे और उसके पीछे हाथ मे परमजी विस्की की एक बोतल और बोतल खोलने की चाबी लिये प्रवेश करते है।]

सावंत [खडे होकर आगे बढ़ कर ट्रे मे से दो सोडा-बोतल उठाकर टेबिल पर रखते हुए]—आहिए–आहिए ! स्वागत ! और धन्यवाद भी।

परमजी—बस रहने दे, अपना तकल्लुफ।

[सहजो ट्रे मेज पर रखती है। परमजी बोतल मेज पर रखता है सब मिलकर सोडे की बोतले-गिलास आदि ट्रे मे से निकाल कर मेज पर रखते है। सहजो खाली ट्रे लिए प्रस्थान करती है। मोती गिलास ठीक पोजीशन मे करता है। बाद में बोतल खोल कर विस्की गिलासो

मे उडेलने लगता है ।]

मुकुटलाल—लालपरी जिन्दाबाद ।

[परमजी फटाफट सोडे की बोतले खोलता है। सब अपने-अपने गिलासो मे सोडा उडेलते है]

परमजी—लालपरी की जय ! मदिरा महारानी की जय ।

[सब अपने-अपने गिलास उठा कर एक-दूसरे से छुआते और "यौर हैल्थ" कहते हुए एक-एक घूंट पीते है]

मोती [एक लम्बा-सा घूंट भर कर]—एक घूँट मे गम गलत गले से उतरते ही जीवन की सारी बेचैनिया काफूर—सारी तलखियां गायब—सारी परेशानियां अन्तर्धान । पुतलियों मे लाली झलकते ही सब रंग एक लाल रंग मे समा जाते हैं । चारो ओर लाल ही लाल ।

परमजी [घूट भरते हुए]—कबीर साब ने तभी तो कहा है—लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल ! लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ।

सावंत—बिल्कुल-बिल्कुल । संतो की यही हालत होती है ।

मुकुटलाल—जब पलकों मे लाल शर्बत की झलक उतरती है, जीवन की बदरंगिया मतलब, अलग-अलग रंग कहां टिकते हैं । अनेकता का अवसान हो, एकता का विहान जीवन के कोने-कोने मे स्वर्ण और संगीत बिखेरता है । द्वैतभाव तिरोहित हो जाता है—यही अद्वैतवाद है । जब तुम हम और सब एक ही रंग में डूब अपने-अपने रंग खो डालते हैं, मन का मैल स्वयं ही घुल गया, तब हम सब अलग कहा ? सब एक । अपना पृथक अस्तित्व कहां ? अपनी पृथकता गायब । तब कौन किसका पराया, कौन किसका अपना । आत्मा विश्वात्मा मे समा गई । जीवन का यही सब से बड़ा प्रयोजन है ।

मोती—इसी अवस्था को हमारे पुरखे ऋषि-मुनियों ने मोक्षावस्था कहा है।

सावंत [पीते हुए]—बिल्कुल ! सब झंझटों से छुटकारा। एक ही रस में डूब जाना ही मुक्ति है। [लम्बा-सा घूंट पीता है] पिये जा—जब तक जीना है, जिये जा। पी-पी के जिये जा—जी-जी के पिये जा [लड़खड़ाती-सी वाणी में] ज़िन्दगी के चार दिन हँस-हँस के जी ले।

परमजी—ज़िन्दगी के चार दिन है, हँस के जी ले। ज़िन्दगी के चार दिन हैं, आंसुओं से या जिगर के घाव सीले। [नशे का अभिनय करते हुए] अरे भूल जा इन सब को और जी-भर के पी ले।

[वाह्‌वा ! वाह्‌वा ! कहते हुए सब अपना-अपना गिलास उठा कर एक-एक घूंट भरते और मस्त आखो से एक-दूसरे की ओर ताकते है। परमजी गिलास मुंह से लगाए मुस्कराता हुआ आखे गिलास के ऊपर निकाले उर्दू-शायरो के समाज झुक-झुक कर सलाम करते हुए कृतज्ञता प्रकाश करता है।]

मोती—अबे, वाह बे शायर के बाप के भैया।

[सब हँसते है]

परमजी—सब वारूणी देवी का प्रसाद है। यही आदमी को हैवान से इंसान बनाती है। यही दिमाग के दरवाजे खटाक से खोल देती है। यही दिमाग का जंग उतार, उसे सूझ की सान पर रख, ऐसा चमकाती है, वह धार चढ़ाती है कि··· · कि · क्या करती है मेरा मतलब · वह धार चढ़ाती है कि गम का गला काट देती है। [नशे में] काट ही तो [गिलास मेज़ पर पटक कर] देती हैं।

सावंत—बिल्कुल ! [लडखडाती वाणी में]· बील-कुल परम-जी-भाई। [गिलास उठा कर घूट पीता है] बिल्कुल गला काट देती है। अबे,

सरासर गला काट देती है ।

मुकुट—और उसमे यह शक्ति आई कहां से ?

मोती—आती कहां से, जन्म से ही उसमे यह शक्ति है । और जन्म से क्यों वह तो अजन्मा है । वह तो कभी न मरती है, न जन्म लेती है, भाईजान ।

मुकुट [घूंट पीते हुए]—बिल्कुल-बिल्कुल !

परमजी—लेकिन उसका जन्म तो समुन्द्र से हुआ है, वह अजन्मा क्यो ?

मोती—हा, यह तो है परमजी भाई । वह भी चौदह रत्नों के साथ समुद्र-व्यंथन से निकली । लक्ष्मी भी समुद्र से निकली । दोनों सगी बहने है ।

सावंत—क्या समुद्र से निकली ? समुद्र की बेटी ! अरे वाहरे समुद्र की बेटो ! तब लक्ष्मी जी की बहन हुई ।—अरे वह सगी बहन हुई ।

मुकुट—वाह वे सावन्ता, तू भी अक्ल की बात कह गया ।

सावत—मैंने नही कही यह बात । इसने कही [गिलास की ओर संकेत करके] इसने कही—इसने कही । [पीता है] मैंने नही कही—कसम तुम्हारी जी ।

परमजी—लेकिन जिस घर मे वारूणीदेवी पधारी, लक्ष्मी ने वहां से दुम दबा कर वह चाल दिखाई कि पीछे फिर कर भी न देखा ।

सावन्त—लक्ष्मी के दुम भी होती है ? वह क्या लोमड़ी है, जो दुम दबा कर भाग जाती है ? उसकी [सब हंसते हैं] दुम कितनी [पीता है] ल-मबी ।

मुकुट—ये बेतुकी बाते शुरू की ।

मोती—इन सब बातों से पीछे लौटो। हां, समुद्र-मंथन मे वारूणी मिली—एक रत्न है यह भी । सुरा-सुन्दरी-उर्वषी, यह भी एक रत्न है।

मुकुट—बिल्कुल-बिल्कुल। [पीता है]।

सावंत—रतन तो हमारे चपरासी का लड़का है, यह रतन कैसे ?

[सब खिलखिला कर हंसते है। सावन्त घबराया-सा दखता है]

मुकुट—समुद्र-मंथन की कथा यो है। समुद्र-तट पर शिव-पत्नी पार्वती स्नान करने जाया करती। समुद्र उसे छेड़ता। शिव ने देव-दानवो को एकत्र किया। शेषनाग को रस्सी, समेरू को मथानी, और कच्छप को टिकानी बनाया गया। देव-दानवो ने उसे मथ डाला। समुद्र मथने से चौदह रत्न निकले। इन रत्नों मे वारूणी भी एक है। यह साधारण कथा नही--इस मे महान् आध्यात्मिक तत्व भरे है। तो, जो है, सो श्री शुकदेव जी बोले, हे राजा परीछत, सुन। जीवन ही महा समुद्र है। विवेक और बल ही देव और दानव। शिव अर्थात् संसार के मगल के लिए विवेक और बल ने जीवन-सागर को मथ डाला। और सुरा यानी शराब बनाई गई। पार्वती यानी मोक्ष को यह मायावी जीवन भ्रष्ट करना चाहता है। इसलिए सुरापान मानवात्मा को चिन्ता-मुक्त कर आनन्द-लोक मे पहुंचता है। सुरापानम् परम धर्म, परम कर्म, परम मर्मम्--कहा भी है।

मोती [चपलता से गद्-गद् होकर]--वाहव्वा! वाहव्वा! कपिल, कणाद, गौतम, चार्वाक--सब मात खा गये। लालपरी जिन्दाबाद ! मुकुटलाल जिन्दाबाद !

सावंत [पैर छू कर भक्तो की-सी दीनता दिखाते हुए]—धन्य है गुरु-देव! मेरी आत्मा का उद्धार करो! मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ [रोता है] गुरूदेव! जो गल्ती हो, माफ करो। [सब लोग हंसते है] तुम

हंसते हो—तुम हंसते हो। [गिडगिडा कर] गुरूदेव । अशरण ! महाराज, मेरा विस्तार करो । मै जनम-जनम का पापी ।

परमजी—[उठाते हुए] उठो-उठो, भक्तराज ! तुम्हारे सारे पाप माफ । एक पैग और चढ़ाओ, तो सीधे स्वर्ग सिधारो ।

सावंत—[कातर दृष्टि से] क्या मुझे माफ कर दिया ?

मुकुट— माफ कर दिया [सिर पर हाथ कर] जा बेटा, माफ किया । खूब पी और पिला । तूने समझा सुरापान का यथार्थ महत्त्व ।

[सहसा एक कान्स्टेबिल का प्रवेश। वह मुकुटलाल को सैल्यूट करता है । सावन्त देखते ही भयभीत हो गिडगिडा कर मुकुटलाल के पैर पकड लेता है]

सावंत [भयकम्पित स्वर मे]—बचाओ ! बचाओ ! मैं नही था गुरू-देव । बचाओ । मैने चोरी नहीं की ।

[सब खिलखिला कर हसते है]

मुकुट [सान्त्वना के स्वर मे, अपने पैर छुडाते हुए]—डरो नही—घबराओ नही तुम्हे पकड़ने नहीं आया ।

[सावन्त और भी कस कर पैर पकडता है । परमजी कुडाकर अलग करता है]

कान्स्टेबिल—साब का दादर मे जो मर्डर केस हुआ था, उसकी फाइले नहीं मिल रही । बड़ा साब ने आपको · ।

मुकुट—इस समय क्या ज़रूरत आ पडी ?

कान्स्टेबिल—बड़ा साब देखना मागता है। जनाब जी को याद किया हैं ।

मुकुट [कलाई—घडी देखकर]—चलो अभी आते हैं ।

[कान्स्टेबिल सैल्यूट करके प्रस्थान करता है]

सावंत [अकडते हुए]—भाग जाओ हम पकड़ा जाना नहीं मांगता। अबे नहीं ''जायेगा क्या ? हमे कौन [सब हंसते है] हाथ लगा सकता है। हम अभी सबको गोली मार सकता है।

मुकुट [जाने के लिए खडे होते हुए]—यह है नौकरी। यह है नौकरी ! यह भी साली क्या नौकरी है। अफसरी के जमाने लद गये। अब तो घिस-घिस।

परमजी—और क्या ?

मोती—सावंत भाई को जरा सड़क के किनारे लगा दो, नहीं तो कहीं श्रीमान जी रास्ते मे ढेर न हो जायं। आज बड़े तेज घोड़े पर सवार हैं हजूर।

मुकुट—चले जाओगे सावन्त, घर तक या किसी कान्स्टेबिल के साथ ?

सावंत [अकड कर]—चला जायगा। कोई हमने शराब पिया है ? कौन कहता है नशे मे हैं ? क्या तुम कहता है ?

मुकुट—अच्छा। माफ कीजिए, फिर कभी।

[सब परस्पर हाथ मिलाते है। मुकुट और सावन्त का प्रस्थान।]

मोती—परमजी, तुम्हे तो बैठना है न ?

परमजी—वह घोष दादा आ रहे होंगे। चलना नहीं क्या कल रेस में ?

मोती—चलना क्यो नहीं। लेकिन घोष दादा को तो अब तक आ जाना चाहिए था। खैर, [भीतर की ओर पुकार कर] अरी सहजो, ओ सहजो की बच्ची !

सहजो [प्रवेश करते हुए]—आली साब, आली। क्या हुकुम सेठ ?

मोती [परमजी से]—तो तुम, दो मिनट बैठो। मैं जरा थोड़ी देर के

लिये [सहजो से] **जल्दी ये गिलास गुलस उठा कर भीतर रख। और संभाल कर रखना।**

[मोती का भीतर प्रस्थान। सहजो गिलास उठाकर ले जाती है। परमजी पास ही घूमने लगता है। सहजो फिर आती है और शेष गिलास और बोतलें ले जाती है। परमजी फूलों के पास जाकर सिगरेट जलाकर पीने लगता है। सफेद तनजेब का बंगाली कुर्ता, पतली-सी काली किनारी की धोती, और पुरानी चप्पल घसीटते, बहुत-सी हिन्दी-अंग्रेजी-गुजराती की छोटी-छोटी पुस्तिकाएं, पान की डिबिया तमाखू-सुपारी के बटुए और पेंसिल-कागज से भरा, एक थैला बाये हाथ में लटकाये, और दाय हाथ में गोल मूठ का बेत लिये, भारी-भारी धमधम पग रख कर आते हुए घोष दिखाई देता है। देखते ही परमजी भाई आदर-सत्कार के लिये क्षिप्रता, आकुलता, आनन्द, मुस्कान के साथ उसकी ओर बढ़ता है।]

परमजी [हाथ जोड, नाक की सीध में, मस्तक पर रखते हुए]—**प्रणाम दादा। हमारी तो आंखे ही पथरा चली थी—बडी प्रतीक्षा कराई।**

घोष [अशीर्वादात्मक शैली में हाथ उठाते हुए]—**महालक्ष्मी प्रसन्न हो। अश्वदेव सदा अनुग्रह करते रहे।** [निकट आ जाता है] **रेस पर रेस जीतते रहो।**

परमजी—**अपन ऐसा भाग्य कहा लाये हैं साथ। बुड्ढा ब्रह्मा जब हमारा भाग्य लिखने बैठा, तो जनाब के फाउंटेनपेन की स्याही बिल्कुल सूख गई।** [गद्दी झाडने के विचार से उस पर हाथ पटकते हुए] **ब्रह्मानी ने पूछा भी कि स्याही भर दूं · · बैठे गुरुदेव।**

घोष [बैठते हुए]—**हं-हं-हं-हं महालक्ष्मी के घर किसी बात की कमी नहीं। बस नजर पड़ने पर की बात है, पलक मारते लाखापति बन जाय आदमी। अश्वदेव भी तनिक कृपा की कोर कर दे तो बात**

की बात मे रेस जीत जाय रेस-भगत। खैर, हां, मोती बाबू किधर ?

परमजी—एक मिनट हुई, भीतर गये। अभी-अभी तो आप की याद हो रही थी। बुलाऊँ [द्वार के पास जाते हुए पुकारता है] मोती भाई, घोष दादा आ गये।

मोती [नेपथ्य से]—आया आया। [प्रवेश करते हुए] वाह दादा, आज तो कमाल की बाट दिखाई। इतनी देर ? हम तो निराश हो गये थे। [परमजी और मोतीलाल घोष बाबू के निकट पहुँचते हैं] सोच रहा था, किसी को बुलाने भेजूं।

घोष [कुर्सी से थोड़ा सा खड़ा हो कर]—अधिक बीलम्ब तो नहीं हुआ आज हमारी औरत का जी बहुत बिगड़ गया। डाक्टर बूला कर दिखाया। अब तो खतरे का बात नहीं।

मोती [विस्मय तथा सहानुभूति से]—अच्छा, इतनी बिगड़ चली थी हालत ? भगवान् की दया।

घोष—हमारी इष्ट देवी देवीमहालक्ष्मी की दया, भला अपने भक्त को वह रेस-रमण से वंचित कैसे कर सकती है। अश्वदेव की टापों के नीचे बड़े से बड़ा शनीचर भी कुचल जाय, यह तो मामूली रोग था।

परमजी—लेकिन अब कैसा है ?

घोष—मौत का डर पैदा हो गया था। हार्ट फेल होने का शका हमको भी हुआ, एक-दो इंजैक्शन दिया, अब सांस ठीक चल रहा है। अब डर का बात बिल्कुल नहीं कल बहुत आराम से रेस खेलने जा सकता है। तुम्हारा लोग चलने का निश्चय किये हो न।

मोती—गुरुदेव का आशीर्वाद मिले तो।

घोष—परमदयालु महालक्ष्मी दुख-दारिद्-दलनि, रेसभक्त-मनहरिनि

इष्टदेवी का अनुग्रह से अश्वदेव की टापों मे तुम्हारे शत्रुओं का मान मर्दन होता रहेगा । अश्वदेव, टापों से नोट समेट तुम्हे देते रहे यही कामना है ।

परमजी [कर जोड़ घोष के सामने प्रार्थना मुद्रा मे बैठ पद्यात्मक स्वर मे]— गुरु बिन ग्यान न होय प्रभू जी । रोय मरो किन कोय…प्रभू जी, गुरु बिन …।

घोष [हंस कर टालते हुए]—ह-हं-हं-ह-इच्छा । अच्छा, तो कौन से घोड़े को टिप दे रहे हो ? [थैले से पान-तमाखू, कागज-पेंसिल, अनेक पुस्तिकाएं निकाल कर मेज पर रखता है ।]

मोती—अभी तो कुछ सोचा नही दादा । मिल कर ही कुछ तय करेंगे । जिस घोडे पर आप का हाथ रखा जाय, वही ˙ ।

घोष [वात्सल्यमय झिडकिया देते हुए साश्चर्य ।]—अरे इतनी लापरवाही । कल रेसे होने वाला है । सिर पर आ गया और अभी तक तय ही नही किया । इतना इम्पार्टेंट काम और नीद मे बेहोश । तुम ने किस घोड़े को फेवरिट बनाया परमजी भाई बाबू ' [डिबिया निकाल कर पान खाता है । बटुआ खोल कर, सुपारी-तमाखू मुंह मे डालता है ।]

परमजी—शहर में तो प्रिंस आफ पंजाब की बहुत चर्चा है । नानकी भाई कम्पनी की रेस-बुक्स मे भी 'प्रिंस आफ पंजाब' को टिप किया गया है ।

घोष [उपेक्षा की मुस्कान अपने गालो की मोटी मांसल झुरियो में खिलाते हुए]—हा, चर्चा तो हमने भी सुना है । प्रिंस अब की बार लाखो खिलाड़ियो का दिवाला पिटवा देगा । [इन्कार और तिरस्कार का सिर हिलाते हुए] उहुं—घोड़े मे बिल्कुल भी जान नहीं । हमारी राय मे तो यह पिट जायेगा ।

[उठ कर पीक थूक कर बैठ जाता है]

मोती—दादा, रतनजी भाई और रुस्तमजी छाबड़ीवाला भी इसी पर लगा रहे है।

घोष [तिरस्कार के साथ]—रुस्तमजी और रतनजी के पुरखों ने जैसे बड़ी रेसे खेली हैं। रुस्तमजी छाबडी लगाने की बात कहे, तो मान भी ली जाय। रतन कटपीस का व्यापारी—ये लोग क्या जाने रेस की सार। और प्रिंस भी कोई घोड़ा है। पता नही, किसने इस टट्टू को रेस मे रख लिया ! [मुँह बनाकर] प्रिंस ऑव पै-न-जा-ब।

परमजी—तो दादा बताओ न अपना फैवरिट।

घोष—भाई, अपन तो 'जिप्सी के पुजारी है। और महालक्ष्मी का यह सपूत इस दौड़ मे बड़े-बड़े पुराने नामियो के छक्के छुड़ायगा। जिप्सी वाह ! मेरे जिप्सी !

मोती—लेकिन, जिप्सी से अधिक टिप्स तो गोल्डन डीयर को दिये जा रहे हैं। गोल्डन डीयर इस वक्त सैकिंड बैस्ट घोड़ा है।

घोष—गोल्डन डीयर। ह-हं-हं-हं, वाहव्वा-वाहव्वा। [फिर हंसता है] गोल्डन डीयर। मालूम है, इसका जॉकी कौन है ? वह तो अगर जिप्सी पर भी हो तो जिप्सी विन होते-होते पाचवे नम्बर पर जा पडे। कम्बख्त अच्छे-से-अच्छे जानवर का नाश मार दे। रेस मे पिट कर आना हो, तो इस जॉकी को चुन लो।

परमजी—हा, यह तो बात है। जॉकी बदनाम तो बहुत है, लेकिन पिछली रेस मे एक दो घोड़े तो जिता दिये उसने।

घोष—वह तो बिल्ली के भाग से छीका टूट पड़ा, वरना उसे तो डिसमिस कर दिया जाता। नालायक, घोड़े को खुलकर दौड़ने ही नही देता। जहां घोड़ा गरम हुआ, ऐसी लगाम खींचता है कि जानवर छटपटा कर रह जाय, गैलप के लिये।

[पान की पीक थूक कर फिर बैठता है]

मोती—जिप्सी, चलो फैवरिट रहा, एक-दो और घोड़े भी देख लेते हैं। पर यह तो छठी मे दौड़ रहा है।

परमजी—चुनाव मे इससे सरलता रहेगी, जो सब से अच्छा हो, उसी पर खेल जाओ।

घोष—ट्रिपिल टॉट खेलनी है या अलग-अलग। कल तो घर मकान बेच कर भी रेस खेलने को मन करता है। तीन घोडा हमने छांटा है। रात-भर सो भी नही पाया। पहली रेस मे रेड स्कार्पियन, तीसरी मे हीरो और छठी मे जिप्सी। तीनों मे अपनी पौ पच्चीस। –ट्रिपिलटॉट।

मोती—पहली मे सिलवर किंग के अधिक चांसेज़ हैं। सिल्वर किंग पूना की रेसो मे नाम कमा चुका है। दादा, इस बार यह दे जायगा कुछ। सिल्वरकिंग—घोडो का बादशाह।

परमजी—बड़ा शानदार बछेरा है। दादा, जब गर्दन तान, दुम सतरा, कान उठा, सरपट दौड़ता है, तो खिलाड़ियों के दिल का बादशाह बन जाता है। क्या दूल्हे की तरह धजा है। जी करता है चूम लूँ।

घोष—बाबा रेस करता है या कोबिता करता है? घोडे को चूमना मांगता है, दूल्हा का माफिक लगता है, ऐ सब बात रेस मे नहीं चलता।

मोती—यह बात नही दादा, सिल्वरकिंग अपनी शानदार जीत से साबित भी तो कर चुका है कि वह हज़ारों में एक ही घोड़ा है। उसका गठन देखिये कितना कसीला, सुडौल मुता हुआ।

घोष—उसका तुलना में रैड स्कार्पियन को तोलिये। [कागज़ पैंसिल लेकर लिखने लगता है] बजन सात मन, उन्नीस सेर, तेरह छटांक

तीन तोले और सिल्वरकिंग है सात मन उन्नीस सेर पन्द्रह छटाक, चार तोले। और भी बढ़ गया होगा। उसका मालिक लोग मूरख है। खूब खिलाता है। [हँस कर] उसको भैंस बनाना मांगता है। किंग का बजन मे से स्कार्पियन का घटाओ—दो छटाक, एक तोला।

परमजी—लेकिन दादा, उसका गैलप तो · ।

घोष—ए हम भी मानता है। गैलप उसका रैड स्कार्पियन से सवा इंच ज़्यादा है। पर अब वह और भी मोटा हो गया है, उसका गैलप कम हो जायगा। इसके सिवा, पूना वाली रेस मे स्कार्पियन का जॉकी था रहमान—वह बुद्धू क्या जाने घोड़े कुदाना। इस बार··· ।

मोती—इस बार तो विल्सन है। वैसे वह अच्छा कुदाता है घोड़े को।

घोष [उछल कर]—बिल्कुल-बिल्कुल! यही हम बोलता है। रैड स्कार्पियन की जीत निश्चित। स्कार्पियन मैदान मे आया, अन्य जॉकियों के छक्के छूटे। हमारा बात मानो, इसी पर खेलेंगे पहली रेस। बोलो, स्वीकार। रेस जीतना हो तो बोलो हाँ।

परमजी—इसमें अब कोई अदल-बदल नही करेंगे। वैसे आपकी आज्ञा टाल तो नही सकते।

घोष—हमारा तो विचार है, नही। स्कार्पियन को टिप भी कम किया जा रहा है। बहुत कम लोग इस अवसर पर खेलेगा। यह जीता, तो पैसा भी बहुत आयगा। बोलो, तुम्हारा दिल, स्वीकार करता है?

मोती—स्वीकार। जय महालक्ष्मी की। जय अश्वदेव की।

परमजी—स्वीकार। रैड स्कार्पियन जिन्दाबाद।

घोष—तीसरी रेस मे हीरो जंचता है, लेकिन ··।

मोती—लेकिन दादा, उसके हौसले तो कभी के पस्त हो चुके। उसकी जवानी ढल चुकी।

[लेखा आकर फूल तोड़ने लगती है। एक-दो फूल तोड़ कर वेणी मे लगाती है।]

घोष [आश्चर्य, हकार, व्यंग्य की मुद्रा मे]—जवानी ढल चुकी? यह कहते क्या है आप लोग? इतना इस्ट्रांग बछेरा मिलना मुश्किल। अभी तो कई बरस तक किसी को जीतने न देगा। अभी तो उसकी झिझक खुली है।

परमजी—गुरुदेव, हीरो पर अपनी तो श्रद्धा है नही। इससे तो रेस खेलना ही बेकार।

मोती—नाम बड़े और दर्शन थोड़े।

घोष—हीरो पर तुम लोग की श्रद्धा नही? क्यो? तुम्हारा लोग जानता नही। [किताब खोल कर] ऐसा खानदानी घोड़ा आज तक रेस के मैदान मे नहीं आया। हम तो इतना तक बोलता है, आगे भी नही आयगा।

लेखा [व्यंग्यात्मक गम्भीर मुद्रा में]—बिल्कुल चेतक का चाचा है। ऐसा खानदानी घोड़ा। वाह! क्या खानदानी घोड़ा।

[लेखा का प्रस्थान। मोती का रोष-भरी दृष्टि से देखना। परमजी का तनिक मुस्कराना]

घोष [प्रसन्नता और उत्साह से फुदकते हुए]—बिल्कुल—बाई ठीक बोलता है। हीरो की मा, मालूम कौन थी? अभी बताता है। [फुर्ती से पान खाता और सुपारी-तमाखू मुंह में डालता है] ऐशियन क्वीन। कितना नाम कमाया उसने रेसों मे, जिस ने उस

पर लगाया मालामाल । और अहा ! इसका बाप, ड्यूक आफ ग्रीन-लैंड--जिस रेस मे आया, दुश्मनों के छक्के छूट गये । बड़े-बड़े नामी घोड़े झाग डाल गये । और इसकी नानी हर मैजेस्टी का क्या आतंक था ।

परमजी--दादा, तुम तो पूरा जनमपत्रा खोल बैठे, उसके कुल-गोत्र का।

घोष—हम रेस का खिलाडी है, कोई अनाडो लोग नहीं। खिलाड़ी यह सब-कुछ भली प्रकार नही जानेगा, तो रेस खेल चुका । रेस खेलना हसी-खेल नहीं, ज्ञान-विज्ञान-सम्पन्न बुद्धि का काम है। अश्वदेव का कुल-गोत्र, रक्त-सम्बन्ध, जन्म-स्थान, पालन-पोषण जन्म-तिथि आदि ही नहीं, उसकी छलाग, दुम-संचालन, दुलकी, सरपट आदि का जानना उसकी गति-विधि पर सदा ध्यान रखना, उसके विकास का अध्ययन करना ही नही, अपनी कल्पना-शक्ति के सहारे उसके भविष्य को समझना भी बहुत आवश्यक है।

मोतीलाल--बिल्कुल-बिल्कुल ।

घोष—रेस के खिलाड़ी को गणित, ज्योतिष, प्राणि-विज्ञान, मैडीकल-साइंस मे भी प्रवीण होना आवश्यक है । घोडों की बीमारी नहीं जानेगा, तो अच्छा घोडा की पहचान क्या करेगा ।

परमजी--और क्या । नहीं तो, वह रेस-विज्ञान को समझेगा ही क्या ।

घोष--अपने को रेस का खिलाड़ी समझता बहुत आदमी लोग है और लाखो आदमी रेस खेलता भी है, पर दीमाग किसी को भी नहीं होता। हारता है, अपने भाग्य को कोसता है। ये रेस-बुक छापने वाला भी अनाड़ी होता है, तभी तो किसी घोडे को टिप करता है, जीतता है और कोई । इसी लिये तो हम बोलता है कि हीरो तीसरी रेस मे जीतेगा और हम को हीरो के चाचा और मामा

तक की हिस्ट्री मालूम है। [डायरी खोल कर दिखाता है] यह पढ़ो यह लिखा है, हमारी नोटबुक मे।

मोतीलाल [अप्रभावित और असहमत होते हुए]— दादा, यह-सब ठीक है। लेकिन इसकी उम्र ज्यादा है। इस रेस मे और जो-जो घोड़े दौड़ रहे है, सभी जवान हैं। हीरो मुटिया भो गया है। क्यों परमजी ?

परमजी [समर्थन का सिर हिलाते हुए]—बिल्कुल। मेरी अपनी तो यही राय है। हीरो की तो कोई भूले-भटके भी चर्चा नही करता। पता नही, दादा को उससे कौन सी ममता है कि उस पर पागल हो रहे हैं। तीसरी रेस मे तो मेरी फेवरिट है लोटसलेडी। उटकमड मे इसने अपने मालिक को छत्तीस लाख दिलाये थे। क्या प्यारा नाम है लोटसलेडी। श्योर विन है। कमलसुन्दरी - लोटसलेडी !

घोष—लोटसलेडी—हॅ, यह भी कोई घोड़ी है—खच्चर की बच्ची।

परमजी—क्षमा करे घोष दादा, गधे की वकालत मे महारानी का अपमान करते हो। लोटसलेडी तो राजकुमारी है, राजकुमारी !

मोती—झगड़े से क्या लाभ ! लोटसलेडी और हीरो का रिकार्ड मिला लो।

परमजी—मंजूर। मिला लो, रिकार्ड। उसके गुण-गौरव के सामने हीरो सारी हेकड़ी भूल, दुम दबा कर भागेगा।

घोष—तीन दिन हुए रेस मे शरीक हुए लेडी को, अभी से रिकार्ड भी बनने लगे। कहाँ खानदानी घोड़ा हीरो, और कहां लोटसलेडी, जिसके मा-बाप का पता नहीं। हीरो से लेडी का मुकाबला क्या, तो भी मिला लो। रिकार्ड। [पुस्तक खोलता है]

परमजी—हीरो का वेट सात मन, तीन सेर, ९ छटांक और लेडी का

सात मन, एक सेर, तीन छटांक । हीरो का हुआ दो सेर छ छटांक ज्यादा—लेडी के मुकाबले क्या दौड़ेगा यह ।

घोष—हीरो का गैलप इकत्तीस फीट, सवा दो इंच और लेडी का इकत्तीस फीट एक इंच । विन मे हीरो ही आयगा । सवा दो इंच आगे रहेगा लेडी से ।

मोती—लेडी की गर्दन-मुंह आगे फैला कर साढ़े पांच फीट और हीरो की पांच फीट तीन इंच । लेडी तीन इच आगे । इसलिये वह विन मे जायगी यानी पौन इच फिर भी आगे रही ।

घोष—लेडी की दुम, हीरो की दुम से भारी, वह विन तो कभी आ ही नही सकती । [व्यंग्य से] हा पांचवे-छठे नम्बर पर भले ही आ जाये । तब भी उस का भाग्य सराहना चाहिए ।

परमजी—हीरो को और हल्का करना हो, तो दस्तो की गोलियां खिला दो दादा, नहीं तो उस टट्टू का वज़न लेडी से ज्यादा ही रहेगा । [व्यंग्य से] मेरा विचार है, उसे तो टांगे मे जोतना ठीक रहेगा । दौड-वौड़ तो उससे होती नही । [हँस कर] बिकवा दूं किसी तांगे वाले के हाथ ?

मोती—मज़ाक छोड़ो, लेडी ही रही न घोष दादा । लिखते जाओ, परमजी, वैसे कभी याद न रहे ।

[परमजी कागज़-पेंसिल उठा कर लिखने लगता है । घोष रेसबुक उलटने-पलटने लगता है । नेपथ्य मे बिल्लू के रोने का शब्द । क्षण-भर तीनो घर की ओर देखते है । क्षिप्रता से सहजो बाहर आकर मोतीलाल को पुकारती है, घबराई, कापती सी वाणी में ।]

सहजो—साहेब । सेठ बाबू । बिल्लू को चोट लागली । तुम्हारे को बाई बुलाती है ।

मोती [उपेक्षा से सहजो के प्रति]—अच्छा-अच्छा, सुन लिया। तो समझा जाय, हीरो के टिकट नही खरीद रहे हैं। हा, अब ।

परमजी—और क्या। घोष दादा के पास भी अब तो जवाब नहीं। [विजय-गौरव से] क्यों दादा ?

[घोष पुस्तक उलटता रहता है]

सहजो—बाई को काय बोलू साब ? बिल्लू को चोट लागली । बाई बोलता है कोणि दागदर ।

मोती [फटकार कर]—बकवास किये जायगी। भाग यहा से बदतमीज़। बेवकूफ !

[भयभीत हो सहजो का प्रस्थान]

घोष—हीरो के जॉकी का मुकाबला सारी रेस मे नही और जॉकी चाहे तो घोड़े को जिता कर छोड़े। सोलंकी जिस घोड़े पर बैठ जाय, वह हारा तो आज तक नही। हीरो का जॉकी है खिलाड़ियो के हृदय का राजा। सोलंकी। सैकड़ों खिलाड़ियो के भाग्य का विधाता।

परमजी—दादा, यह तो ठीक है। पर जॉकी क्या अपना सिर फोड़ेगा, जब घोड़ा चल कर ही न दे।

मोती—कुदक-कुदक करते घोड़े मे बिजली थोड़े ही भर देगा जॉकी। मेरा मन तो हीरो पर जमता नही। लेडी-लोटस का ही नाम लिखे लेते हैं, फैवरिट की जगह।

घोष—इसे लिख लो। रात को और सोच लेगे। पिंकी को भी नजर मे रखते हैं। [सहजो का फिर घबराई मुद्रा में प्रवेश। मोतीलाल देख कर अनदेखी करता है।] तो पहली मे स्कार्पियन, तीसरी मे लेडी-लोटस और पिंकी और छठी में तो · · ।

सहजो [पास आकर डरती-सी]—सेठ बाबू, बाई बुलाता है। बिल्लू का पैर मे बहुत चोट लागली। दागदर को दिखाना मांगता है।

[परमजी और घोष आश्चर्य-अनिच्छित भाव से उसकी ओर देखते है। परमजी लिखने और घोष पुस्तक उलटने लगता है।]

मोतीलाल [उपेक्षा और क्रोध से]—तो बार-बार मेरा सिर क्यों खाती है आकर? कह दिया, यहा मत आ। मत आ। बाई को बोल, उसे डाक्टर के पास ले जाय। यानी जब भी किसी इम्पोर्टेंट काम मे बिज़ी होऊंगा, ये लोग डिस्टर्ब करेंगे। कहाँ से आ मरते हैं कमबख्त!

परमजी—हो आओ न, क्षण-भर के लिये।

मोती—तुम भी इन औरतों की बातो मे आ गये। बच्चा है, खेलते-खालते थोड़ी-बहुत चोट लग-लगा गई होगी। हां, तो छठी रेस मे?

सहजो—हम को बाई बार-बार बोलता है, सेठ को बोलो, बिल्लू को बहुत चोट लगा। रक्त बहता है।

मोती [क्रोध मे लाल होकर चिल्लाते हुए]—अबे, तू जायगी या नही यहां से? मार तो नही खानी, बेवकूफ! बदतमीज़! नालायक! नीच!

[सहजो डरती सी फिर वापस जाती है]

घोष—छठी मे क्या तय करना है, वह तो श्योर विन है। उस पर तो बहस व्यर्थ है।

परमजी—बंगाल-टाइगर का श्योर चांस है छठी रेस मे। पहली को जीतेगा रेडस्कार्पियन, इस जीत में जो रुपया आवे उसको लगा दो लोटस-लेडी पर, जीत निश्चित है, और लोटस-लेडी को जीत

कर टिकट खरीदो बंगाल-टाइगर के। तीनों रेस जीते ट्रिपिलटॉट फतह।

मोती [तालिया बजाते हुए ही]—ही-हर ! ही-हर ! शाबाश—मोटा भाई ! तेरे मुंह मे घी-शक्कर। बरसों का सोया भाग जाग उठा।

घोष—छठी मे तो जिप्सी के सामने मै किसी को ठहरने नही दूंगा। जिप्सी के विरोध मे देवता लोग भी आकाशवाणी करे, तो भी मै जिप्सी पर ही अपनी सारी सम्पत्ति लगा दूं। पच्चीस वर्ष रेस खेलते हो गये, पर इतना शानदार और जानदार घोड़ा मैने आज तक नही देखा। ऐसे घोडे के तो दर्शन करके तर जाय आदमी।

[गम्भीर, उदास, सरोष मुद्रा मे लेखा प्रवेश करती है। मोतीलाल हल्की ताड़ना की आखो से उसे देखता है। परमजी भाई फीकी मुस्कान से देख कर आखे नीची कर लेता है। घोष भागती हुई पुतलिया लेखा के मुख पर से रपटाते हुए फिर पुस्तक के पृष्ठ क्षिप्रता से उलटने लगता है]।

परमजी [फीकी हँसी के साथ]—हं-हं-ह-हं भाभी जी।

मोती—[रूखे स्वर मे] क्या है ? [घोष के प्रति] तो दादा, बंगाल टायगर ।

घोष—बंगाल टायगर का नाम लेकर शुगन क्यों खराब करते हो ? उस पर हमारा राय मे ।

लेखा [निकट आकर मोतीलाल से]—क्यो, इस समय इतनी भी फुर्सत नही कि

मोती [सरोष वाणी मे]—देखती नहीं, कितनी माथापच्ची करनी पड़ रही है, तब कहीं और ऊपर से तुम सिर पर आ चढ़ीं।

परमजी [खुशामदी स्वर मे]—हं-हं-हं-हं भाभी जी, आज तो हं हं हं-हं बस लाखों के वारे-न्यारे ।

घोप--बस, थोड़ा मिनट का काम ।

लेखा [दोनो की उपेक्षा कर मोतीलाल मे]--मैंने दो बार बाई भेजी, दोनो बार उसे फटकार कर लौटा दिया । यह काम इतना आवश्यक है, कि दो मिनट के लिए छुटकारा नही ? उधर बच्चा रो-रोकर जान दिये देता है । और आप इस बेकार के काम मे ।

मोती—मै कहता हूं, एक मिनट के लिए भी, मरने के लिए भी टाइम नही इस वक्त [झिडक कर] चली जाओ यहाँ से ।

लेखा [तीखे स्वर मे]—लडका चाहे मर जाय, उसकी चिन्ता नही । रेस के घोड़ों के बाप-दादों की जन्म-पत्रिया खुल रही है, उधर बिल्लू चिल्ला-चिल्ला कर जान दिये डालता है और ।

परमजी—बिल्ली क्या हुआ भाभी जी ?

लेखा—सीढ़ी से गिर पड़ा । पैर कट गया । लोहू-लुहान हो रहा है । खून बन्द नही होता । उठ कर जरा ।

घोप--हमारा काम तो हो गया--जिप्सी । छठी रेस मे ।

लेखा—इन घोड़ों के मुकाबले बच्चा प्यारा नही । जरा उठकर डाक्टर के पास नही जा सकते ?

मोती [कुर्सी से उठकर तीखे स्वर मे फटकारते हुए]—बेशर्म ! बिल्लू का पैर कट गया, तुम अन्धी तो नही हो । क्यों नही उसकी देख-भाल करती ? यह भी मेरा काम है ? मैं उसका पहरा दू ? और पैर टूट गया, तो डाक्टर के पास नही ले जाती । यहां आ गई काम मे रोड़ा अटकाने को बेअकल । तू नहीं जा सकती ?—बड़ी पर्दानशीन ।

लेखा [व्यग्य से]—क्या शानदार काम है ! काम मे रोडा अटका रही हूँ मै ? बच्चा मर जाय, घर मे आग लग जाय, पर यह काम चलता रहे । वाह रे रेस के शौकीन ! और वाह [दोनो की ओर हाथ से सकेत करते हुए] आप के ये सलाहकार । जब तक अच्छी तरह विनाश न हो जाय ।

परमजी [खिसियानी-सी मुद्रा मे खुशामद करते हुए]—हं—ह—हं—ह— भाभी जी, क्षमा करे मैंने तो कहा था [उठते हुए कुर्सी से] मैं चलता हू ।

मोती—इतने लोगों के सामने इस तरह बकवास करते शर्म नहीं आती ? अगर कुछ भी आगे कहा तो । चल यहां से भाग । [बैठना चाहता है । लेखा की बात सुन फिर खडा होता है]

लेखा [सकरुण व्यग्य से]—सचमुच मुझे शर्म नही आती, बड़ी बेशर्म हूं, जो आप लोगो के सामने मुंह खोल रही हू । घर को लुटते देख कर भी चुप रही, सचमुच मुझे शर्म नही आती । कुल की लाज-मर्यादा शराब मे डूबते देखती रही और मर नही गई, सचमुच मुझे शर्म नही आती । घोड़ों की टापो के नीचे घर की सारी सम्पदा और सुख-शाति को कुचला जाते देखती रही और कुछ न बोली । इतनी बेशर्म को अब शर्म कस आ सकती है ।

मोती—देखा, क्या कैंची की तरह जीभ चला रही है—अब बदतमीज, बन्द कर ज़बान । [बैठता है]

लेखा—और आज अपने कलेजे के टुकड़े को चीखते चिल्लाते देख रही हूँ । उसके लिये अपने पतिदेवता से डाक्टर लाने की प्रार्थना करने आई हूँ । [तीखे व्यंग्य से] सचमुच है तो शर्म की बात । शर्म अगर आती, तो उसे मरता देख कर भी आपके इस महान् पुण्य-कार्य मे क्यों कोई बाधा डालती ?

[लेखा को सरोषदृष्टि देख घोष अपने थैले मे पान की डिबिया और बटुआ रखता है ।]

मोती [क्रोध मे कुर्सी से खडा होकर]—लेखा, आज तुम्हारा दिमाग खराब तो नही हो गया ? [फटकार कर] मै कहता हू, जाओ, सीधी तरह चली जाओ, वरना मुझ से बुरा कोई नही। आज बरसों की अभिलाषा पूरी होने की शुभ घडी आई तो तू आ धमकी। ट्रिपिलटॉट जीतने की सारी योजना मिट्टी मे मिला दी। [जोर से चिल्ला कर] बदतमीज बेशर्म। बदबख्त। [पैर पटक कर] अबे, जा चली जा यहां से, सहन की भी कोई सीमा है।

लेखा [दृढता से]—सचमुच, सहन की भी कोई सीमा है। अब मेरे सबर का बान्ध टूट चुका है। विवश हो कर मुझे मुंह खोलना पड़ा। घोष दादा, इस तरह कोई भी नारी अपने घर में आग लगते नही देख सकती। कलेजे पर मै कब तक पत्थर रखूं। माफ कीजिए। आप लोगो ने मेरा घर उजाड दिया। लाखो की सम्पत्ति इसी रेस की आग मे स्वाहा हो गई। आप लोग क्या अब मुझे घर-घर की भिखारिन बना कर ही दम लोगे।—क्या तभी आप की छाती ठण्डी होगी।

घोष [खिसीयानी मुद्रा मे]—हम ने क्या किया बाई। हम तो ..

मोती [लेखा को हल्का सा धक्का दे कर]—सिर पर भूत सवार है क्या। उतारूँ अभी ? चल यहा से—[धकेलता है] मर जा कही और जा कर।

लेखा—आपने कुछ नही किया ? आपने ही तो रेस का चस्का लगा कर इन्हे मिट्टी मे मिला दिया। मेरा सारा ज़ेवर भी इसी रेस मे—इन कितबियो में—इन रेस-बुकों में [उन्हें उठाने बढ़ती है] हमारे

घर की खुशी का मरघट सो रहा है। मेरी बरबादी की जिम्मेदारी तुम लोगो पर—तुम जैसे हितैषियो पर है।

मोती [तेजी से रोक कर]—इनको हाथ लगाया तो अच्छा न होगा। इन लोगो को कुछ भी कहा तो · सहन की भी कोई सीमा है।

लेखा [पुस्तके उठा कर फेकती है]—सहन की भी सीमा है। तभी तो अब तक सहती रही। [कडक कर] कृपा करके चले जाइये, यहां से। कभी कदम भी रखा तो इस घर मे।

[दोनो घबरा कर उठते है]

मोती—जानवर की बच्ची, मेरे दोस्तो का अपमान। आज तेरी शामत आई मालूम होती है ! [कुर्सिया हटा कर क्षिप्रता से झपटता है] तेरा दिमाग ठीक ही कर दूं। मै तो कहता था [सिर पर दो-एक चपत मारता है] औरत पर क्या हाथ उठाऊँ। [चोटी पकड़ कर खीचता है]।

लेखा [चीखते चिल्लाते हुए]—आज मार भी डालो तो भी रेस नही खेलने दूंगी।

[परमजी और घोष बाबू थैला और छड़ी उठा कर भागते है। लेखा सब पुस्तके, कागज तितर-बितर कर देती है]

मोती [लात, घूँसे मारते हुए] ले मरना ही चाहती है, तो ले और ले। [मारते हुए] तेरी हड्डी-पसली आज बिना तोड़े [धकेलता है, लेखा संभलती है।] चैन नहीं लूंगा।

[लेखा चीत्कार करती है। कभी हाथ पर उस का वार रोकती है, कभी सिर को बचाती है। चीख-पुकार सुन कर सहजो भागी आती है।]

सहजो [बचाने दौडते हुए]—सेठ बाबू, सेठ बाबू ए काय कर तो। मारना चांगला नाही। बाई को मारना···।

[बीच में पड कर छुडाती है]

मोती [फटकार कर]—भाग यहाँ, से नहीं तो ·।

[सहजो कापती-डरती पीछे हटती है। लेखा रोती-सिसकती साडी के पल्ले से आसू पोछती और सहजो उसकी बगल में करुणाजनक मुद्रा से सहानुभूति प्रकट करती भीतर की ओर प्रस्थान करती है। मोती बडबडाता हुआ रेशबुक्स समेटता रह जाता है ।]

[जवनिका-पतन]

— ० —

तीसरा अङ्क

[**स्थान**—उसी मकान के ड्राइंग-रूम की खाली छत, जिसके सिरहाने दक्षिणोन्मुख दो दरवाज़े और तीन खिडकियो वाला लम्बा कक्ष। इस के बायी ओर पश्चिमोन्मुख दो छोटे-छोटे, एक-एक द्वार वाले कमरे और ऊपर आने के लिए जीना, जो भीतर की ओर से छत पर आता है। जीने के किवाड सटे हुए बन्द और शेष कमरो के खुले, अधखुले बन्द कक्ष के सामने वाली मुंडेर पर गज भर ऊची झरोखेदार दीवार, जिस के अंतिम सिरे पर सड़क की ओर से आने वाला जीना। जीने के किवाड बन्द। बडे कक्ष की दीवार मे, बीच की खिडकी के एक-डेढ गज़ ऊपर, बिजली की प्रकाशित बत्ती। छत पर एक निवारी पलग और बानो वाली दो खाटे। इधर-उधर दो-तीन कुर्सिया, एक छोटी चौकोर कश्मीरी काम की चाय-मेज। एक छोटी-सी तिपाई पर सुराही, पश्चिमी मुडेर की, जंगले मे सुरक्षित चौकी पर, शीशे के तीन-चार गिलास, एक-दो खाली सोडा-बोतले—सब अस्त-व्यस्त और बे-सिलसिले।

समय—रात के नौ साढे नौ बजे। मौसम कल जैसा ही सुहाना और सिहरन-भरा। स्पष्ट खुला-धुला नीला तारो से जगमग आकाश। पवन मे धीमी-धीमी गुलाबी शीतलता। आधी रात होते-होते समीर मे मंद सुगंधि बिखर जाती है। शुक्ल पक्ष का प्रथम सप्ताह चल रहा है। पर्दा उठते ही बिल्लू एक कुर्सी पर और पम्मी हाथ में एक खिलौना लिए निवारी पलग पर बैठे, नीद मे ऊघते हुए, और नीली साड़ी और चोली पहने और दो वेणी कमर पर डाले लेखा खाट पर बिस्तर बिछाते हुए दिखाई देती है।]

बिल्लू [ठिनकते हुए]—इहिं-इहिं अं-अं मम्मी।

लेखा—[दौड कर मनुहारते हुए] मेला लाजा बेटा, बस हो गया

बिस्तर। [फिर बिस्तर ठीक करती है] मेला लाजा बेटा छोएगा।

बिल्लू—अम तो ना, अमे तो नीद आ लई है।

लेखा—अभी से नीद ? हिष्ट। देखता नहीं, अभी तो पम्मी भी जाग रही है।

पम्मी [नीद मे ऊघते हुए]—मम्मी, मुझे तो नही आ रही नींद [जम्हाई लेती है] मैं अच्छी ऊँ ना ?

लेखा [दौड कर पम्मी को चूमते हुए]—बहुत अच्छी। [बिल्लू को चूम कर] मेला लाजा बेटा बिल्लू—बला अच्छा ! [फिर बिस्तर ठीक करने लगती है।]

बिल्लू [ठिनकते हुए]—मम्मी तू तो देल कलती है—उहुँ-उहु। मै मैं इचकूल नही जाऊँगा कल।

लेखा [बिस्तर बिछा कर बिल्लू को गोद मे उठाते हुए]—दूध नहीं पियेगा ?—नही तो सब बिल्ली पी जायगी। [उसे खाट पर लिटाती है]

पम्मी—आ मम्मी, मै पी जाऊँगी—बिल्लू को नहीं दूँगी।

बिल्लू—अम तो नही पियेगे। अमै तो नीद आ लइ है।

लेखा [बिल्लू की ठोडी हिलाकर दुलारते हुए]—इत्ती जल्दी नीद ? बला आदमी नहीं बनेगा ? बले आदमी इत्ती जल्दी नही छोया कलते। तेले पापा कब छोते हैं, इत्ती जल्दी ?—रोज़ आधी रात बीतने पर आते है। बनेगा न बला आदमी ? [बिल्लू हा का सिर हिलाता है] दूध पीकर सो जाना।

पम्मी [उसी स्वर मे, बिल्लू की चारपाई पर आते हुए]—मम्मी मैं बी सोऊँगी।

लेखा [पम्मी के पैर पोछते हुए]—अरे-रे-गन्दे पैर—बिस्तर गन्दा ना हो जायेगा।

[पैर पोछ कर सामने के छोटे कमरे मे प्रस्थान]

बिल्लू—मेली डॉली—मम्मी।

लेखा [नेपथ्य से]—आई।

पम्मी [बिल्लू को चिढाते हुए]—डॉली तो मल गई तेरी।

बिल्लू [पम्मी को हाथ से धकेलते हुए]—तेला मुन्ना मले। मेली डॉली क्यो मले।

पम्मी [बिल्लू को धकेलते हुए]—डॉली मले। मेरा मुन्ना क्यों मरे ?

बिल्लू [रुआसी सी वाणी मे चिल्लाकर]—म-अ-म्मी, मुझे यह पम्मी मालती ऐ।

लेखा [दो गिलासो मे दूध लिये आती हुई]—ना पम्मी। लड़ते नही बेटा। [पास आकर] लो, दोनो दूध पी लो और सो जाओ।

[दोनो को एक-एक गिलास देकर छोटे कमरे की बत्ती बुझाने जाती है]

बिल्लू [दूध हाथ मे लिए-लिए बिना पिये]—मम्मी, मेली डॉली ? वह वी तो पियेगी दूध।

लेखा [कमरे से आते हुए]— तेरी डॉली के मारे तो नाको दम है। [चौकी पर पडी डॉली उठाकर देते हुए] ले, पिला दे डॉली को दूध। [डॉली के मुह से गिलास लगाते हुए] बछ, पी लिया। [डॉली को बिस्तर पर लिटा देती है] जल्दी-जल्दी पी जा, नही तो पम्मी का मुन्ना पी जायेगा। [बिल्लू पीते-पीते इकार की 'उह' करता है] अच्छा, अच्छा नहीं पियेगा।

पम्मी [दूध पीकर गिलास देते हुए]—**मेरा मुन्ना बिल्लू का जूठा दूध क्यों पियेगा।**

बिल्लू [गिलास देते हुए]—**मैं उछे दूगा ही नही अपना दूध।**

लेखा [हँसते हुए]—**शाबाश! मुन्ना को क्यो दे?** [गिलास नीचे रखकर दोनो को लिटाते हुए] **बस, अब दोनो सो जाओ। लड़ना मत। यहा छोयेगी बिल्लू राजा की डॉली** [डॉली को थपथपाती है] **और यहां सोयेगा पम्मी का मुन्ना।** [उसे भी लिटा कर थपथपाती है] **आजा री निंदिया।** [बिल्लू और पम्मी को थपथपाते हुए पद्यात्मक स्वर मे] **आ जा री निंदिया, तू आ क्यों ना जा री। चन्दा के देश से, तारों के देश से, तू आ जा री निंदिया! बिल्लू को आके सुला जा री निंदिया! पम्मी को आके सुला जा री निंदिया!** [उठते हुए] **मैं अभी आई। तुम दोनों सो जाओ।**

दोनों [रूठते हुए से]—**अम तो नइ।**

लेखा [दोनो को दुलारते हुए]—**तुम दोनों तो राजा बेटे हो। राजा बेटे इस तरह नही करते।**

[लेखा बड़े कक्ष मे प्रस्थान करती है। दोनो कुलबुलाते हैं। लेखा भीतर की बत्ती जलाती है, जिसका प्रकाश खिडकियो की जाली से बाहर भी आता है। पम्मी मुन्ना को, बिल्लू डॉली को संभालता-सहलाता है]

बिल्लू [डॉली को आलिंगन करते हुआ]—**मेली डॉली कितनी अच्ची।** [हिलाता-डुलाता है। डॉली का हाथ मुन्ना को लग जाती है]

पम्मी [मुन्ना के हाथ से डॉली को हल्की सी चपट लगवा कर]—**हट, मेरे मुन्ना को मारती है।** [हल्का सा धक्का देकर] **हट परे।**

बिल्लू [मुन्ना को डॉली से लात लगवा कर]—**तू हट उधल को।**

[धकेलते हुए]—चल जा छे—भाग। छोल मेली जगै। मेली डॉली छोयगी।

पम्मी [डॉली को कचोट कर]—इसे हटा उधर को। मरी आई कहां से—[झिडक कर] चल भाग।

बिल्लू [मुन्ना को लाते मारते हुए]—यह कहा छे आया मला। [लात मारता है] हट, यहा छे भाग।

पम्मी [रुआँसे स्वर मे चिल्ला कर]—मम्मी, बिल्लू नइ मानता। मुन्ना को मारता है।

बिल्लू [चिल्ला कर अनुरोध-भरे स्वर मे]—यह पम्मी डॉली को माल्ती है मम्मी।

लेखा [नेपथ्य मे]—अभी तो नींद-नींद कर रहे थे, अब लडना शुरू कर दिया। एक मिनट के लिए भी चैन से नहीं बैठोगे ? अभी बताती हूँ तुम्हे आकर।

पम्मी [चिल्ला कर]—यह तो मारता है, मुन्ना को [डॉली को नोचती-खसोटती है]।

बिल्लू [मुन्ना की टाग पकड कर खीचते हुए] इछे माल दूँगा। इछे जान से माल कर छोलूँगा।

पम्मी [डॉली की टांग पकड कर खींचते हुए]—मैं भी इसको मार डालूंगी। इसे-इसे—[डॉली की कमर पर चपते मारती है] इसे आज मार कर·· ।

[पम्मी डॉली का फ्रॉक नोचती है। बिल्लू मुन्ना की टाग खींचता है और उसकी कमर पर चपतें लगाता है। दोनों रोते-से स्वर में, 'मम्मी-हाय मम्मी' कह कर चिल्लाते है। डॉली का फ्रॉक फट जाता है, उसका एक छोर पम्मी के हाथ में है। मुन्ना की टांग

जड से निकल जाती है, जो बिल्लू के हाथ मे है। दोनो रोते, एक-दूसरे को झकझोरते, नोचते-खसोटते है। लेखा भीतर से कपडे बदल, साडी-चोली उतार सलवार-कमीज़ पहन कर प्रवेश करती है।]

लेखा [दोनो को उलझता देखकर झपटते हुए]—अर-र-र डॉली मरी। हाय मुन्ना की टांग टूटी। पम्मी, छोड़ फ्रॉक—अरे बिल्लू टांग छोडो। [दोनो को छुडाते हुए] इस तरह लड़ते हैं। बुरी बात। छी छी अरे बालक।

बिल्लू [रुआँसा होकर]—मेली डॉली का हाथ टूट गया। लोटी कैछे खायेगी।

[दोनो को अलग-अलग लिटाती है]

पम्मी [टाग सहलाते हुए]—हाय—हाय ! मेरे मुन्ना की टाग। अब यह कैसे चलेगा।

लेखा [दोनो को चुमकारते-पुचकारते हुए]—रोओ मत। अभी, ठीक हो जायगी छू मन्तर। [डॉली को लकर फूंक मारती है—उसका हाथ सहलाती है] अब ठीक हो गई। पम्मी बुली, बुली, डॉली का हाथ तोल दिया था। [मुन्ना को लेकर फूक मारती और उसकी टाँग जड मे बैठा देती है। उसे सहलाते हुए] इसकी टाग भी ठीक हो गई ! बिल्लू ने बड़े ज़ोर से खीची। अब ठीक हो गये दोनो—हाँ, इस तरह कभी मत लड़ना—राजा बेटे कभी नहीं लड़ते हैं।

पम्मी [मुन्ना को प्यार करते हुए]—और क्या, मालूम नइ पापा मम्मी को कितना मारते हैं ? ऐसे तुझे मारेगे, जो कभी लड़ेगा तो। बड़े बुरे हैं पापा।

लेखा [बरजते हुए]—हिष्ट ! ऐसे नहीं कहते—बुरी बात।

बिल्लू—मम्मी, पापा क्यों मालते हैं तुझे ? तू तो किछी छे कबी लराई नइ कलती ।

लेखा [जैसे किसी ने पका घाव छू दिया हो—एक निःश्वास छोड कर]—मैं बुरी हूं न बिल्लू—बुरे आदमी तो पिटा ही करते हैं। तुम बुरे न बनना। पापा बहुत अच्छे हैं।

बिल्लू [लेखा की जाघ से लिपट कर]—तू तो मेली अच्ची मम्मी ऐ—पापा बुले ऐ ।

पम्मी [चिपट कर]—मम्मी ना। तू तो अच्छी मम्मी है।

[दोनो प्यार से लेखा के गले मे हाथ डालते है। लेखा उन्हे कस कर कलेजे से लगा, व्यथित हो, चूम लेती है। उसकी आंखें भीग उठती है।]

लेखा [भरे गले से]—तुम बहुत अच्छे हो! तुम मुझे प्यार करते हो न? [चूम कर] मेरे कलेजे के टुकड़े!

बिल्लू [प्यार से लिपट कर]—मम्मी मैं बोत पीआल कलता हूँ।

लेखा—पम्मी तू भी करती है?

पम्मी—मै मम्मी तुझे बिल्लू से जियादा प्यार करती हूं।

बिल्लू—पापा तुजे मालेंगे तो मैं उन्हे पीआल नही करूंगा।

पम्मी—आज भी मारा था पापा ने।

बिल्लू [चुमकारते-पुचकारते हुए]—मम्मी लो मत। मैं बला होकल पापा को खूब मालूंगा।

लेखा [होठो पर निषेधात्मक उँगली रख, भय-आशंका, निःश्वास के साथ]—हुश्श! ऐसी बुली बात! लाजा बेटे ऐसी बुली बात नहीं कलते। ऐछी बात कहनेवाले से लामजी लूथ जाते हैं। अब कभी

ऐछी बात नहीं कहना । पम्मी तो ऐसी बात नहीं कहती । [निश्वास लेकर] हे भगवान् !

[बिल्लू कुछ हताश होता है ।]

पम्मी—हां, मम्मी मैं तो कभी नहीं कहती ऐसी बुरी बात । पापा को मारना तो बुरी बात है । मैं पापा को कभी नहीं मारूंगी । मैं अच्छी हूं न ?

लेखा [प्यार-दुलार से]—बुहुत अच्छी ! बिल्लू भी बहुत अच्छा है । अब कभी बुरी बात नहीं कहेगा । ऐ—अब ना कहना ।

बिल्लू—मम्मी, मालना बुरी बात है तो पापा तुझे क्यों मालते हैं ।

लेखा—तू अपने पापा से मना कर देगा, तो वह नहीं मारेंगे । वह बहुत अच्छे आदमी है । और बिल्लू, जब तेरी शादी हो जायगी और [गुदगुदाते हुए] तेरी छोती-सी बहू आयगी तो मारेगा तो नहीं उसे ?

बिल्लू—मैं कबी नईं मालूगा ।

लेखा [प्यार से चूम कर]—मेला बिल्लू बहुत बला लाजा बेटा । [फिर चूमती है] मेला लाजा बेटा ! बिल्लू [उठा कर हाथों मे उछालते हुए]—बहुत बला । कडुये नीम से बड़ा !

पम्मी—मम्मी जब मेरी शादी होगी, तो मैं भी अपनी बऊ को नहीं मारूंगी ।

लेखा [उदास मुख, रुआँसी पलकों से खिलखिला कर, उसे चूमती है]—पगली ! अच्छा, अब दोनो सो जाओ । नहीं तो स्कूल कैसे जाओगे कल सबेरे ? [दोनो की कमर सहलाती है]

पम्मी—मम्मी, इधर-इधर खाज । [कमर दिखाती है, लेखा खुजाती]—
लेखा [दोनो को सहलाते हुए] आ जा री निंदिया तू आ क्यों ना जा री !

चन्दा के देश मे से, तारो के देश मे से, आ के तू इनको सुला क्यो न जा री।

[दोनो कभी करवट लेते, कभी बुलबुलाते, कभी चित, कभी पट लेटते, नीद के नशे मे बेसुध होते जाते है। लेखा उठ कर जीने के किवाड़ लगा खाट पर आ लेटती है। एक-दो मिनट घर मे मौन रहता है। कभी-कभी सड़क पर भौकने वाले कुत्तो का शब्द सुन पड़ता है। जीने से ऊपर आते हुए किसी के पदचाप का शब्द सुन पड़ता है। लेखा चौकन्नी हो उठ बैठती है। फिर अपरिचित टिक-टिक और पट-पट होती है। लेखा धीरे-धीरे किवाड़ो के पास आ कान किवाड से लगा कर सुनती है। आगन्तुक पास आकर फिर किवाड खटखटाता है]

लेखा—[धीरे से]—कौन ?

आगन्तुक [पद्यात्मक स्वर मे]—अजी हम है। खोलिये भी मंदिर के द्वार। कब से रहे हम पुकार।

लेखा [अपरिचित स्वर सुन कर तनिक सहमी-सी वाणी मे]—कौन है आप ?

आगन्तुक [पद्यात्मक ढंग मे]—अजी खोलो भी किवार, सुनो अरज हमार ! [गद्यात्मक] तब काम बतायेगे।

लेखा [धक्-धक् हृदय और कम्पित वाणी और तीव्र स्वर मे]—कौन है आप—बताते क्यो नही ?

आगन्तुक [दृढ मरदाने स्वर में]—जानकर भी यो अनजान न बनिये साहब, हम वही है, आपके चिरपरिचित, प्रेमी, सखा, मित्र और न जाने क्या-क्या। अब खोल दो।

लेखा [रोषभरे तीव्र स्वर मे]—कौन है तू, इस प्रकार आधी रात गये। अभी पुलिस को बुलाती हूँ। नहीं तो, भाग जा अपनी जान लेकर यहाँ से। वे आ गये, तो जान से मार डालेंगे।

आगन्तुक—आधी रात गये ही तो मिलन का आनन्द है। पुलिस को बुलाइये, चाहे कुछ कीजिए, पर हम टलने वाले नही, मिल कर ही जायेगे। पुलिस को बुलाइये, गिरफ़तार करवाइये। अच्छा है, आपकी-हमारी प्रेम-कहानी जग-भर मे प्रसिद्ध होगी। बुला लो न पुलिस।

लेखा [क्रोध से]—चुप अशिष्ट-आवारा। चल, रास्ता नाप। वरना ·।

आगन्तुक—वरना-वुरना कुछ नही [थोडा परिवर्तित स्वर में] साहेब हम तो इतना ही जानते हैं कि हमे देखते ही आप लिपट जायेगे। क्या अब भी नही पहचाना ? लगता है, जान कर भी मान किये बैठे है।

लेखा [पहचानने की चेष्टा करते हुए]—नही पहचाना, नहीं पहचाना। न पहचानने की आवश्यकता। पहले नाम बताओ—काम बताओ। सीधे यहां से चले जाओ।

आगन्तुक [परिवर्तित नारी-स्वर मे]—अरे क्या सचमुच ? खोलो भी, यहां तो गर्मी के मारे पसीना-पसीना, उफ़ ! ऐसे निठुरो से प्रेम करके भला कौन चैन पा सकता है। [और भी स्वाभाविक स्वर मे] अब प्यार उमड आया होगा—कलेजा धक्-धक्। पहचाना कि नही ?

लेखा [स्वर पहचान कर हल्की-सी मुसकान और बनावटी रोष के साथ]—कौन हैं आप श्रीमान् जी, अपना नाम-धाम पता-मुकान बताइये, या जेल की हवा खाने को तैयार हो जाइये। जेल मे जब चक्की पीसनी पड़ेगी, तो होश आ जायगा। आधी रात किसी अकेली नारी को तग करने का मज़ा मिल जायगा।—चले हैं प्रेम करने !

आगन्तुक [स्पष्ट नारी स्वर मे बनावटी भय से]—पुलिस ' बाप रे बाप ! प्रेम का यह पुरस्कार। अपने प्रेमी को जेल भेज कर क्या मिलेगा ··? कलेजा वज्र का बना है तुम्हारा !

लेखा--पुलिस का नाम सुनते ही बगल झांकने लगे [द्वार खोलती है]
वाह रे कलजुगी प्रेमी !

[दोनो कहकहा लगा परस्पर कस कर आलिंग करती है]

लीला—हम कहते थे न कि जनाब देखते ही लिपट जायेंगे।

लेखा—सचमुच, तुम्हारे प्रेम मे वह जादू है।

[लेखा जीना बन्द करती है। दोनो परस्पर बगलो में हाथ डाले पलंग तक आती है।]

लीला—क्यों जीजी, कैसा छकाया? पहले तो एकदम धक् से रह गई होगी।

लेखा [प्यार से गालो पर चपत लगाते हुए]—तू है बड़ी शैतान और यह स्वर बदलना कहां सीखा? बिल्कुल मर्दों वाली आवाज़। मैं तो समझी, सचमुच कोई बदमाश ... ।

[दोनो बैठती है]

लीला—फिर समझा होगा, वे आ गये। कलेजा धक्-धक्! [हाथ दवा कर] उई !

लेखा [व्यग्यात्मक भाव से]--हमारे वे भला, कभी इस प्रकार धोखा देंगे। कदापि नही। वे ठहरे परम पत्निव्रती। दस वर्षों के जीवन मे उन्होने कभी इस विषय मे धोखा नहीं दिया। हमेशा रात के बारह बजे के बाद दर्शन देते हैं। यनी इतना निश्चित और सही टाइम है आने का, लोग घडी मिला लें अपनी। मजाल जो कभी दो मिनट भी पहले आ जाये। [हाथ दबाकर प्यार से] वह तुम्हारे वे होंगे जो नौ बजे ही घर मे आ घुसें--रानी जी के बिना बाहर जी ही नही लगे।

लीला– सच, प्रतीक्षा में कितना सुख है जीजी! धडकन-भरे हृदय से

पथ मे पलके बिछाये रहो । सासो से समय की चाल गिनते रहो । आकुल रोमांच, पुतलियों मे नाचती तस्वीर, ज़रा पत्ता हिला कि कि कलेजा धक्-धक्--वह आये । दरवाज़ा टिकटिक कि मीठी-मीठी गुदगुदी । अपलक नयनो से आशा लगाए रहने मे जो बेताबी-भरी सिहरन है । [भावुकतावश लेखा की कलाई पकड लेती है] मान-मनौबल मे जो रस है, उपालम्भ-अनुनय मे जो आत्मीयता है—वही जीवन है, जीजी !

लेखा—और यही रस, यही आकुलता, यही गुदगुदी-भरी सिहरन, यही धक् धक्--यही अपलक प्रतीक्षा—और इन सब मे मिलने वाला अनुपम अलभ्य सुख, मैं दस वर्षों से समेट रही हूँ लीला ! मै कितनी सौभाग्य-शालिनी हू ! अब तो आशंका भी होने लगती है, कि कही इस परम अलौकिक दुर्लभ सुख से वंचित ही न कर दी जाऊँ । [गीली वाणी मे] यह सुख संभाले, नही संभलता—पचाये, नही पचता । सुख का भी अजीर्ण हो जाता है, लीला । ऐसे अवसर पर पीडा ही ओषधि बन जाती है । पर तुम्हारे लिये ऐसे सुख की क्षणमात्र भी दुष्कामना नहीं कर सकती ।

लीला [दुलारभरे अनुरोध से]—यह क्या निराशावादियों वाली बाते करने लगी जीजी ! हटो, हमे ये बाते अच्छी नही लगती ।

[सहसा बिजली ऑफ हो जाती है । क्षण-भर दोनो अप्रत्याशित घटना मे चकित-सी देखती रह जाती है ।]

लीला [उठकर जंगले मे सड़क पर झाकते हुए]—अचानक यह क्या ! अंधेरा ही अंधेरा । [विस्मय-भय का अभिनय करते हुए] जीजी, ओह ! इतना सघन अंधकार है—कुछ भी नहीं दीख पाता । [आकर पास ही खड़ी हो जाती है]

लेखा [खड़ी होकर]—प्रकाश का अवसान—अंधकार का आगमन ।

कितनी मोटी तह जमी है। अंधकार को प्रकाश पी जाता है---फिर प्रकाश ही प्रकाश। तब जीवन मे दोनो ही यथार्थ है। जीवन-रथ के पहिये हैं प्रकाश और अधकार, जिनपर लुढकता वह बीत ही जाता है। और फिर अंधकार-प्रकाश की आख-मिचौनी समाप्त। चिर पुंजीभूत अंधकार---जड तुहिन के समान जम जाता है। उस के नीचे जीवन की समस्त हलचल सो जाती है। विजय तो अंधकार की ही हुई—तब अंधकार ही चिरन्तन हुआ। [सड़क की ओर देखते हुए] सच, लीला बहुत गहरा अधकार है। उफ़! इतना नि स्पन्द तम---!

लीला---मै कहती थी न—सडक पर भी।

लेखा---पथ पर भी अंधकार, तब संचरण कैसे जारी रहेगा---सूनापन। और अभी तो बहुत रात शेष है। सावनी अमावस की-सी काली रात।

लीला [चुटकिया बजाते हुए]---ना-ना जीजी, पल मे फिर आई बिजली— फिर वही जगमग, वही प्रकाश, वही चहल-पहल, पुतलियो के सामने दूरी की अनन्त सीमाये—आखो की वही दौड। अब आयी बिजली।

[सहसा जो सघन अधकार हुआ था, वह तारो की किरणो और पास के मकानो की खिडकियो के पर्दों से छन-छन कर जाने वाले झीने प्रकाश से पतला हो जाता है। छत पर पड़ी चीजे दिखाई देने लगती है]।

लेखा [बैठते हुए]—प्रकाश जाकर इतनी सरलता से नहीं आया करता लीला, चाहे वह बिजली का हो, चाहे स्नेहदीप का। जीवन से तो यदि वह एक बार भी चला जाय तो ।

लीला—एक-दम घुप्प अंधेरा तो अब भी नहीं रहा। चाहे, इनको पत्थर के टुकडे ही कहा जाय, सितारो मे भी प्रकाश है, जीजी! ये

स्नेहहीन दीपक भी अधिक नही, तो कुछ-न-कुछ सहारा जीवन को अवश्य देते हैं। सघन अनन्त तिमिर के रेगिस्तान मे सितारों की ज्योति की बूंदे भी पथिकों को जीवित रखती है और वे इसका अवलम्ब लेकर ही आगे बढ़ते जाते हैं।

लेखा—लेकिन जिस सितारे मे प्रकाश नही, वह हमे दीख ही कहां पाता है। तब कौन कहे कि अंधकार मे लीन, तिमिर से निर्मित, सितारे हैं ही नहीं। हर-एक पत्थर प्रकाश दे तो दीपों मे स्नेह कौन जलाए। इसलिए प्रकाश जाकर आ भी जाये, तो भी उसकी वापसी का निश्चय नहीं। उसका लौट आना विस्मयपूर्ण आनन्द है, लौट कर न आने मे आश्चर्य नही—वह प्रत्याशित है।

लीला [उठ कर फिर सडक पर झांकती है]—नहीं जीजी, बिजली अब आई। कहीं ठीक करने लगे होंगे। सडक पर तो रोशनी आ गई [लेखा उठ कर झांकने लगती है] लाईन फ्यूज़ नहीं हुई, ऐसा लगता है।

लेखा—हां। नीचे पड़ोसियो के मकानो मे भी प्रकाश हो रहा है। वह तो हमारे घर का ही प्रकाश पलायन कर गया है—सभी घरो मे ज्योति मुसकरा रही है। वह दूर तंग गलियों मे भी प्रकाश की धारा बह रही है। हे भगवान्, यह अंधकार—यह प्रकाश। [एक बार सडक की ओर झांक कर, फिर घर की ओर देखती है] तिमिर-नीड में मन कितना बेचैन होता है, जब विश्राम-क्षणों मे पंछी प्रकाश की प्यास से छटपटाता है।

लीला—फ्यूज वायर जल गया मालूम होता है। तब तक मोमबत्ती। होगी घर में या मैं लाऊं ?

लेखा [कक्ष की ओर जाते हुए]—होनी चाहिए। [कक्ष में प्रवेश] तालाश करती हूं।

[लेखा कक्ष मे टटोलते हुए खिडकी से दियासलाई उठा कर जलाती है। जिसके प्रकाश की झलक खिडकी की जाली से बाहर छत पर भी कौंध जाती है। लीला कभी सडक पर, कभी आकाश पर देखती है। भीतर की ओर नीचे उतरने वाले जीने मे टटोलती-टकराती सहजो ऊपर आती है]

सहजो [ज़ीने से ऊपर आते हुए]—बिजली बुझ गेली बाई। हमारा लोग को कितना मुश्किल से ऊपर का रास्ता मिला। अधकार ही अंधकार। [प्रवेश] हे भगवान्, हमारा हिर्दय तो अब तक धक्-धक् करतो। काय झाला बिजली को ?

लीला—सहजो ! अभी तक यही ?

सहजो—हां बाई।

लेखा [कक्ष के भीतर दियासलाई जलात हुए]—काम तो समेट लिया न ? बरतन-भाण्डे· ।

सहजो—हां, बरतन-भाण्डे तो साफ केले। [लेखा मोमबत्ती लिए बाहर आती है] चौका धोना शेषे है। थोड़ा बर्तन भी अभी ।

लेखा [खिड़की की चौखट पर मोमबत्ती जमाते हुए] यह ले माचिस [दियासलाई उसकी गोद मे फेकती है] भीतर कानस पर मोमबत्ती रखी है। एक मोमबत्ती जलाकर ले जा और जल्दी छुट्टी कर।

सहजो [कक्ष मे प्रवेश करते हुए]—काम अधिक नहीं रहा। दो-चार भाण्डे और [कमरे से] रसोई धोना—फटाफट दो हाथ मारे, रसोई साफ।

लीला [पास आते हुए]—मोमबत्ती मे भी कम प्रकाश तो नही होता जीजी ! और जब मन्द समीर की गुदगुदी पा कर ज्योति-शिखा अंधकार की गोद में कांपती है, तब तो वह रूप आता है, कि बस, बस लिपट जाऊँ उसे।

लेखा [हल्की फीकी मुस्कान से]—यह नाचती हुई रूप की अग्नि-शिक्षा ही तो उन दीवाने शलभों की मौत की जिम्मेदार है। शलभ कैसे उमड़-उमड़ कर आते हैं—किस बेताबी से ज्योति-शिखा का आलिंगन करते है और क्षण-भर मे उनकी चिता की राख की ढेरी ! जीवन और मौत का खेल खेलना तो सचमुच, शलभ ही जानते हैं।

[सहजो जलती मोमबत्ती हाथ की आड मे लिए बाहर आती है]

लीला [प्यार से फुदकते हुए लेखा का हाथ दबा कर]—तुम तो जीजी, ग़ज़ब की कविता करने लगती हो।

[सहजो धीरे-धीरे ज़ीने मे उतर जाती है]

लेखा [आश्चर्य और उदासीनता से]—कविता ? तुझे इसमे कविता दीखती है, मुझे तो नही—कविता की झलक तक नही। ज्योति-मुसकान का परिणाम है सैकडों पतंगों की राख और उस राख को भी तो पवन के पैरो की ठोकर क्षण भर मे निर्दयता से बिखरा देती है—पतंगो के पागलपन का निशान भी तो नही रहने पाता।

लीला—लेकिन वे पतगे अगर किसी तिमिर-कक्ष मे प्राण देते, तब क्या उनके प्रेम की गाथा इस प्रकार तुम कहती ?—तब उनकी चिता की राख के विस्मरण का प्रश्न ही कहा ? ज्वाला से आलिंगन करके प्राण देने मे ही तो उन्होंने अमर जीवन पाया। मैं कहती हूँ, उन्हें उनके उत्सर्ग का मूल्य मिल गया। [मोमबत्ती की ओर संकेत करके] देखो न, जीजी, किस तरह पिघल-पिघल और बह-बह कर आग के आसू शलभ की चिता पर तर्पण कर रहे है। शलभ को मौत का मूल्य और क्या चाहिए ? यही तो मौत पर जीवन की महान् विजय है।

लेखा—काश ! इन आंसुओ मे आग की जलन शीतल हो पाती ! शलभ ने अपने को आग में एक-रूप कर दिया—लौ और भी प्रज्वलित हो फड़क उठी। तब क्यों न समझा जाय कि इन आँसुओं में

शलभों का पुञ्जीभूत स्नेह पिघल-गल कर बह चला है। अग्नि-शिखा की करुणा नहीं।

लीला—निज मे जलने की साधना जगाये रख कर ही पर मे चिन्गारी चेताई जा सकती है और दो चिंगारियो का आलिंगन ही स्नेह बन कर बह निकलता है। दो चिंगारियों का एकाकार हो जाना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है और सिद्धि भी।

[पम्मी और बिल्लू स्वप्नावस्था मे बडबडाते और बुलबुलाते है। दोनो उठकर उनको संभालती है]

लेखा [पछतावे और असफलता की ठण्डी सास छोड, बिल्लू-पम्मी को थपथपाते हुए]—काश, यह चिंगारी हर कोई चेता पाता—अपने मे जगा पाता [लीला चादर ठीक करती और उनकी कमर सहलाती है] लेकिन यदि कोई पर मे चिंगारी न चेता पाये, तो दोष किसका है, निज का या पर का ?

लीला—सचमुच, प्रश्न बड़ा जटिल है जीजी !

पम्मी [बडबडाते हुए]—मे-आ मुन्ना, तू बिल्लू · मैय माऊ · ।

[लीला हल्के-हल्के थपथपाती है]

बिल्लू [करवट बदलते हुए]—मंय · · मं · मं · · मी · · दूव · · · · मम्मी मम डॉली · · ।

लीला [थपथपाते हुए पुमपुम वाणी मे]—छोजा-छोजा। बड़े लड़ते हैं—सपने मे भी।

लेखा [सहलाते हुए]—दिन-भर झगडते हैं—और एक-दूसरे के बिना रह भी नही सकते। पल-भर न मिले तो—सो गये। हे भगवान—बडे शरारती बच्चे हैं।

लीला—बालक ही तो घर का प्रकाश होते हैं। बिना बच्चों के घर सूना।

लेखा—सचमुच, बालको की मोह-ममता ही तो कभी-कभी अनेक पराजित, हताश, निरर्थक जीवनों के लिए जीने का प्रलोभन बनती है।

[सहसा रेलगाडी के एञ्जन की सीटी बजती है। लीला चौंकती है]

लेखा—क्यो चौंक उठी ?

लीला—क्या बजा होगा ?

लेखा—अधिक-से-अधिक पौने ग्यारह।

लीला—साढ़े ग्यारह की गाड़ी से आयेंगे, कह तो यही गये थे।

लेखा [प्रौढ मुस्कान से]—ओहो, बड़ी प्रतीक्षा करनी पड रही है। तभी श्रीमती जी आते ही प्रतीक्षा करने पर स्पीच झाडने लग गई—अब समझी। पर यह तो बात माननी पड़ेगी लीला, तू कवयित्री बनती जा रही है—तेरी वह स्पीच तो कविता है।

लीला [उपालम्भ, प्यार, मुसकान और कृत्रिम रोष से]—खाक है कविता। तुम भी बनाने लगी जीजी ? यह भी कोई बात है—हमारी तो आँखे दर्द करने लगी। इतनी रात गये तक हम से तो नहीं जागा जाता।

लेखा [सरल परिहास-वाणी मे]—वाह री, मेरी नई दुलहन, अभी से यह मान—यह उपालम्भ ! एक ही दिन मे प्रतीक्षा का अलभ्य, अनुपम, दुर्लभ आनन्द समाप्त ! वह सिहरन, वह कम्पन, वह धड़कन, वह रोमाच—सब के सुख का यह तिरस्कार। और यहा तो लीला, जीवन के दस वर्ष—यौवन की कामनाओं-भरे दस वर्ष इसी प्रकार प्रतीक्षा मे गल गये।

लीला—तुम्हारी साधना अनुपम है जीजी ! सभी पड़ौसी तुम्हारे धैर्य, सहनशीलता और त्याग की सच्चे हृदय से प्रशंसा करते हैं। तुम निश्चय आदर्श नारी हो—यथार्थ देवी हो। तुम्हारे-ऐसा धैर्य कोई कैसे पायेगा।

लेखा [तीखे व्यंग्य से]—और इसी देवीपन का पुरस्कार मैं पाती रहती हूँ। तीखे तिरस्कार के लबालब प्याले प्रतिदिन आँख मूँद कर पी जाती हूँ—कभी आनन पर कड़वाहट की लकीरे नही उठने देती।

लीला [पिघलते संवेदनाशील स्वर मे]—जी भारी न करो जीजी! सबल चट्टान के समान स्थिर हृदय इस तरह पिघल कर बहने लगेंगे, तो इस ऊसर रेगिस्तान से संसार मे बाढ़ आ जायगी। इस बाढ़ मे डूबने से कौन बचेगा? सती के आँसुओं मे अपार शक्ति है। इसी लिए वह कभी आँसू नही गिराती। तुम्हारे तप और संयम को देख कर सभी का मस्तक तुम्हारे पवित्र चरणों मे नत होता है।

लेखा [आंसुओ को भीतर ही पी जाती है]—जीवन का यह कितना कड़ा छल है लीला, घर मे झिड़किया, उपेक्षा, अपमान और फटकार और बाहर यह श्रद्धा। यह दुखते मर्म को और भी मसल देता है। उन का यह स्नेह-सद्भाव और भी तिलमिला देता है। जब अपने ही नीड मे एक-एक क्षण विषैला शूक बन, जीवन की हर करवट में बिछा है, तब पंछी किस करवट विश्राम ले! [सिहर उठती है] तुझ से क्या छिपा है, लीला? इन दस वर्षों मे [सिसक उठती है] ...।

लीला [सकरुण अनुरोध के साथ उसे धीरज देते—सभालते हुए]—यह क्या—यह क्या जीजी? [अंचल से उसकी आँखे पोछते हुए] मेरी अच्छी जीजी, जो कभी भी इस तरह अधीर हुई! मैं तो इसलिए आई थी कि अपनी प्यारी जीजी का जी बहलाऊंगी और उन के आने तक ·। और जीजी, जब तुम जैसी आदर्श देवी की यह अवस्था, तो अन्य नारियों का पथ-प्रदर्शन कौन करेगा?

लेखा [आँसू पोछ कर संभलते हुए]—मैं लज्जित हूँ कि अपना दुखड़ा ले बैठी। क्षमा करो। जानती हूँ, यह मेरी बहुत बड़ी निर्बलता है, पर घाव इतना गहरा है—चिरन्तन नासूर बन गया है, वह दह ही

निकलता है। मन छलनी बन चुका है—आँसू टिक नही पाते। अब शायद यह अवसर कभी न आये। मेरे ऊपर तरस खाना लीला—मेरे दीन घावों मे न झाकना।

लीला [द्रवित होकर भीगी पलकों से]—भगवान् करे इन पलकों में अब कभी पानी न देखूँ। पर दीदी, मुझे पराया समझ कर कभी हृदय को छिपाना मत मुझ से। तुम्हारी ममता—तुम्हारा अनुग्रह ही मेरे लिए सब से बड़ा पुरस्कार है।

लेखा—संवेदना और आत्मीयता का तनिक भी स्पर्श पाकर मानस का पका घाव सहसा फूट-फूट पड़ता है—कभी-कभी सयम और लोक-लाज के बाँध भी बह जाते हैं।

लीला—अपनो के सामने ही घाव खोल कर दिखाया जाता है, जीजी! सचमुच, आज मैं अपने को गौरवान्वित मानती हू—[भावुकता के आवेश मे] तुम मुझे इतना प्यार करती हो जीजी ! [आकुलता से उसे आलिंगन करती है] मेरी प्यारी जीजी !

लेखा [चुमकारते हुए]—अब जाओ लीला, गाड़ी आने का समय हो गया। वह आते होगे। सचमुच, मैं अपनी निर्बलता और अधीरता के लिए लज्जित हूँ। [पकड कर लीला को खडा कर देती है]

लीला—तुम्हें इस प्रकार अधीर व्यथित छोड़ कर तो मैं कभी न जाऊँगा। मेरी कसम खाओ दीदी, अब कभी इस प्रकार अधीर न होओगी। [ममता-दुलार भरे अनुरोध से] न होओगी न, जीजी, अब अधीर ?

लेखा [उसके कंधे पर हाथ रख कर जाने के लिए प्रेरित करते हुए]—अब जाओ लीला, मोमबत्ती कितने समय से ज्वाला में जीवन जला रही है। कम्पित अग्नि-शिखा के नीचे क्षण-क्षण क्षीण होती जा

रही है। इसके जीवन का अंतिम पहर आ गया—अवसान तेज़ी से इसे पी जाने के लिए दौड़ा आ रहा है—एक-दो पल में समाप्त। फिर वही अंधेरा—पहले से भी अधिक सघन, जडित और दुर्बोध। वह देखो, वह सुन्दर नील निशीथ का मुर्झाया शीशफूल बालचन्द्र, गगन की गोद से खिसक कर पेड़ो के झुरमुट मे खो गया है। अब जाओ लीला। [चूमती है] अंधेरा बढ़ता जा रहा है।

लीला [जीने मे उतरते हुए]—रूठना मत जीजी ! नही तो कभी नही बोलूंगी।

लेखा [उसके पीछे चलते हुए]—हट, पगली।

[लीला और लेखा का प्रस्थान। भीतर की ओर मे ऊपर आने वाले जीने से मोमबत्ती लिये सहजो का प्रवेश। पम्मी और बिल्लू बुलबुलाते है। सहजो मोमबत्ती चौकी पर जमा कर उन्हें थपथपाती है। लेखा जीने से ऊपर प्रवेश करती है।]

लेखा—काम हो गया ? अब चली है, क्या अपने घर को ?

सहजो [खडी होकर]—जाने की कोई जल्दी नाही—काय तिकडे हमारा आदमी बैठा है ? हमारे लिये तो घर-बाहर बराबर है बाई !

लेखा [पलंग पर बैठते हुए]—आदमी होता तो इतनी देर नहीं लगती यहां ? [सहजो जमीन पर बैठती है] आदमी के पास जल्दी जाना क्या ज़रूरी है ?

सहजो—जब हमारा आदमी जीता था, हम ९ बाजता घर भागता था। वह भी तावडतोड़ घर आता। औरत का घर आदमी से, और आदमी का घर औरत से—नहीं तो घर क्या ?

लेखा [उच्छ्वास लेकर]—ठीक है सहजो ! तुम गरीब मजदूर भी जीवन की इस सचाई को समझते हो।

सहजो—नहीं तो शादी बनाने का कोणि लाभ नाही बाई ! घर मे बाई होने मे, थोड़ी देर भी हुआ, कि सारा आदमी लोग घर भागने लगता है। अपना आदमी के बिना घर चागला लगतो नाही। जब मे हमारा आदमी मरा, घर खाने-खाने-सा लगता है।

लेखा—आधी रात होने लगी। रास्ते मे डर नही लगता ?

सहजो [हँस कर]—हम तो बूढा मानस—हमको कोणि पकड़ लेगा ? और अभी तो ट्राम चलता है।

लेखा—रात मे आराम करना चाहिए। सुबह फिर भी काम पर आता है न ?

ससजो—सबेरे का किसको पता है। बस पाण्डुरगा—नारायणा जानता है। मानस कोई जानतो नाहीं।

लेखा—तू तो सचमुच, बड़ी ज्ञानी है। सबेरे का वास्तव मे किसी को पता नहीं। भविष्य से अनजान, वर्तमान का उपयोग और उपभोग ही सब से महान जीवन-दर्शन है। लेकिन वर्तमान का भोग साधारण-सौभाग्य का फल नही, इस के लिये भी शायद पूर्वसंचित पुण्य चाहिए। [नींद सी अनुभव करने लगती है] आ ·· य · नींद आने लगी।

सहजो –काय बोला बाई ? हमारे को समझ मे आला नाही।

लेखा [थकान की जमुहाई लेते हुए]—अब जा। सवेरे देर न करना। [फिर अंगड़ाई लेते हुए] अ—अ—अ—आ—आय। उफ़, हड्डियां अकड़ रही हैं। पता नहीं, आज क्या हो गया। [फिर जमुहाई और अंगड़ाई लेती है] शरीर टूट-सा रहा है।

सहजो—काय ज्वर आला ?

लेखा [हाथ अकड़ा कर शरीर तोड़ते हुए]—नहीं, बुखार तो नहीं, मालूम होता।

[अंगड़इया लेते हुए सहजो को लेखा की गर्दन और कंधे पर पड़े नील दीख जाते है]

सहजो [साश्चर्य]—**चोट लागली—नीले निशान पडले। हाय पाण्डु-रंगा—नारायणा ! हे काय झाला ?**

लेखा [उठकर]—**अब तू जा।** [सहजो उठकर जीने की ओर आती है], **आँखो मे नीद भरी है, ऊपर से तू दिमाग चाटने लगी।**

[सहजो जीने से उतरती है। लेखा किवाड़ बन्द कर जीने की कुण्टी लगाती है और नीद मे लड़खडाती—जमुहाई लेती हुई जाकर अपनी खाट पर लेट जाती है। ढलती पलको से कभी जल-जल कर बहती मोमबत्ती को और कभी आसमान मे टिमटिमाते तारो को देखती है। धीरे-धीरे उसकी पलके झपकने लगती है। एक दो बार बालक कुलबुलाते है, उन्हे आखे बन्द किये किये ही थपथपा देती है। एक-दो मिनट के पश्चात ही नीद मे बेसुध हो जाती है। स्वप्ना-वस्था मे बड़बड़ाती है ' 'मै ' '' मै ' नमी ' '' मारो '' '' लो मार लो ' आह''' मेश्रा''' ' बिल्लू ' 'पम्मी''''''' नही ' पम्मी'' पुच ' '' पुच'' अ'' आ'' 'ई ई चो अ ' चे अ ' वी' ' कुछ क्षण होठ फड़कते है। फिर सो जाती है। नीद मे बेसुध। जीने के भीतर से किवाड पीटने की आवाज़ होती है। अस्पष्ट, घुटी-घुटी, थकी-थकी बन्द गूंजती-सी वाणी सुन पड़ती है—'खोलो खोलो जल्दी।' फिर पटपट का शब्द। फिर किसी व्यक्ति का स्वर—'खोह—लो कि ' वाड़ । खो-ओ-ओ-लो'' ' पटपट, पटपट। फिर वही स्वर—'खोलती नही, मर गई क्या ?' किवाड़ो पर लातें मारने का शब्द। फिर क्रोध में भरा, भर्राया हुआ वही स्वर—'अबे खोलती है कि नहीं ?' लेखा नीद से हड़बड़ाकर उठती है। 'आयी जी' कह अधजगी-सी लड़खड़ाती हुई द्वार खोलने के

लिए झपटती है। कुर्सी से टकराती है--'आह' कह पैर की हड्डी मलते हुए द्वार खोलती है।]

मोती [दाहिना पग चौखट के पार छत पर रखते हुए लाल नेत्र, क्रोधी वाणी में]—अबे तू क्या कर रही थी [तड़ाक से एक चपत उसके सिर पर मारकर] कमीन की बच्ची ?

लेखा [चपत से अप्रभावित हो जमुहाई लेते हुए]—क्या हुआ ?

मोती [और भी चिल्ला कर]—अभी कमर पर दो-चार लातें पड़ जाएँ तो होश आ जाय। 'क्या हुआ', ऊपर से ज़बान चलाती है—बत्तमीज। मैं तीन घण्टे से गला फाड़ रहा हूँ। और श्रीमती जी भैंस की तरह खर्राटे ले रही हैं—ऊपर से कहती है, 'क्या हुआ'? बेशर्म।

[मोतीलाल एक-दो पग और आगे बढ़ता है। लेखा तनिक घूम कर उसके सामने हो जाती है]

लेखा [स्थिर भाव और आश्चर्य के साथ]—तीन घण्टे से गला फाड़ रहे हैं ?

मोती [पैर पटक कर]—हाँ-हाँ, तीन घण्टे से—तीन घण्टे से [लेखा का कान पकड़ने की चेष्टा करता है, वह बचा जाती है।] कान फूट गये क्या ?

लेखा—अब क्या बजा है ?

मोती [कलाई-घड़ी उसके मुह से अड़ाता है, वह मुंह हटा लेती है]—साढ़े बारह बजे हैं। देख ले—अंधी तो नहीं। ले देख।

लेखा [मोती फिर मुह से घड़ी अड़ाता है। मुंह पीछे करके]—तो आप साढ़े नौ बजे से आवाज़ लगा रहे हैं ? ग्यारह बजे तक तो लीला बैठी थी। महज़ो भी साढ़े ग्यारह बजे गई। बड़े आश्चर्य की बात है, आप तीन घण्टे तक चिल्लाते रहे और किसी ने आपकी आवाज़

तक नही सुनी। और सबमे अधिक खेद तो इस बात का है कि दस वर्ष के विवाहित जीवन मे आज पहली बार आप इतनी जल्दी घर आये तो इतना परेशान होना पड़ा। क्षमा करे। खाना तो खाले!
[जाने लगती है]

मोती [क्षिप्रता से रास्ता रोक कर]—एक तो चोरी, ऊपर से सीना-ज़ोरी। आज तेरा दिमाग ठिकाने नही क्या ? [तडाक-तडाक दोनो हाथो से गालो पर चपत लगाकर] कह तो, कर दूँ ठीक—गधे की बच्ची ?

[एक कुर्सा खींच कर बैठता है]

लेखा [हाथ मे अलग करके]—शराब आप पीकर आये और दिमाग मेरा ठीक नही। दुर्गन्ध के मारे नाक फटी जा रही है। [नाक पर कपडा रखती है] क्या पराग उड रहा है ! क्या गौरव बढ़ रहा है कुल का !

मोती [क्रोध मे पागल हो मारने उठता है। गिलास से ठोकर लगती है। गिलास उठा कर फेंकता है]—साले तू भी आजा—आ मेरे रास्ते मे। [आगे बढकर ठोकर मारता है] तेरी शामत आई लगती है। अभागिनी, कमबख्त, कमीनी हाथ उठ गया तो अधमरी कर दूँगा। [हाथ चलाता है। लेखा बचा जाती है] इस कमबख्त ने कुसुगनी की थी—रेस मे जीती बाजी हार गया कलमुही, पता नहीं किस नीच खानदान की मेरे पल्ले पड़ी।

लेखा—और जीते कब हो ?—सदा हारते ही रहे। शराब और रेस मे बाप-दादों की सारी संचित पूंजी तो लुटा ही दी: कुल की मर्यादा भी बहा दी। वहां की हार का बदला लेना है एक निर्बल नारी से। मैं नीच खानदान की हूँ—आप तो अपने खानदान का खूब नाम उछाल रहे हैं। शुभ कर्मों से पुरखे भी गद्गद् हो जाते होंगे।

[लेखा चलने लगती है। मोती क्रोध मे लाल-पीला हो उस पर झपटता है।]

मोती—लातो का भूत बातो से नही मानता। आज तेरी खोपडी [क्रोध मे चपत लगाता है] कुल रही है।

लेखा [उसका वार अपने हाथ पर रोक कर तीखे स्वर मे]—बस-बस, कहे देती हूँ, जो इस तरह कभी हाथ उठाया [और भी तीखे स्वर मे] सहन की भी कोई सीमा है। मेरे धीरज का बाध अब टूट चुका है। दस वर्ष से ।

मोती [क्रोध मे बौखला कर संभलते-लडखडाते हुए]—ज़बान चलाए ही जायगी। [तडाक से गाल पर चपत मारना] छहन की बी छीमा है मै देखता हूँ, तेरी छैन-छीलता [क्षिप्रता से दो-तीन लाते मारना] अब तेरी बुद्धि ठिकाने आयेगी—बदज़ात कमीनी, अभागिन।

[सास फूल जाती है। फिर बौखला कर लात-घूसो चपतो की बौछार करता है, गालिया देता है। लेखा हाथो पर वार रोकती है फिर थक कर कुर्सी पर बैठ जाता है।]

लेखा [अपमान से व्यथित व्यग्यात्मक तीखे स्वर मे]—वाह रे आदर्श वीर ! एक नारी को पीटते हुए आनन गौरव से कैसा चमकता है। शर्म तो नही आती। बडे-बड़े राजपूत योद्धा भी लजा जायेगे इस महान् वीरता को देखकर !

मोती [बैठे-बैठे ही]—मै कहता हूँ, क्यों मरने को उतावली हो रही है उल्लू की पट्ठी ? गधी की बच्ची से बीस बार कहा कि यों · ।

लेखा [घृणा से]—हत्यारा कहलाने की कितनी आकांक्षा है ! और तो सब पुण्य कमा ही लिए—एक औरत की हत्या के पुण्य से भी वंचित क्यों रहते हैं ? आज यह कामना भी पूरी कर लो।

मोती [उठ कर]—अबे बेवकूफ की बच्ची [उसका मुंह मसल कर उसे

पलंग पर धकेलता है] अपना मुँह मत दिखा मुझे । मै तो कहता हूँ कु-घड़ी टल जाय, वह बक-बक किये ही जाती है—बेशर्म !

लेखा [उठ कर कक्ष के द्वार तक जाते हुए—अपमान, पीडा पश्चात्ताप के अनुभाव मुह पर लाते हुए]—उन माता-पिता से बड़ा अपराधी और कौन, जिन्हों ने अपनी प्राणों से प्यारी बेटी को तुम्हारे हवाले किया । इन अत्याचारों का निरीह शिकार बनने के लिए, जीवन भर अपमान-उत्पीडन की दहकती आग में जलने के लिए घृणित पशु से भी अधिक उपेक्षित जीवन बिताने के लिये [रोष और आत्मवेदना से तिलमिला कर] मुझे यहाँ पटक दिया । आत्मा तो आज आकुल हो रही है उन्हे भी शाप देने के लिए । और तुम्हे तो क्या कहूँ—मेरा भाग्य । [करुण स्वर मे] दस वर्ष के जीवन मे नही जाना पति का प्रेम—दस वर्ष के जीवन मे नही जाना, गृहस्थ का सुख । तिरस्कार, घृणा, लाछन से पूर्ण दस वर्ष का घायल जीवन । [रुआँसी हो कर] मुंह दिखाने मे भी क्या गरिमा है । [कक्ष मे प्रवेश कर] और आपके पावन दर्शन करने योग्य भी तो मैं नही ! भगवान् , तुम्हारा भी न्याय देख लिया । [दूसरे भाग मे जा किवाड लगा लेती है]

मोती [जूते खोलते हुए]—इन त्रिया-चरित्रों से डरने वाला नही मैं । ये धमकियां किसी और को दिखाना । जा अपना मुँह फूँक कलंकिनी !

[मोती अपनी बुशशर्ट उतारता है । बूटों के फीते खोल कर दोनो पैर बाहर निकाल मोजे उतारता है । छोटी मेज़ सरका कर उस पर दोनो पैर फैला कुर्सी की पीठ पर कमर टेक थकान, असफलता और निराशा का नि श्वास छोडता है—उफ ! एक-दो मिन्ट अंगो को ढीले कर पडे रहने के बाद उठ कर कक्ष मे जाता है और पैण्ट उतार, कुर्ता, पाजामा, चप्पल पहन कर बाहर आता है । इधर-उधर देख बिजली जलाता और क्षण-भर वही रह फिर बाहर आ जाता है ।

गिलास उठा, सुराही में से पानी लेकर एक-दो घूट भर कर कुल्ला करता है। एक-दो घूंट पी कर फिर बिस्तर लगाता और लेट जाता है। सहसा लेखा का चीत्कार सुना जाता है। मोती हक्का-बक्का हो इधर-उधर देखता है। लगातार लेखा के चीखने का स्वर आता है। वह घबरा कर उठता है। भीतर धुआं निकलता देखा जाता है। क्षण भर मोती आश्चर्य, आशका, भय, घबराहट से चचल पुतलियो से चौकन्ना हो इधर-उधर देखता है। जैसे उदर-पीड़ा से बेसुध रोगी क्षण क्षण बाद दर्द की नुकीली और तीखी चुभन से छटपटा कर बेताबी से झुंझला चीत्कार कर उठता है वैसे ही लेखा का मर्म-छेदक करुण और भीषण चीत्कार क्षण-क्षण पर सुना जाता है। मोती भयभीत हो 'लेखा-लेखा' चिल्लाता हुआ भीतर भागता है।]

मोती—[नेपथ्य में द्वार पीटते हुए]—लेखा ! लेखा ! [पटपट धमधम का शब्द] ल्हेखा ! [पैर से द्वार पीटना] खिव्हाड़ा-खिव्हाड़ खोलो-ल्हेखा ! अब मैं कुछ नहीं खिव्हाड ! मैं कुछ नहीं कहूँगा — खिव्हाड़ !

[बार-बार पीटने-धक्के मारने से भी किवाड़ नही खुलते। भीतर धुआं भर जाने से उसकी आखों में भी धुआ लगने से पानी भर आता है। वह घबरा कर बाहर आता है।]

मोती [घबराहट में पम्मी-बिल्लू को झकझोर डालता है]—पम्हिआ बिल्लू···आग···पम्मी ! आग ल्हेखा ! [उन्हें मथते-हिलाते हुए] आग ···आग·· पम्मी···लेखा··· [कुलबुला कर ठिनकते-रोते से जागते हैं। मोती उन्हें छोड़ चौकी पर आ सड़क पर देखते हुए शोर मचाता है] आग-आग ! दौड़ो आग ! ल्हेखा आग ! आग लग गई दौड़ो-दौड़ो ··· पानी ·· पानी ··· आग ··· पानी गोपाल ···घोपाल आग ! लीला···लीला ··· लछमन, आग लग गई। ल्हेखा···आग [सड़क की ओर से हट कर फिर बालको को झखझोरता

हैं] **आग--बिल्लू फम्मी । मम्मी आग !** [घबरा कर दोनो रोते हुए उठते है । मोती उन्हे गोद मे उठा लेता है । उन्हे पलग पर डाल फिर भीतर जा कर क्षण भर मे बाहर आ जाता है] **हाय ! लेखा तुम्हारी मम्मी । आग लग गई—दौडो ।**

[गली के लोग जाग उठते है । नीचे शोर मचता है । लीला, गोपाल, लछमन, ताई, चौकीदार भाग कर ऊपर आते है । सब के सब जीना पीटते है । मोती दौड कर जीना खोलता है । धुआँ खिडकी से बाहर आता दीखता है । सब लोग क्षिप्रता मे छत पर प्रवेश करते हैं ।]

गोपाल– किधर किधर आग ?

लछमन—कहा लगी ? [कक्ष के भीतर प्रस्थान]

चौकीदार—पानी-पानी । भीतर से धुआँ । [कक्ष के भीतर प्रस्थान] ।

ताई—अरे बालको को तो सभालो ।

लीला—और जीजी कहां चली गई ?

[गली मे कोलाहल मचता है । अनेक लोग जमा हो जाते है । दस-बीस आदमी ऊपर भी चढ आते है । कोई पानी लाता है—कोई लोहे की शलाख लिये आता है । भीतर से धुआ निकलते दीखता है । लेखा की दर्दीली चीख भी सुन पड़ती है । कोई सामने के छोटे कमरे से बाल्टी उठा लाता है और बाहर से ही खिड़की पर पानी फेकता है। कोई सुराही का पानी ही उँडेलता है । दो-चार आदमी भीतर को भागते है । पटापट लाते, मुक्के डगडे मार मार कर द्वार तोड़ने का प्रयत्न करते है । दोनो बालक छत पर एक ओर खड़े भयभीत हो रोते-चीखते रहते है । एक को घबराई हुई ताई और दूसरे को लीला उठा कर हिलाती बहलाती है ।]

ताई [रुआँसी हो पम्मी को गोद में लिये उसे बहलाते हुए]—यह लेखा को सूझा क्या—हाय ये नन्हे-नन्हे फूल-से बच्चे !

लीला [रोते हुए] पता नही, भगवान् ने क्या मत फेर दी। जीजी ऐसा भीषण काम करेगी क्या कभी कोई सोच भी सकता है। [सिसकते हुए] ताई जी जीजी के बिना ये बालक।

[मोती घबरा कर फिर बाहर आता है। और आत्म-ग्लानि, पश्चात्ताप, भय, घबराहट, में कभी 'लेखा-लेखा' कह कर चीत्कार करता है, कभी 'हाय लेखा यह क्या किया' कह कर सिर पीटता और बाल नोचने लगता है। ताई और लीला उसे देख सिसक-सिसक उठती है। भीतर ५-६ मिनट के प्रयत्न से द्वार टूट जाता है। बाहर से ताई लीला, मोती क्षिप्रता से भीतर जाते है। थोड़ी देर के बाद ही दर्द में चीखती-तड़पती, कभी बेसुध, कभी छटपटाती, लेखा को गोपालदास, लछमन, मोती, बाहर लाते है। लेखा की देह झुलस गई है। जगह-जगह छाले पडे हुए है। मुह भयंकर हो गया है। बाल जले-अधजले है। वह बार-बार छटपटाती उठती है और फिर बेसुध हो जाती है। सास अभी चल रही है। कपडे जले-अधजले है। उसके ऊपर एक सफेद-सी चादर पड़ी हुई है। उसे लाकर छत पर रख दिया जाता है।]

गोपाल—घबराने-रोने से काम न चलेगा। लछमन, दौड़ कर टैक्सी लाओ तुरन्त अस्पताल ले चलना चाहिए।

लछमन [तेजी से जाते हुए]—अभी लाया।

चौकीदार [भीड़ को हटाते हुए]—जाओ भैया, भीड क्यो लगाते हो ? ऐसी दुर्घटना दुश्मन के घर भी न हो।

गोपाल—हाँ भाइयो, अपने-अपने घर जाइये।

[सब को हाथ से प्रेरित कर नीचे उतारने लगता है। दुःख प्रकट करते और लेखा की प्रशंसा करते सब चले जाते है। लेखा को बेसुधी-भरी 'आह' कर छटपटाते देख लीला, मोती, ताई सिसक उठते है। गोपाल और चौकीदार अत्यन्त व्यथित चिन्तित और उदास मुद्रा मे पास खडे रहते है। पम्मी और बिल्लू अलग खडे 'हाय मम्मी—हाय मम्मी' कह कर सिसकिया भरते रहते है। लेखा दर्द से कापती रुकी-रुकी वाणी मे चीखती है। लीला 'हाय जीजी' कहती हुई उसके पास आती है। ताई 'लेखा बेटी—हाय बेटी मेरी, कहते हुए आँसू छलकाती पास आ बैठती है।]

लीला [आसुओ में फूटते हुए]—हाय जीजी, यह क्या कर डाला। [लेखा करुणा-वेदनामय पलके उठाती है] जीजी ।

ताई [सिसकते हुए]—इन बालकों पर तो तरस खाया होता लेखा। यह क्या कर बैठी। बालकों की ममता भी भूल गई! हाय मेरी बच्ची!

[लेखा सहमा चीखती है, मोती रोता-घबराता पास आता है]

मोती [भय, करुणा, पश्चात्ताप की वाणी मे]—मेरी मत पर क्या पत्थर पड़ गये थे! हाय लेखा! तुमने क्या कर डाला? न जाने कौन से पापों का फल मुझे दिया तू ने। हाय लेखा! सपने मे भी यह नही सोचा था।

लेखा [छटपटाते हुए]—हाय मरी! हे राम! [कराहते हुए करवट लेती है] हे भगवान्! जल्दी उठा ले। आह—हाय! नहीं सहा जाता। लीला··· ·लीला·····।

लीला [मुँह के पास मुँह लाकर]—क्या है जीजी! हाय जीजी! अपनी लीला से क्यों रूठ गई? तुम तो कहती थी······।

लेखा—लीला, मुझे विष दे दो ! जल्दी मार दो ! आह-आह ! हे राम ! [सिसकते हुए कभी इधर, कभी उधर करवट बदलने की चेष्टा में] अरे कोई मुझ पर तरस खाओ ... मुझे मार दो ! मुझे ज़हर पिला दो ! हे राम ! हाय-हाय !

[मुख पर भीषण करुणा के भाव आते हैं]

ताई [करुणा में कहते हुए]—हाय मेरी लाल । जीवन भर की तपस्या का यह फल । यही भाग्य में लिखा था [सिसकते हुए] तू तो औरों को धीरज बंधाती थी—तुझे क्या हो गया ! [अंचल से आँसू पोंछती है]

लीला—अभी-अभी तो मैं बातें करके गई थी । मालूम होता तो अकेली क्यों छोड़ती ।

मोती [पछतावे के स्वर में]—मुझे क्या मालूम था कि तनिक-सी बात पर यह हत्या-काण्ड हो जायगा ।

लेखा—इसके सिवा चारा ... हाय ... [हाथ से कमर दबाकर छटपटाते हुए] कोई चारा न था । दस वर्ष का वह जीवन—आह ! मुझे छोड़ दो, हट जाओ, तड़प-तड़प कर मर जाने दो । [तड़प कर] हाय मरी ! हे राम ! मुझे उठा ले—हाय राम ! आप ही दया करो, मेरा गला दबा दो ।

[सहसा बेसुधी में पुतलियां लौटने लगती है । सब आशंकित होकर पास आते हैं । मोती माथे पर हाथ रख कर बैठा रहता है ।]

गोपाल—बड़ी देर लगाई लक्ष्मन ने । टैक्सी में इतनी देर । चौकीदार, ज़रा देख और तुरन्त एक टैक्सी । अभी अस्पताल पहुँचाना

है। एक-एक पल मुझे तो युग के समान--पुलिस आने से पहले इन्हे अस्पताल

चौकीदार—मै अब लाया--वैसे आधी रात गये टैक्सी-- [क्षिप्रता से प्रस्थान] मिलनी ज़रा।

मोती--इन छोटे-छोटे बच्चो का क्या होगा। [सकरुण स्वर मे] इन की ममता भी तुझे न रोक सकी लेखा ?--इस अभागे मोती को क्षमा कर दो लेखा ! मुझे कही मुंह दिखाने को भी ठौर नही। मै हत्यारा--अपनी की हत्या मैने की।

[लेखा फिर कराहती है। लीला, ताई, सुबकती पम्मी और बिल्लू को उसके पास लाती है।]

लेखा [दोनो बालको के सिर पर हाथ फेरती है। दोनो सिसकिया भरते है]-- अच्छा लाजा बिल्लू, पम्मी [आँसू भर कर गले से लगाती है। 'लीला !' लीला पास जाती है उसका हाथ पकड कर बालको के हाथ उसके हाथ मे देती है। लीला सिसक पडती है] लीला, ना। [सकेत से मना करती है] ये तेरे ·। मेरी निशानी [गला रुक जाता है]

गोपाल--भाभी, तुम बहुत जल्दी ठीक हो जाओगी !

लीला—अभी मैंने तुम से बहुत कुछ सीखना है जीजी !

[लेखा बुझी मुसकान और पथराई पुतलियो से इकार का सिर हिलाती है और पलके बन्द कर लेती है।]

ताई—मेरी लाल, भगवान इन बच्चों के लिए तुझे बचाएगा। राम जी इतने निर्दय नही हो सकते। हे भगवान, मरी बेटी को ·।

[लेखा आँखे खोलती है । आँखे पथरा रही है ।]

गोपाल—इस वक्त इनकी अवस्था खराब है । अस्पताल पहुँचाया जाना अत्यन्त आवश्यक ' ।

लछमन—हाँ सरकार, इनकी हालत ' ।

इंस्पेक्टर—मेरा मतलब, आप स्टेटमेण्ट दे दे । अभी एक कान्स्टेबिल के साथ अस्पताल भजता हूँ । यह आत्म-हत्या करने के लिए ··? [लेखा से] लेखादेवी ' क्यों लेखादेवी ' [वह फिर आँखें खोलती और दर्द से छटपटाती हुई एक क्षीण, निष्प्राण चीत्कार करती है । बोल नहीं पाती] क्या आप ने आत्म-हत्या करने के लिए खुद आग लगायी ? [लेखा 'हाँ' का संकेत करती है । सब के मुँह के रंग उड जाते है । भय से जटित खडे रहते है ।] ऐसा करने मे किसी का हाथ है ? किसी ने आप को ।

[लेखा करुण और भयभीत नेत्रों से मोती की ओर देखती है । सब हक्के-बक्के उतरे मुख, आतंकित-आशंकित मुद्रा मे धक्-धक् हृदय से कभी मोती की ओर, कभी लेखा की ओर और कभी पुलिस इंस्पेक्टर को देखते है ।]

इंस्पैक्टर—क्या मोती बाबू ने विवश किया आत्म-हत्या के लिए ? [लेखा इंकार का सिर हिलाती है] इन का सुलूक आप के साथ कैसा था ?

गोपाल—वह बिल्कुल होश मे नहीं है । इन्हें शीघ्र अस्पताल में न भेजा गया तो ।

पुलिस इंस्पैक्टर—अच्छा, इन्हें तो शीघ्र अस्पताल भेजो । अरे तुम [एक कांस्टेबिल से] टैक्सी मे इनके साथ जाओ । [लीला

तथा ताई से] आपके साथ ये बच्चे ?

मोती—ये मेरे हैं।

पु० इंस्पैक्टर [लीला और ताई को संकेत करके]—और आप ?

गोपाल—यह मेरी पत्नी श्रीमती लीलादेवी और आप पड़ौसी श्रीमती ताई जी एक सम्भ्रान्त परोपकारी महिला।

[लेखा की पुतलियां पथरा जाती हैं]

चौकीदार—गोपाल बाबू, लेखा देवी ।

इंस्पैक्टर— इन्हें जल्दी अस्पताल। [कांस्टेबिल से] जल्दी करो।

[कांस्टेबिल लेखा को उठाने लगते हैं। लेखा क्षीण सा चीत्कार करती है। निष्प्राण हो गर्दन एक ओर गिर जाती है]।

गोपाल—यह क्या ! [कलाई पकड़ कर नाडी देखता है] जल्दी डाक्टर —डाक्टर के पास ! खतरनाक हालत ··।

मोती [क्षिप्रता से आगे बढ़ कर देखता है]—हाय लेखा—दीपक बुझ गया ! [चीत्कार के साथ] हाय लेखा चल बसी।

[लीला 'हाय जीजी' कह कर चीखती हुई लाश के पास आती है। ताई सिसक उठती है। सभी लोगों के मुखों पर मुर्दनी छा जाती है।]

इंस्पैक्टर—नीचे उतारो इन्हें ! पोस्टमार्टम होगा। [मोती, गोपाल, लछमन और चौकीदार से] आप मेरे साथ पुलिस-स्टेशन चलें। अपना स्टेटमैंट दे आयें। केस काफी खतरनाक है।

[सब एक-दूसरे को देखते हैं]

गोपाल—मेरा ख्याल है कि बिजली ऑफ होने पर यह मोमबत्ती जलाने गयी थी। अंधेरे मे पता न चला, मोमबत्ती साड़ी मे लग गयी।

मोती—क्या कहूँ क्या हो गया। मेरा भाग्य। [उच्छ्वास छोडता है]

[सब मिलकर लेखा को उठाकर नीचे ले जाने लगते है। लीला सिसकिया भर-भर कर रोती है। ताई आखो से बहते आँसू पोछती हुई, लछमन, चौकीदार, गोपालदास उदास और मोतीलाल अपराधी के समान पुलिस के साथ नीचे उतरते है]।